शादी -का-लड्डू .कॉम

हंसी-मजाक वाली मुलाकातें
एक योग्य
दूल्हे की तलाश में!

नवनीत गांधी वरुण
खुल्लर

‘बेहद शानदार किताब! मुझे इसके किरदारों में अपने कॉलेज के कई दोस्त नज़र आए। यह आधुनिक महिला की दुविधा को बखूबी दर्शाती है, जो माता-पिता के दबाव, सामाजिक दबाव और अपनी आकांक्षाओं के बीच फंसी हुई है। कई अवलोकन और कहानियाँ हास्य और कड़वी सच्चाइयों के बेहतरीन संतुलन के साथ पिरोई गई हैं!’

—अमित टंडन, स्टैंड-अप कॉमेडियन

‘क्या गजब की किताब है! इसे पढ़ते हुए मैं खूब हँसी और ठहाके लगाती रही। कहानी इतनी सहज है; किरदार इतने विश्वसनीय और सच्चे हैं कि हर पाठक खुलकर हँसेगा और उन प्रस्तावों को याद करेगा जो हमें मिले थे और जिन्हें हमने बेवजह ठुकरा दिया था; और वो शर्तें जो हमने अपने जीवनसाथी की तलाश में अपनी कमियों को पूरी तरह से नजरअंदाज करते हुए तय की थीं! मुझे ऐसा लगा जैसे मैं आईने में देख रही हूँ... हा! हा! हा!’

-सुमियर पसरीचा उर्फ पम्मी आंटी

Shaadi -ka- Laddoo .Com

Chuckling encounters in search of a suitable groom!

NAVNIIT GANDHI
VARUNA KHULLAR

Readomania

Readomania Publishing
A division of Kurious Kind Media Private Limited
908, Vishwadeep Building, District Centre, Janakpuri,
New Delhi – 110058
books.readomania.com
email: contact@readomania.com
Facebook: facebook.com/iamreadomania
Twitter: twitter.com/iamreadomania
Instagram: iamreadomania

First Published in 2019 by Readomania

© Copyright Navniit Gandhi & Varuna Khullar

Navniit Gandhi & Varuna Khullar assert the moral right to be identified as the authors of this book.

This book is a work of fiction. Any resemblance to real persons, living or dead, or actual events or locations, is purely coincidental.

All rights reserved.

No part of this publication may be reproduced, transmitted (including but not limited to photocopying, scanning, cyclostating) or stored (including but not limited to computers, external memory devices, e-readers, websites etc.) in any kind of retrieval system without the prior written permission of the publisher.

Readomania

India has traditionally been the land of storytellers and a lot of us have an inherent skill of creating good plots, good stories and good narrations. With a little encouragement and support, many more authors will be widely read and attain a place in the sun. This is the essence of *Readomania*—an initiative that nurtures emerging stars of the literary world.

It would not be an exaggeration to say that *Readomania* is the talent hunt in fiction. It goes a step beyond by not just identifying the talent but also nurturing it and showcasing it to the world. In the process, we have created a powerhouse of content.

Readomania has four principal interest areas—traditional print publishing, online library of short stories and poetry, literary events and products.

The print publishing works towards delivering good quality content to the readers. We publish good authors in meaningful anthologies, novels and works of narrative non-fiction. Our books stand out for their perspectives, the plots, the language and most importantly their ability to enrich lives.

Take a break, read something nice, write something beautiful. Read our books or visit us at www.readomania.com and enjoy a whole new world of literature.

को,

सभी माताएं... जो मनाती हैं, दबाव डालती हैं, परेशान करती हैं और अपनी बात मनवाती हैं।

वे अपने बेटों और बेटियों का विवाह उनसे करवा सकें।

आप सभी प्यारी माताओं के बिना, अगली पीढ़ी का अस्तित्व ही नहीं होता!

उनमें से बहुत सारे...

भारत में लड़कियाँ और लड़के आँखों में सपने लिए बड़े होते हैं; ये सपने काफी हद

तक उनकी माताओं द्वारा ही बोए जाते हैं। अगर कोई एक चुनौती है जिसका हर माँ बेसब्री से पीछा करती है, उसे अपने लिविंग रूम में लाना चाहती है, गले लगाना चाहती है और फिर अपनी जीत पर खुद को शाबाशी देना चाहती है—तो वह है अपने बच्चों के लिए आदर्श जीवनसाथी ढूँढना और पाना*!* वह इस चुनौती का निडरता और साहस के साथ पीछा करती है, भोलेपन से यह मानते हुए कि उसका बच्चा सबसे 'अच्छा' है, इसलिए वह सबसे योग्य और आदर्श दूल्हा या दुल्हन (जो भी उपलब्ध हो) का हकदार है।

भारत में लगभग सभी लोग शादी करते हैं। वैसे तो दुनिया भर में पुरुष और महिलाएं शादी करते हैं, लेकिन उनकी शादियां हमारी शादियों के सामने कुछ भी नहीं हैं... हमारी शादियां मौज-मस्ती, रिश्तेदारों, उपहारों, शान-शौकत और स्वादिष्ट भोजन से भरपूर होती हैं, जबकि उनकी शादियां सादगीपूर्ण और बिना किसी तामझाम के होती हैं*!* इसके अलावा, भारत में उत्साही माताएं अपने बच्चों की शादियों की तैयारियों में जो भूमिका निभाती हैं, वह अन्य जगहों की माताओं के लिए संभव ही नहीं है।

उन ममतामयी और साहसी माताओं की सहायता के लिए, जो चुनौतियों का सामना करने के लिए पर्याप्त रूप से तैयार हैं, तकनीकी विशेषज्ञों ने बड़ी ही सहजता से *'www.com'* का जादू हमारे दरवाजे तक पहुँचा दिया। अनगिनत ऑनलाइन पोर्टल तेजी से फैल गए हैं और अब तक कुछ हद तक नीरस रही विवाह प्रक्रिया में नयापन और विविधता ला दी है।

सबसे परिपूर्ण, यानी सबसे सुंदर/आकर्षक, दुबला/सुगठित, लंबा, गोरा, स्नेही, स्वतंत्र, शालीन, सुशिक्षित, विनम्र, पेशेवर रूप से सफल, उज्ज्वल भविष्य वाला, पारंपरिक मूल्यों में विश्वास रखने वाला लेकिन आधुनिक दृष्टिकोण से सुसज्जित और एक प्रतिष्ठित एवं विनम्र परिवार से ताल्लुक रखने वाले लड़के/लड़की की तलाश का दायरा वास्तव में व्यापक और विस्तृत हो गया है।

हुर्रे*!*

आगे बढ़ो, माताओं, आगे बढ़ो... चुनौती पूरी तरह से आपकी है*!* ऑनलाइन वैवाहिक पोर्टल आपके साहसिक अभियानों में आपका साथ देने के लिए तैयार हैं*!* चुनौती को दोनों हाथों से थाम लो, क्योंकि अब तुम्हारी पकड़ और भी मजबूत होगी*!*

चलो भी,

क्लिक*!*

चकल्स

उस दिन जब मैं कॉलेज से निकला तो मौसम सुहाना था और आसमान बिल्कुल साफ और नीला था। ज़ाहिर है, घर पर मेरा जो बुरा हाल होने वाला था, उसकी मैंने कल्पना भी नहीं की थी।

जैसे ही मैं बैठक कक्ष में दाखिल हुआ, माँ ने सबसे पहले ये पंक्तियाँ कहीं:

क्या तुम्हें एहसास है कि तुम्हारी उम्र बढ़ती जा रही है? तुम 37 साल के हो गए हो, भगवान के लिए! मैंने ऐसा क्या किया है कि मुझे यह सब सहना पड़ रहा है? मुझे पूरी दुनिया की ये सारी कड़वी बातें क्यों सुननी पड़ रही हैं? हे भगवान, तुम मेरी प्रार्थना कब सुनोगे? क्या मैंने ऐसा कुछ भयानक किया है जिसके लिए मुझे यह सब सहना पड़ रहा है?

इससे पहले कि आप सोचें कि मैंने ऐसा क्या किया जिससे इतना हंगामा मच गया, मेरा इशारा मेरे अविवाहित होने की स्थिति की ओर था, और इसके परिणामस्वरूप बाहर की पूरी दुनिया को हो रही तकलीफों की ओर था।

ऐसा नहीं है कि मैं हमेशा से अकेली रही हूँ। कुछ सालों तक मेरी स्थिति सचमुच 'विवाहित' थी, फिर करीब चार साल पहले यह 'तलाकशुदा' हो गई। जब मैं 30 साल की उम्र तक अकेली थी, तो लोग मुझ पर तरस खाते थे। उनकी आँखों में मेरे लिए उम्मीद की एक किरण थी। तलाक के बाद, मैंने भोलेपन से मान लिया था कि मैं फिर से अकेली हो जाऊँगी। तकनीकी रूप से, मैं थी, लेकिन अकेलेपन के साथ आने वाले सुकून को मुझसे बेरहमी से छीन लिया गया। पहले तो कुछ लोगों ने मुझे इल्ज़ाम भरी निगाहों से देखा, फिर कुछ लोगों ने फुसफुसाकर कहा कि शादी क्यों नहीं टिक पाई, और फिर दया भरी निगाहें दिखने लगीं। बेचारी, पूरी ज़िंदगी पड़ी है और अब वो तलाकशुदा है—दर्जनों आँखें यही कहती नज़र आ रही थीं।

तीन प्यार करने वाले परिवार के सदस्य; कॉलेज में एक स्थिर और प्रतिष्ठित नौकरी; और मेरा खुशमिजाज स्वभाव, परिवार और पड़ोस के 'नेक इरादे वाले' चाचा-चाची और मामा-मामी के लिए कोई मायने नहीं रखता था। क्या वे खुद पर तरस खाते थे? क्या मेरी खुशहाल स्थिति उन दुखी विवाहित जोड़ों के लिए कुछ ज़्यादा ही थी? खैर, जो आराम का माहौल मैंने (अपनी शक्ल-सूरत के बावजूद) बनाया था, वह पिछले कुछ महीनों से धीरे-धीरे मुझसे छिनता जा रहा था।

दरअसल, मुझे पहले से ही इसका अंदाज़ा था... पिछले कुछ महीनों से, मम्मी-पापा

को मेरी तरफ से तीखी निगाहों और आरोपों का सामना करना पड़ रहा था, जैसे कि कोई तलाकशुदा बेटी, जिसकी उम्र तीस के आसपास है, घर पर बैठी है, और वो इतनी आसानी से कैसे रह सकती है। जल्द ही, मम्मी मेरी मौजूदा स्थिति को लेकर असंतोष जताने लगीं। पहले तो उनकी बातें हल्की थीं और पापा पर ज़्यादा निशाना साधती थीं। फिर, उनके शब्दों और भावनाओं की तीव्रता बढ़ती गई, आहें तेज़ होती गईं और ताने तीखे होते गए!

उस दिन, जब मेरी परेशान माँ ने फिर से वही सब शुरू कर दिया, तो मेरा दिमाग उनकी तंत्रिका तंत्र की कमज़ोरियों और उसके पीछे के कारणों पर विचार कर रहा था। शायद इसका संबंध किसी ऐसी नस से था जो हर चौथे या पाँचवें दिन सुबह नियमित रूप से ज़रूरत से ज़्यादा उत्तेजित हो जाती थी? और दोपहर तक वह उत्तेजित नस चरम पर पहुँच जाती थी, और जब तक लगभग 30 मिनट तक लगातार ज़ोरदार शब्दों की बौछार न हो जाए, तब तक वह नस फटने की कगार पर होती थी। चिंता के बुलबुले को अंदर ही दबाए रखने से होने वाले गंभीर परिणामों से सावधान, हम बेचारे (माँ को छोड़कर हम तीन लोग) घबराहट भरी चुप्पी में उनकी नियमित चीखों को सुनते रहे। ऐसे गंभीर क्षणों के दौरान हमारे सिर आमतौर पर नीचे झुके रहते थे। गंभीर, हाँ... लेकिन, केवल तब जब पापा, मेरा छोटा भाई शौर्य और मैं—हम उदास लोग—इसे एकतरफा बातचीत बने रहने देते थे।

उन दुर्लभ दिनों में, जब हममें से कोई जवाब देने या प्रतिवाद प्रस्तुत करने का साहस करता, तो घर का माहौल युद्धक्षेत्र में बदल जाता। हम, योद्धा, जल्द ही घायल हो जाते... ज़मीन पर गिर पड़ते और एक घंटे से भी कम समय में घात लगाकर हमला कर दिया जाता! शब्द, साहसी घोषणाएँ, तीखी टिप्पणियाँ, पीड़ादायक बातें और हताशा भरी आहें चारों ओर गूंज उठतीं।

ऊपर बताए गए दृश्य अक्सर पड़ोस में रहने वाले किसी छोटे चचेरे भाई या लड़की या लड़के की शादी की घोषणा करने वाले किसी गर्वपूर्ण निमंत्रण कार्ड से प्रेरित होते थे। आखिर ये खिलखिलाती लड़कियां और कम अक्ल वाले लड़के इतनी धूमधाम और उल्लास के साथ अपनी शादियों की घोषणा क्यों करते थे?

शोर-शराबा आमतौर पर तब शुरू होता था जब कोई चुगली करने वाली चाची, जो घावों पर नमक छिड़कने में माहिर थी, बस यूं ही 'हैलो' कहने आ जाती थी। वैसे, टीवी पर किसी धारावाहिक का एक दृश्य भी कभी-कभी आग लगाने के लिए काफी होता

था! ऊपर बताए गए कारणों में से कोई भी आमतौर पर सप्ताहांत शुरू होने से ठीक पहले होता था और गर्म कंबलों में आराम से सप्ताहांत बिताने की हमारी योजनाएँ धराशायी हो जाती थीं।

उस दिन माँ लगातार बोल रही थीं, और मैं सोच रहा था कि इस बार खलनायक कौन है? क्या यह फिर से शादी का कार्ड था? या फिर किसी आंटी का अचानक आना? थोड़ी देर के लिए सन्नाटा छा गया, जब पापा—अनजान कि उनका लंबा-चौड़ा और जाना-पहचाना भाषण शुरू हो चुका है—चुपके से रसोई में आए और अनिच्छा से माँ से पूछा कि क्या चाय के साथ पकौड़े मिल सकते हैं? बेचारे पापा! वे बीच में ही फंस गए। माँ ने उन्हें गुस्से भरी नज़र से देखा और बिना कुछ कहे उन्हें भी अपनी बात में शामिल कर लिया।

'तुम इतने शांत कैसे हो सकते हो? मुझे कहना पड़ेगा कि या तो तुम सब में कुछ गड़बड़ है या शायद मैं ही यहाँ अकेली संवेदनशील हूँ... नहीं, बिन्नी की शादी होने तक घर में पकौड़े नहीं बनेंगे। इन तले हुए नमकीनों से उसका वजन बढ़ जाएगा और चर्बी बढ़ने से वह पहले से भी ज्यादा बूढ़ी दिखने लगेगी। वैसे भी, उसके चेहरे की झुर्रियों की वजह से मुझे रातों की नींद उड़ गई है...'

पापा सालों से एक समझदार बूढ़े आदमी बन चुके थे। माँ के ज़ुबानी गुस्से ने उन्हें एक अनोखी काबिलियत दे दी थी कि या तो वे पहले से ही समझ जाते थे कि माँ कब गुस्सा करने वाली है, या अगर वे ऐसा नहीं भी कर पाते थे, तो वे बिना किसी नुकसान के उससे बच निकलने की कला में माहिर हो गए थे। उस पल उन्होंने बड़ी आसानी से यही किया। मैं अभी भी बहुत समय ले रहा था और पापा की ये कला मुझमें अभी तक नहीं आई थी।

माँ इतनी आसानी से हार मानने के मूड में नहीं थीं। एक बार फिर सारी निगाहें मुझ पर टिक गईं।

'बिन्नी, क्या इस धरती पर कोई ऐसा इंसान नहीं है जो इस कसौटी पर खरा उतर सके? तुम इतने जिद्दी क्यों हो? तुम समझौता करके किसी सामान्य इंसान से क्यों नहीं संतुष्ट हो सकते? हे भगवान! तुम्हारे दिमाग में उम्मीदों की इतनी लंबी सूची है, तो हम उस सुपरमैन को कैसे ढूंढ पाएंगे?'

और फिर, अंतिम प्रहार हुआ!

'पम्मी आंटी भी तुम्हारी वजह से बहुत चिंतित हैं। कल वो आईं और एक अच्छा

सुझाव दिया। उन्होंने कहा कि हमें तुम्हारा नाम shaadi-ka-laddoo.com पर रजिस्टर करवा देना चाहिए। इससे मुझे बहुत उम्मीद मिली है... अब हमारे पास और भी विकल्प होंगे।'

मैंने इस नए हमले का विरोध किया और उन्हें साफ-साफ शब्दों में कह दिया कि मैं आभासी दुनिया से आने वाले प्रस्तावों पर भरोसा नहीं करने वाली। पहले तो मैंने शांत रहने की कोशिश की, लेकिन माँ का मिजाज बिल्कुल अलग था। मुझे गुस्से में भड़कना पड़ा, पैर पटकने पड़े और रसोई से बाहर निकलते समय दरवाजा जोर से पटकना पड़ा। लेकिन सब व्यर्थ था।

*****

'बिन्नी, पम्मी आंटी और मैंने तुम्हारा नाम वैवाहिक वेबसाइट पर रजिस्टर कर दिया है। अगर तुममें मेरी तकलीफों को समझने की जरा भी समझ नहीं बची है, तो कोई बात नहीं! मैं तुम्हारे लिए प्रस्ताव देख लूंगी और उनमें से छांट लूंगी... उम्मीद है तुम थोड़ी तमीज़ दिखाओगे और जिनके नंबर और जानकारी मैं तुम्हें भेजूंगी, उनसे शालीनता से बात करोगे। हम तुम्हारे दुश्मन नहीं हैं। अपनी उम्र देखो! हमारे जाने के बाद तुम्हारा ख्याल कौन रखेगा? क्या मैं तुमसे उम्मीद कर सकती हूं कि तुम अपने बूढ़े और परेशान माता-पिता के प्रति कम से कम थोड़ी तो समझदारी दिखाओगे?'

अचानक मेरी आंखों के सामने एक भयावह दृश्य कौंध गया: 85 साल की मैं—आँखों में आँसू लिए एक बड़े से घर में अकेली, एक अज्ञात बीमारी से असहनीय पीड़ा झेल रही थी और पानी का गिलास उठाने की कोशिश कर रही थी... और, क्र ...

मुझे रोंगटे खड़े हो गए। मैंने उम्मीद भरी निगाहों से पापा की तरफ देखा और मन ही मन उनसे ज़िम्मेदारी संभालने का आग्रह किया। उन्होंने भी मेरी तरफ विनती भरी नज़र से देखा और फिर मुस्कुराते हुए आँख मारी।

मैंने बदले में एक छोटी सी, बहुत छोटी सी मुस्कान दी।

माँ सुबह से ही कुकीज़ से भरी प्लेट लेकर रसोई से बाहर आईं और पापा के सामने रख दी। उनके चेहरे पर राहत के भाव थे। शायद उन्हें भी इस बात की चिंता थी कि साइट पर मेरा रजिस्ट्रेशन होने पर मेरी क्या प्रतिक्रिया होगी। मानो उनके सीने से बोझ उतर गया हो। मैंने भी हार मानकर एक कुकी उठा ली।

'बिन्नी, क्या तुम अपनी वो तस्वीर देखना चाहोगी जो हमने साइट पर अपलोड की है? ये वही तस्वीर है जिसमें तुमने बेज रंग की छोटी स्कर्ट और नेवी ब्लू कार्डिगन पहना है

—वही जो तुमने इस साल जनवरी में भूटान में पहनी थी,' माँ ने हंसते हुए कहा।
कुकी टूट गई—थोड़ी मेरे मुंह में और थोड़ी मेरी गोद में।

पहला लड्डू

अब सब कुछ सबके सामने आ चुका था। बदलाव हो चुका था। इधर-उधर कुछ चाचा-चाची द्वारा किए गए कुछ हल्के-फुल्के प्रयासों से हटकर, अब मैं औपचारिक रूप से वैवाहिक मंच पर आ गई थी। मेरी स्थिति में एक नया अध्याय जुड़ गया था: अविवाहित <विवाहित <तलाकशुदा <अविवाहित <फिरसेजीवनसाथीकीतलाच में।

माँ जानती थी कि मेरे जीवन में अपने दम पर किसी खास इंसान को ढूंढने के बहुत कम मौके हैं। मैं कॉलेज में पढ़ाती हूँ—मतलब, मेरे आस-पास या तो बूढ़े, सफ़ेद बालों वाले प्रोफ़ेसर होते हैं या फिर नासमझ नौजवान। अपने सपनों के राजकुमार से मिलने के लिए यह सबसे अच्छी जगह नहीं है। इसके अलावा, मैं न तो पार्टियों में जाने की शौकीन हूँ और न ही शॉपिंग की। सिंगल्स क्लब, ट्रेकिंग मीट और दूसरे नेटवर्किंग इवेंट्स में मेलजोल बढ़ाने की मेरी कोशिशें नाकाम रही हैं।

तो इसमें कोई हैरानी की बात नहीं कि मम्मी और पम्मी ने एक लोकप्रिय ऑनलाइन वैवाहिक प्लेटफॉर्म को चुना, जिसे वे मेरी ज़रूरतों और अपनी चिंताओं का एक ही जगह पर समाधान मानती थीं। आखिर मम्मी पापा को बड़े उत्साह से यही समझाती रहती थीं: शहरों और देशों, भाषा, रंग-रूप, शौक, पद और दिखावट के मामले में इतनी विविधता और विविधता हमें और कहाँ मिलेगी? सब कुछ एक ही छत के नीचे! बस देखते रहिए... हमारी बिन्नी को सबसे अच्छा साथी मिलेगा।

अगले एक-दो हफ्तों तक, माँ खुशी से झूम रही थीं - अपने लिविंग रूम के आराम में बैठकर लैपटॉप स्क्रीन से एक के बाद एक आने वाले प्रस्तावों की बारीकी से जांच करने की संभावना से आनंदित हो रही थीं।

Shaadi-ka-laddoo.com ने सदस्यता के मामले में कई तरह के विकल्प पेश किए:

- ✓ निःशुल्क (केवल प्रोफाइल)
- ✓ सिल्वर (प्रोफाइल + चैट + ईमेल)
- ✓ गोल्ड (अधिक प्रोफाइल + चैट + ईमेल + परेशान करने वाले कस्टमर केयर कॉल)

✓ प्लेटिनम श्रेणी (अधिक से अधिक प्रोफाइल + चैट + ईमेल + लगातार परेशान करने वाले ग्राहक सेवा कॉल)

पम्मी आंटी की कुशल सलाह से प्रेरित होकर, माँ ने सिल्वर पैकेज लेने का फैसला किया था, ऐसा उन्होंने मुझे बताया।

'बिन्नी, मैं तुम्हें बता दूं... मुझे सच में नहीं लगता कि तुम एक आम भारतीय परिवार के माहौल में टिक पाओगे। इसलिए मैंने विदेश में बसे लड़कों को प्राथमिकता दी है,' उसने कहा।

मैंने उस कथन पर प्रतिक्रिया न देने का फैसला किया। मैं सोच रही थी कि क्या वह कथन मेरी प्रशंसा थी कि मैं यहाँ के परिवारों में व्याप्त तुच्छ बातों से बहुत ऊपर हूँ, या फिर यह मुझे अत्यधिक स्वतंत्र विचारों वाली होने के लिए फटकार लगाने के लिए था।

पहला लड्डू: श्री रंगनाथन

कई महीनों तक छानबीन करने, अस्वीकार करने और विचार करने का दिखावा करने के बाद, माँ श्री रंगनाथन के प्रोफाइल पर आकर रुक गईं।

कद: 5'8"; रंग: सांवला; कद-काठी: मध्यम (77 किलो); निवास: हैम्पशायर, लंदन (अपना घर); धर्म: हिंदू (तमिल ब्राह्मण); वैवाहिक स्थिति: तलाकशुदा (एक बार); संतान: कोई नहीं; परिवार: कुछ साल पहले मेरे माता-पिता का निधन हो गया। मेरी एक बहन अपने पति और बेटे के साथ चेन्नई में रहती है।

माँ ने सारे फायदे ध्यान से सोचे: वाह! बुद्धिमान दिखती है: आधे बाल झड़ चुके हैं और चश्मा पहनती है; लंदन में रहती है; ब्रिटिश पासपोर्ट रखती है; अर्थशास्त्र और लोक नीति में स्नातकोत्तर डिग्री है; एक प्रभावशाली कॉर्पोरेट पद है; स्काईडाइवर और किताबों की शौकीन है; निःसंतान है, और लैंगिक समानता में विश्वास रखती है! एकदम सही!

और फिर अनिच्छा से, उसने स्पष्ट कमियों पर विचार किया: दक्षिण भारतीय होना और रंग में थोड़ा सा सांवला होना... जाहिर है, उत्तर भारतीय माँ के लिए यह एक बड़ी कमी थी!

अपनी ही आपत्तियों को मूर्खतापूर्ण सनक बताकर खारिज करते हुए, उन्होंने मुझे सख्ती से निर्देश दिया कि मैं जुड़ने के निमंत्रण को स्वीकार कर लूं।

'बिन्नी, जरूरत पड़ने पर तुम्हें सिर्फ एक भाभी की ही चिंता करनी होगी। सोचो, सास-

ससुर के बिना जीवन कैसा होगा! मुझे माता-पिता से कोई समस्या नहीं है, बस इतना लगता है कि तुम्हारे असामाजिक स्वभाव को देखते हुए तुम्हारे लिए जीवन आसान होगा। अब, मुझे यूं ही मत घूरो। अपने पहले रिश्ते को शालीनता से स्वीकार करो।'
मैंने 'स्वीकार करें' बटन दबाया। प्रतिक्रिया तुरंत मिली।
दृश्य 1: शुरुआत।
मैंने उसकी प्रोफ़ाइल को ध्यान से देखा। अरे वाह! माँ द्वारा बताई गई खूबियों के अलावा, मुझे कुछ और बातें नज़र आईं: वह यूके के एक लोकप्रिय गेम शो में विजेता था, वह अकेला रहता था और उसे यात्रा करना पसंद था (हम्म...), उसकी शादी कुछ समय के लिए हुई थी और वह जीवन से क्या चाहता है, इस बारे में वह स्पष्ट है।
ठीक है, श्री रंगनाथनजी! नमस्कार!
हमने चैट वॉल पर एक-दूसरे का परिचय दिया। और अगले तीन दिनों तक, हम एक-दूसरे को औपचारिक संदेश भेजते रहे, जिसमें हमने बताया कि हम कौन हैं, क्या करते हैं, क्या पसंद करते हैं, आदि। मुझे आश्चर्य हुआ कि मैंने वर्चुअल प्लेटफॉर्म पर अजनबियों से चैट करने के अपने शुरुआती (और जिद्दी) संकोच को कैसे दूर कर लिया।
एक दिन...
श्री: 'हे लीना! चलो वीडियो कॉल करते हैं।'
मैं: 'हे श्री, मैं तैयार हूँ, कब?'
और फिर, अचानक! लंबी बातचीत हुई, फिर उससे भी लंबी चैट और उसके बाद कई वीडियो कॉल। हमने लगभग हर उस चीज़ पर चर्चा की जिस पर अलग-अलग जगहों और देशों में रहने वाले दो लोग आसानी से बात कर सकते हैं, मतलब तुलना कर सकते हैं, जैसे मौसम, लोग, यातायात, स्वच्छता, शिष्ट और अशिष्ट लोग, और खाने-पीने के विकल्प। हमारी चैट शुरू होने के बाद, मुझे एहसास हुआ कि इस तरह के लॉन्ग-डिस्टेंस डेटिंग, अफेयर या शादी के बहुत फायदे हैं: कोई भी दिनों तक बेवकूफी भरी बातों की तुलना कर सकता है, बिना किसी काम की बात किए! और इस तरह ज़िंदगी बहुत आसानी से आगे बढ़ सकती है...
कई दिनों तक (माँ की तीखी निगाहों के बावजूद) इस तरह के तुलनात्मक विश्लेषण करने के बाद, मैंने खुद से पूछा: क्या इससे कुछ नतीजा निकलेगा? देखते हैं... लगता है सब कुछ ठीक चल रहा है!

दृश्य 2: दूसरे महीने का दृश्य!
श्री ने बताया कि वे विदेश में जीवन की अनिश्चितता और भविष्य की अनिश्चितता से तंग आ चुके हैं। उन्होंने कहा कि वे भारत वापस लौटने की योजना बना रहे हैं। उन्होंने बताया कि उनके सपने हैं। विशेष रूप से, एक साथ चार स्टार्टअप शुरू करने का सपना! जी हाँ, एक ही बार में!
इस बीच, माँ की टिप्पणियाँ दिन-ब-दिन तीखी होती जा रही थीं: 'तुम दोनों क्या कर रहे हो? घंटों बातें ही करते रहते हो? जल्दी फैसला क्यों नहीं कर लेते? कौन इतना समय इस और उस बात पर सोचने में लगाता है? हमने तो कभी नहीं लगाया... और देखो, तब से हम खुशी-खुशी रह रहे हैं! मैंने दक्षिण भारतीयों में शादी के समय की रस्मों के बारे में पढ़ना शुरू कर दिया है। वैसे, उसके सामने ज़्यादा गोरा दिखने की ज़रूरत नहीं है... अगर उसे हीन भावना हो जाए तो?'
दृश्य 3: तीसरा महीना।
श्री अंग्रेजों से कुछ समय के लिए छुट्टी लेकर हैदराबाद आ गए हैं—और साथ ही चार स्टार्टअप शुरू करने की कोशिश कर रहे हैं। उन्होंने अभी तक शिकायत तो नहीं की है, लेकिन अक्सर मुझे बताते रहते हैं कि भारत की गर्मी और ट्रैफिक से तालमेल बिठाने के लिए वे कितनी कोशिशें कर रहे हैं, और साथ ही अपनी प्यारी लीना से नियमित रूप से बात करने की भी कोशिश करते रहते हैं। (अरे हाँ... वो मैं ही हूँ!)
चैट की 150वीं कड़ी:
मैंने कहा: 'अगर आप शादी करके घर बसाने के बारे में गंभीर हैं, तो चलिए मिलते हैं।'
श्री: ‘जी हां, चलिए मिलते हैं। और, अभी मिलने का सही समय है! स्टार्टअप कभी भी शुरू हो सकते हैं।’
दृश्य 4: पाँचवाँ महीना।
श्री और मैंने बेंगलुरु में मिलने का फैसला किया, जहाँ मुझे एक प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लेना था। हालाँकि माँ ने घर पर खूब हंगामा मचाया—जो कुछ इस तरह था: क्या तुमने कभी किसी लड़की को इतनी दूर जाकर किसी अजनबी लड़के से मिलते देखा है? लोग क्या कहेंगे? और हाँ, बिन्नी—अगर तुम भूल गई हो, तो मैंने ही उस लड़के का प्रोफाइल चुना था और जब तुम दोनों आराम से मिलने की योजना बना रही हो, तो मुझे इस सब से बाहर किया जा रहा है। बहुत खूब!
मेरे लिए, जब भी सुविधाजनक हो, मिलना महत्वपूर्ण था। मुझे यह ज़िद करके अपनी

अहमियत साबित करने की ज़रूरत नहीं थी कि वह मुझसे मिलने दिल्ली आए।

दृश्य **5:** हमारी पहली मुलाकात

मैंने एक बेहद सादा लेकिन स्टाइलिश सलवार-कमीज़ पहनी और तय समय पर अपने पसंदीदा कैफ़े के लिए निकल पड़ी। मुझे ज़रा भी अंदाज़ा नहीं था कि बेंगलुरु का ट्रैफ़िक मूड और पल को बिगाड़ सकता है। कैफ़े पहुँचने में मुझे करीब दो घंटे लग गए! मैं ठीक शाम 6 बजे (एक घंटा देरी से) कैफ़े पहुँची और चारों ओर देखा। ज़ाहिर है, मैं श्री को उनकी सोशल मीडिया प्रोफाइल तस्वीरों से पहचान सकती थी, लेकिन वो मुझे कहीं नज़र नहीं आए। उसी समय, श्री का एक मैसेज मेरे फ़ोन के इनबॉक्स में आया: मुझे 15 मिनट की देरी होगी। मैंने एक गहरी साँस ली और इंतज़ार किया।

चालीस मिनट बाद, मैंने उसे सड़क के उस पार एक गेस्ट हाउस से निकलते और इत्मीनान से कैफे की ओर चलते देखा। उसका घर कैफे से सिर्फ 20 कदम दूर था, फिर भी वह 40 मिनट लेट था! मेरा मन बेचैन हो गया। मैं मन ही मन बुदबुदाती रही: कोई बात नहीं। मुझे इसे नज़रअंदाज़ कर देना चाहिए!

हम बैठे ही थे कि श्री एक उदास चेहरे के साथ असहाय होकर मेरी ओर घूर रहा था। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि वह मुझे देखकर निराश था, या पिछले दो दिनों से भूखा था, या फिर उस कैफे के माहौल से नाखुश था जिसे उसने खुद अपने बेंगलुरु के दोस्तों की सलाह पर चुना था।

इसके बाद उन्होंने भारत में पुनः बसने के प्रयासों के दौरान अपने संघर्षों की पीड़ा का विस्तृत वर्णन किया। उनकी कहानी इस प्रकार सामने आई कि उन्होंने देश की निराशाजनक छवि प्रस्तुत की (अपने उदास चेहरे के भावों के साथ) और नौकरशाही और बैंकिंग जगत में व्याप्त भ्रष्टाचार की भयावहता और अपने चार प्रस्तावित स्टार्टअप की औपचारिकताओं को पूरा करने में आ रही निराशाजनक देरी का बखान किया।

मुझे ऐसा लगा मानो मैं उनका निजी सलाहकार हूँ, न कि भावी साथी। दर्द भरी कहानी अगले एक घंटे तक चलती रही, इस दौरान मेरे भीतर करुणा की भावनाएँ उमड़ती रहीं और फिर वे अचानक रुक गए। शायद श्री को यह एहसास हुआ कि हम थेरेपी के लिए नहीं मिले थे और उन्होंने बात का रुख बदल दिया, और एक ऐसे मोड़ पर आ गए जैसे किसी भावी जीवनसाथी से मिलते समय लेना चाहिए। अगले एक घंटे में सौहार्दपूर्ण बातचीत हुई, भविष्य के लक्ष्यों पर चर्चा हुई और चाय के ऑर्डर बार-बार

दिए गए।
मुझे लगा कि सब कुछ किसी न किसी दिशा में जा रहा है।
जाने का समय हो गया था। हमारी नज़रें मिलते ही पल थम सा गया। दो पल के असहज सन्नाटे के बाद, श्री ने चुप्पी तोड़ी और फिर मिलने का सुझाव दिया। उन्होंने कहा, "चलिए फिर मिलते हैं; साथ मिलकर शहर घूमते हैं।" मैंने कहा कि अगले दिन मेरा पूरा दिन व्यस्त रहेगा, क्योंकि मेरी पूरे दिन की ट्रेनिंग है। उन्होंने साहस दिखाते हुए बेंगलुरु में दो दिन और रुकने का प्रस्ताव रखा। हमारी नज़रें फिर मिलीं और एक-दूसरे के प्रति अनकहे स्नेह के साथ हमने विदा ली।
होटल लौटते समय ट्रैफिक ने मुझे ज़्यादा परेशान नहीं किया। शायद इसलिए क्योंकि मैं श्री के साथ बिताए पलों को याद कर रहा था, मैंने सोचा। वैसे, मुझे एक कॉल भी आया जिसमें पूछा गया कि क्या आपका फोन आया था, और इस बात की पुष्टि हुई कि हमें और ज़्यादा समय साथ बिताना चाहिए था!
दृश्य **6:** अगले दिन।
मैं प्रशिक्षण कार्यक्रम में व्यस्त रहा और दोपहर के भोजन के समय जब मैंने अपना इनबॉक्स चेक किया, तो श्री का एक संदेश मिला जिसमें उन्होंने बताया कि बैंक अधिकारियों के साथ गुप्त समझौते के चलते उन्हें अपने स्टार्टअप की औपचारिकताओं को पूरा करने के लिए हैदराबाद वापस जाना पड़ रहा है। मैं दंग रह गया। रविवार को बैंक अधिकारियों से मुलाकात? अरे हाँ! क्यों नहीं? मैंने सोचा कि सप्ताहांत में ही नापाक सौदे होने की संभावना रहती है।
श्री का अगले दिन लौटने का वादा सच्चा और नंदी हिल्स पर देखी गई चट्टानों से भी अधिक मजबूत लग रहा था। "मेरा इंतज़ार करना, लीना... मैं 40 घंटे से भी कम समय में वापस आ जाऊंगा," उसने संदेश भेजा था।
दृश्य **7: 50** घंटे बाद।
मैंने उसे पंद्रह बार फोन किया, लेकिन उसने कोई जवाब नहीं दिया। इसलिए मैंने उसे ये संदेश भेजे: क्या हुआ? सब ठीक है? क्या तुम किसी मुसीबत में पड़ गए? क्या तुम मर गए?
मुझे श्री रंगनाथन से कोई जवाब नहीं मिला।
दृश्य **8:** एक महीने बाद।
मैं एक निष्कर्ष पर पहुंचा हूं। शायद हैदराबाद लौटते समय उस एनआरआई के सिर

पर नारियल गिर गया होगा और इसी वजह से उसकी याददाश्त चली गई होगी...

श्री के बारे में आखिरी जानकारी मुझे उनके फेसबुक स्टेटस अपडेट से मिली: ऑर्ब ज़ोरबिंग, एसेक्स और सफ़ोक ज़ोरबिंग पार्क में नई ऊंचाइयों को छू रहा हूँ... मैनिंगट्री, यूनाइटेड किंगडम और मोनिका पांडे के साथ रिलेशनशिप में हूँ!

मिस्टर अमेरिकानो एस्प्रेसो!

किसी को ढूंढने की कोशिश में मुझे जो दूसरा लड्डू मिला, वो था... उह... मुझे याद करने दो... आह! नहीं... ओह, हे भगवान! उफ़... क्या वो रोहित था या मोहित? मैं इतनी असंवेदनशील कैसे हो सकती हूँ... किसी आदमी का नाम तक याद नहीं? खैर... कुछ कारणों से, जो धीरे-धीरे सामने आएंगे—चलिए उसे मिस्टर अमेरिकानो एस्प्रेसो कहते हैं! ज़ाहिर है कि वो अमेरिकानो बैंक में काम करता था और, उसका नाम याद करते समय एस्प्रेसो शब्द क्यों याद आता है? खैर, इसका भी जल्द ही पता चल जाएगा।

बेशक, पहले लड्डू ने मेरा दिल तोड़ दिया था, इसलिए मैं कुछ दिन उदास रही और चीज़ मार्गरीटा और ब्राउनी शेक ऑर्डर करती रही। मैंने दो-तीन हफ्तों तक वैवाहिक वेबसाइट पर लॉग इन भी नहीं किया। लेकिन अचानक एक लंबे समय से भूली हुई दोस्त का फोन आने पर मेरा मूड फिर से ठीक हो गया।

निधि: 'हे लीना, क्या हालचाल है? बहुत दिनों बाद बात करनी है। लेकिन सुनो, आज मेरा फोन असल में उन कोशिशों के सिलसिले में है जो मैं अपने एक प्यारे दोस्त की एक बहुत ही प्यारी लड़की से शादी करवाने के लिए कर रही हूँ।'

जब उसने मुझे अनुत्तरदायी पाया, तो उसने स्पष्ट किया: 'बेवकूफ! बेशक, प्यारी लड़की तो तुम ही हो!'

मैं: 'अच्छा ठीक है, मैं सुन रहा हूँ।'

निधि: 'यह दोस्त—आध्यात्मिक स्वास्थ्य के प्रति उत्साही और एक अनुशासित दिनचर्या वाला एक व्यवस्थित वरिष्ठ बैंक अधिकारी—जीवनसाथी की तलाश में है। कल ही वह मेरे घर आया था और मुझे अचानक यह ख्याल आया, हे भगवान! लीना और एस्प्रेसो[1] तो तुरंत हिट हो जाएंगे! मैंने उसे आपके बारे में बताया और वह आपसे जुड़ने के लिए उत्सुक लग रहा था। तो मैंने सोचा क्यों न आपसे ही पूछ लूं। क्या आप उससे मिलना चाहेंगी?'

भले ही थोड़ी अनिच्छा से ही सही, मैंने इस पर विचार करने के लिए सहमति दे दी। कोशिश किए बिना कभी भी 'कभी नहीं' मत कहो!

हालांकि यह मेरी रुचि का विषय नहीं था, फिर भी मैंने फेसबुक पर लॉग इन किया और मिस्टर एस्प्रेसो के बारे में सोशल नेटवर्किंग चैनल पर थोड़ी बहुत छानबीन और जानकारी जुटाई।

मिस्टर एस्प्रेसो अपनी उम्र से कुछ ज़्यादा परिपक्व लग रहे थे। क्या वो सच में... सचमुच सिर्फ़ 42 साल के हैं? हम्म... कुछ लोग ज़िंदगी में बहुत कुछ झेलते हैं और उसका असर उनके चेहरे पर दिखने लगता है। मैंने उनके प्रति सहानुभूति दिखाने का फ़ैसला किया। अपनी पूरी सेहत में तो नहीं थे, लेकिन शुक्र है कि उनका कद लंबा था, इसलिए मिस्टर एस्प्रेसो ठीक-ठाक दिख रहे थे। उनका रंग गेहुँआ था और वो बिल्कुल पड़ोस के आम आदमी जैसे लग रहे थे।

मैंने कुछ दिनों बाद निधि को फोन किया और मिस्टर एस्प्रेसो को अपना फोन नंबर देने की सहमति दी।

हमें स्कूल में सिखाया गया था कि प्रकाश ध्वनि से तेज़ गति से चलता है, लेकिन लगता है कि वे हमारे मिस्टर एस्प्रेसो से नहीं मिले थे, जो जाहिर तौर पर प्रकाश से भी तेज़ थे! मैंने निधि को अलविदा कहा और एक मिनट के भीतर ही मेरी स्क्रीन पर एक व्हाट्सएप संदेश आ गया।

मिस्टर एस्प्रेसो: 'हे लीना, कैसी हो? तुमसे बात करके बहुत खुशी हुई। क्या तुम्हें पता है कि "लीना" एक आयरिश शब्द है जिसका अर्थ है गीला घास का मैदान? मैंने इसके बारे में पता लगाया।'

जिस तेजी से उसने अनौपचारिक पोशाक धारण की, उससे मुझे बहुत झटका लगा और मैं बेहोश हो गया।

मिस्टर एस्प्रेसो: 'हेल्लोoooo... मैं आपको ऑनलाइन देख सकता हूँ। आप टाइप क्यों नहीं कर रही हैं? हेलो! लीना?'

मैंने (संभलने की कोशिश के बाद): 'मैं ठीक हूँ। हाँ, मैं यहाँ हूँ।'

मिस्टर एस्प्रेसो: 'हे, क्या मैं अभी आपको कॉल करूँ? आप मुझसे बात करना चाहते हैं, है ना? लेकिन मैं अभी काम पर हूँ। क्या मैं आपको शाम को लगभग 7 बजे कॉल कर सकता हूँ?'

मैं: 'ठीक है।'

ठीक शाम 7 बजे मेरे व्हाट्सएप पर नोटिफिकेशन आया...

मिस्टर एस्प्रेसो: 'हे लीना, क्या हालचाल है?'

मुझे निधि के शब्द याद आ गए: एस्प्रेसो बहुत ही खास और अनुशासित होता है... बेशक, यह दिख भी रहा था!

आप कैसे हैं, आप क्या करते हैं, आपको क्या खाना पसंद है, आपको क्या देखना पसंद है, इन सब सवालों की लगातार बौछार के बाद—मैं कुर्सी से गिर पड़ा, जब...

मिस्टर एस्प्रेसो: 'क्या आपको आलू-मेथी बनाना आता है? अगर मैं अभी आपको फोन करूं तो क्या आप मेरी मदद कर सकते हैं? मैंने रास्ते में मेथी खरीदी, उसे धोया, सुखाया... और काट भी लिया, लेकिन अब मुझे उसे पकाने में मदद चाहिए।'

मुझे ऐसा लगा जैसे मैं अपनी दिवंगत नानी से जुड़ रही हूँ, जो मुझसे मिलते-जुलते सवाल पूछकर मुझे परेशान करना पसंद करती थीं। मैंने उस भावना को जाने दिया।

मैं: 'हे एस्प्रेसो, खाना बनाने के मामले में मैं बस औसत दर्जे का हूँ। मुझे जटिल व्यंजनों के बारे में ज्यादा जानकारी नहीं है, और इसमें आलू-मेथी भी शामिल है।'

मिस्टर एस्प्रेसो: 'ओह, यह तो बहुत आसान है। क्या मैं आपको सिखाऊं?'

रुको, क्या तुमने अभी-अभी यह नहीं कहा था कि तुम चाहते हो कि मैं तुम्हें इस हरे-भूरे रंग के जटिल मिश्रण को पकाने में मार्गदर्शन करूं? उसके साथ-साथ हैरानी की भावना भी लगातार बरसती जा रही थी।

मिस्टर एस्प्रेसो (मेरी चुप्पी भांपते हुए): 'अरे वाह! मैं तो बस आपके खाना पकाने के कौशल की परीक्षा ले रहा था।'

क्षमा कीजिए! मैं भी चिल्लाकर जवाब देना चाहता था।

[विराम]
मिस्टर एस्प्रेसो: 'ठीक है... ठीक है। कोई बात नहीं। तो, मुझे अपने परिवार के बारे में बताइए।'
मैं क्यों?'
मिस्टर एस्प्रेसो: 'मुझे अपनी दिनचर्या के बारे में बताएं।'
मैंने कहा: 'और इसमें आपकी दिलचस्पी क्यों होगी?'
मिस्टर एस्प्रेसो: 'आप कितने बजे उठते हैं?'
मैं: 'माफ़ कीजिए, मुझे जाना होगा! बाद में मिलते हैं।'
एस्प्रेसो को बातचीत से बाहर किए जाने पर थोड़ी निराशा हुई, लेकिन उसने एक स्माइली के साथ बातचीत समाप्त कर दी।
लगभग आधे घंटे बाद, व्हाट्सएप नोटिफिकेशन एक बार फिर बज उठा।
मिस्टर एस्प्रेसो: 'वैसे, आलू-मेथी बहुत बढ़िया बनी। कल मैं भिंडी-आलू बनाने की कोशिश करूंगा।'
मैं: 'बहुत बढ़िया! खाना पकाने का आनंद लें।'
सोने से पहले मेरे मन में आखिरी विचार: लगता है वो अच्छा लड़का है। हाँ, थोड़ा शरारती है, लेकिन सभ्य है। क्या अभी उसके बारे में राय बनाना जल्दबाजी होगी? क्या मुझे उससे थोड़ी और बात करनी चाहिए?
मेरे मन में इतने ज्यादा विचार आ रहे थे कि मैं अपने मोबाइल को साइलेंट मोड पर रखना भूल गया।
बीप! बीप! सुबह 4 बजे
मेरी खर्राटे की आवाजें पहले से ज्यादा तेज थीं... मुझे बीप की आवाजें याद आ रही थीं।
(बाद में जब मैंने चेक किया तो वह 'सुप्रभात' का संदेश था।)
बीप! बीप! सुबह 4:45 बजे
मेरी खर्राटे की आवाज पहले से भी तेज थी।
बाद में, जब मैंने देखा, तो एस्प्रेसो का संदेश था: 'मैं अपने रनिंग शूज़ पहन रहा हूँ... मुझे शांत सुबहें बहुत पसंद हैं। टहलने जा रहा हूँ।'
बीप! बीप! बीप! सुबह 5:30 बजे
इस बार बीप की आवाज़ मेरे खर्राटों से भी तेज़ थी। मैं एकदम से चौंककर जाग गया

और मेरे मन में कई तरह के डर उमड़ आए: उम्मीद है माँ, पापा, भाई, चाचा, चाची, मौसी... सब ठीक होंगे।

मैंने झपट्टा मारकर अपना फोन उठाया और लगभग चिल्लाते हुए कहा: बेवकूफ! $ %***%$

नवीनतम संदेश था: 'बाहर कितनी सुहावनी हवा चल रही है! आपका दिन शानदार रहे!'

बीप! बीप! सुबह 7 बजे

मिस्टर एस्प्रेसो: 'क्या तुम अभी भी सो रहे हो?'

मैं अपनी बालकनी में बैठा था... मसाला चाय की चुस्कियां ले रहा था और ठंडी हवा का आनंद ले रहा था। मैंने कोई जवाब नहीं दिया।

बीप! बीप! सुबह 7:04 बजे

मिस्टर एस्प्रेसो: 'सुप्रभात! लीना, आप कैसी हैं?'

अब तक मैं बहुत चिढ़ चुकी थी। फिर भी मैंने शांत भाव से जवाब दिया। मेरे भीतर के योगी ने मेरे हाथों को थाम लिया, वरना मैं गुस्से में फोन तोड़ देती। मैंने खुद को बुदबुदाते हुए सुना: शांति... शांति!

मैं: 'सुप्रभात! वैसे, आप तो काफी जल्दी उठ जाते हैं!'

मिस्टर एस्प्रेसो: 'जी हां, देखिए, मैं अपनी सैर को लेकर काफी सतर्क रहता हूं। इसके अलावा, मैं सुबह 7:30 बजे ऑफिस के लिए निकलता हूं। उससे पहले मुझे अपनी सेहत का ध्यान रखना पड़ता है।'

मैं (लिखना चाहता था): लेकिन, मैं नहीं लिखता। मैं उस समय उठता हूँ जिस समय के आसपास सामान्य मानव जाति का आधा हिस्सा अपनी सुबह की अलार्म सेट करता है।

लेकिन मैंने ऐसा नहीं किया। फिर से लगातार "ओम्मम्म शाआआआन्तीइ ...

मैं: 'ठीक है, बढ़िया। अरे, मुझे अब अपना दिन शुरू करना है। बाद में बात करते हैं। आपका दिन शुभ हो।'

मिस्टर एस्प्रेसो: 'ज़रूर। क्या मैं आपको एक घंटे में कॉल कर सकता हूँ?'

मैं: 'नहीं, शायद बाद में।'

मिस्टर एस्प्रेसो: 'ठीक है।'

दो घंटे बाद...

मिस्टर एस्प्रेसो: 'अरे, क्या हालचाल है?'
एक घंटे बाद...
मिस्टर एस्प्रेसो: 'अरे, क्या हालचाल है?'
आधे घंटे बाद...
मिस्टर एस्प्रेसो: 'हे, क्या हम बात कर सकते हैं?'
मैं: 'हे, मैं व्यस्त हूँ। क्या हम बाद में बात कर सकते हैं?'
एक घंटे बाद...
मिस्टर एस्प्रेसो: 'मुझे बता दीजिए कि मैं कब कॉल कर सकता हूं।'
बीस मिनट बाद...
मिस्टर एस्प्रेसो: 'मैं लंच के लिए बाहर जा रहा हूँ। मुझे बता देना कि मैं कब कॉल कर सकता हूँ।'
दो घंटे बाद...
मिस्टर एस्प्रेसो: 'आपका दिन कैसा चल रहा है?'
मैं: 'ठीक है, आप ही बताइए... आप व्हाट्सएप पर काफी सक्रिय लग रहे हैं। क्या आज आपका दिन हल्का-फुल्का था?'
मिस्टर एस्प्रेसो: 'ओह, मुझे पता है कि अपने दिन को कैसे व्यवस्थित करना है। मैं काम सौंपकर काम करता हूँ। आखिरकार, अब आपके बारे में जानने के लिए समय निकालना भी महत्वपूर्ण है।'
मैं: 'ठीक है।'
मिस्टर एस्प्रेसो: 'क्या हमें एक बार नहीं मिलना चाहिए? कल कैसा रहेगा?'
मैं कुछ देर के लिए अचंभित रह गया। मैं बहुत सोचने लगा...
मैं: 'हम्म...हम्म... ठीक है, कल ठीक रहेगा।'
मिस्टर एस्प्रेसो: 'लंच?'
मैं: 'ठीक है।'
मिस्टर एस्प्रेसो: 'चलिए क्रॉसपॉइंट मॉल में मिलते हैं। मैं आपको अपने पसंदीदा लंच प्लेस पर ले जाना चाहता हूँ।'
मैं: 'ठीक है।'
अगली सुबह...
सुबह 4:00 बजे: 'सुप्रभात।'

सुबह 4:45 बजे: 'मैं टहलने जा रहा हूँ।'
सुबह 5:30 बजे: 'हे, क्या हम बात कर सकते हैं?'
यह अनुमान लगाना मुश्किल नहीं है कि उपरोक्त संदेश किसने भेजे और किसे भेजे... मैंने इन्हें सुबह 7 बजे पढ़ा।
मैं सुबह 7:30 बजे: 'चलो दोपहर के भोजन पर मिलते हैं और बात करते हैं।'
मिस्टर एस्प्रेसो सुबह 10 बजे: 'कैसा चल रहा है?'
मिस्टर एस्प्रेसो दोपहर में: 'ऑफिस से निकल रहा हूँ... थोड़ी देर में मिलते हैं।'
*****
एस्प्रेसो के बार-बार आग्रह करने पर हम दोपहर 12:30 बजे मॉल के पार्किंग स्थल पर मिलते हैं।
‘आप बहुत प्यारी लग रही हैं! आने के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद। ओह, आज तो मेरा सौभाग्य है!’ श्री एस्प्रेसो ने उत्साह से कहा।
हम्म... मैंने दो सप्ताह से अपनी भौहें ठीक नहीं करवाई हैं और मेरे बाल बिखरे हुए हैं, ऊपर से मेरे छात्रों की वजह से आंखों के नीचे काले घेरे भी हो गए हैं... पता नहीं उसे मुझमें क्या अच्छा लगा... मैंने सोचा और विनम्रता से 'धन्यवाद' कहा।
'अरे, मुझे लगता है तुम्हारा बैग बहुत भारी है। क्या मैं इसे तुम्हारे लिए उठा लूँ?'
एस्प्रेसो के हाथों ने मेरे हैंडबैग के स्ट्रैप्स पर अपनी पकड़ लगभग कस ली। मैंने विरोध करते हुए कहा, 'नहीं (लगभग अपना बैग छीनते हुए), ठीक है, मुझे अपना वजन खुद अपने कंधों पर उठाने की आदत है।'
सूंघो!
मिस्टर एस्प्रेसो स्पष्ट रूप से निराश दिखे और बुदबुदाए, 'जैसा आप कहें।'
अगले दो घंटों में, एस्प्रेसो की कहानियाँ हमारे द्वारा मंगाई गई पास्ता से भी अधिक नीरस थीं। वह बस खाना पकाने के अपने शौक, अपने काम और उस दिन मुझसे मिलने के बारे में लगातार बोलता रहा, जिससे वह दिन उसके जीवन का सबसे यादगार दिन बन गया था!
मैं उस नीरस बातचीत को और आगे नहीं बढ़ा सका और जल्दी से बोला, 'अरे, अच्छा लगा। मुझे अब जाना होगा। शाम को कुछ और काम हैं।'
क्या आप एक घंटे और नहीं रुक सकते?
नहीं, मुझे जाना होगा।

‘ठीक है... क्या हम कल फिर दोपहर के भोजन पर मिल सकते हैं?’ श्री एस्प्रेसो बेहद उत्सुक दिख रहे थे।

क्या मुझे भ्रम हो रहा था? नहीं... लीना, तुम कर सकती हो! ज़ोर से बोलो! उसे बताओ कि तुम उसे कितना मूर्ख समझती हो... कोई पहाड़ इतना ऊँचा नहीं है! मैंने कमज़ोर आवाज़ में कहा, 'मैं तुम्हें बता दूँगी।'

‘रात का खाना?’ उसने झट से पलटकर पूछा।

‘मैं आपको बता दूंगा।’ इस बार मैंने थोड़ा और दृढ़ता से कहा।

‘परसों दोपहर का भोजन?’

मैं चुप रहा।

'ओह, मुझे लगता है आपको देर हो रही है। चलिए मैं आपको आपकी कार तक छोड़ देता हूँ।'

नहीं, धन्यवाद। मैं ठीक हूँ। क्या आपको काम पर जाने में देर नहीं हो रही है?

'नहीं, मैं आपसे मिलने के लिए इतना उत्साहित था कि मैं बाकी दिन के लिए कहीं चला गया! मेरे और भी प्लान थे लेकिन आपको जाना होगा,' उसने उदास चेहरे के साथ जवाब दिया।

मेरा दिल पिघल गया, और एक पल के लिए मुझे लगा कि मैं उसके गाल खींचकर कहूँ 'छो छी', लेकिन सौभाग्य से वो पल बीत गया! मैं चुप रही। मैंने अपना बैग उठाया, और एस्प्रेसो मेरे पीछे-पीछे आया और बोला, 'मैं तुम्हें शाम को फोन करूँगा। चलो एक और मुलाकात तय करते हैं।'

मैंने तुरंत जवाब दिया, 'मुझे शाम को एक एनजीओ में ध्यान सत्र में भाग लेना है। मैं खुद आपको शाम 7 बजे के आसपास फोन करूंगा।'

मैं कार में बैठा और थोड़ी देर आराम करने के लिए तेजी से निकल गया।

शाम **6.59** बजे**:** ध्यान केंद्र।

खुले आसमान के नीचे चल रही ध्यान कक्षा के बीचोंबीच, बांसुरी की मधुर ध्वनि सभी के दिलों को छू रही थी और हर कोई अपनी सांसों पर ध्यान केंद्रित करने की कोशिश कर रहा था। अचानक, एक फोन की घंटी बजी!

मैं एकदम से तंद्रा से जाग गया। मुझे यह देखकर बहुत हैरानी हुई कि रिंगटोन जानी-पहचानी थी। इसका कारण मेरा मोबाइल फोन था। सेशन बिगड़ने से पहले मैंने कॉल काटने के लिए तुरंत अपने बैग की ओर दौड़ लगाई। लेकिन कॉल कनेक्ट हो गई और

मेरी बेहद शर्मिंदगी की बात यह थी कि वह स्पीकर मोड पर चली गई!
दूसरी तरफ से मिस्टर एस्प्रेसो ने चहकते हुए कहा, 'हे लीना, लगभग शाम के 7 बज गए हैं। तुमने फोन नहीं किया। मैं तुमसे बात करने के लिए बेताब था।'
तब तक, अचानक सभी लोग एलिवेटेड मोड से बाहर आ गए थे। वे सब मुझे हैरानी से देख रहे थे।
मैंने उसी क्षण कॉल काट दी और फोन बंद कर दिया। मैंने खुद से कहा: बस बहुत हो गया! चेतावनी के बावजूद तुमने मेरे काम में दखल दिया। एस्प्रेसो, तुम्हें इसकी कीमत चुकानी पड़ेगी!
मैं केतली में उबलते पानी से भी ज़्यादा गुस्से में घर पहुँचा और एस्प्रेसो का नंबर डायल किया। और फिर, जो हुआ वो ज़बरदस्त था!
मैंने फोन पर चिल्लाते हुए कहा, 'जब मैंने कहा था कि मैं शाम 7 बजे फोन करूंगा, तो फोन करने की इतनी जल्दी क्या थी?'
‘लेकिन आपने शाम 6:59 बजे तक फोन नहीं किया। मैं इंतजार कर रहा था।’ श्री एस्प्रेसो चौंक गए।
बस करो ये सब, महोदय! आप तो बिल्कुल चिपके रहते हैं। मेरा सब्र टूट चुका है। क्या आपके पास करने के लिए और कुछ नहीं है? क्या आपने कभी 'समझदार लोगों को जगह देना' जैसा मुहावरा सुना है? हर घंटे बोलने की इतनी बेचैनी और ज़रूरत क्यों है? मैं आपको पसंद करती हूँ, लेकिन आपसे लगातार बात नहीं कर सकती और काम में बार-बार टोकना मुझे बिल्कुल पसंद नहीं। निधि की वजह से ही ऐसा हो रहा है, वरना मैं इस झंझट में नहीं पड़ती।
लेकिन...उम्म...मुझे...।
अब और नहीं। मैं अब इस तरह के पीछा करने वाले रवैये को बर्दाश्त नहीं कर सकती। आपसे मिलकर अच्छा लगा। अलविदा।
‘क्या मैंने तुम्हारे साथ कुछ ज्यादा ही आक्रामक व्यवहार किया? अच्छा हुआ तुमने मुझे बता दिया। मैं अब थोड़ा धीमा हो जाऊंगा...’
मेरी तरफ से एकदम सन्नाटा छाया हुआ था।
'लीना, चलो कल बात करते हैं।'
मैंने बस इतना कहा था... आपसे मिलकर अच्छा लगा।
लेकिन...

बस, अब मैं तुमसे बात नहीं करना चाहती। कृपया मुझे फोन मत करना। धन्यवाद, और शुभकामनाएं!

मैंने लाइन काट दी।

हालांकि, मेरे धैर्य की पूरी परीक्षा अभी बाकी थी। पांच मिनट से भी कम समय में, मेरे फोन पर मैसेज अलर्ट बजने लगा।

मिस्टर एस्प्रेसो: 'अरे, क्या आप वाकई आश्वस्त हैं? चलिए बात करते हैं... मैं बदल सकता हूँ।'

मैंने अंतिम और दृढ़ कदम उठाया।

संपर्क स्थिति: अवरुद्ध!

चाय में अदरक और तुलसी मिलाते ही बुलबुले एक खुशनुमा आवाज करने लगे, जिससे घुटन का एहसास धीरे-धीरे कम होने लगा।

अब मैं आराम से अपनी चाय पी सकता था!

लड्डू II: मामला 96 घंटों में ही सुलझ गया। कितनी जल्दी निकल गए!

एक भावुक वापसी

अगले कुछ हफ्तों तक मैं मैसेज अलर्ट की आवाज सुनते ही चीखने लगती थी। हालांकि मैंने मिस्टर एस्प्रेसो का नंबर ब्लॉक कर दिया था, फिर भी हर बार जब मैं इनबॉक्स में मैसेज देखती थी तो मेरी उंगलियां कांपने लगती थीं, इस डर से कि कहीं मुझे किसी दूसरे नंबर से ढेरों मैसेज न आ जाएं।

सौभाग्यवश, मुझे काम में पूरी तरह डूबने का अवसर मिल गया। मुझे कॉलेज में अपनी तरह के पहले तीन दिवसीय स्टार्ट-अप 1.0 सम्मेलन के आयोजन का जिम्मा सौंपा गया, जिसमें शिक्षण संस्थानों और उद्योग जगत के बीच गहन विचार-विमर्श और सहयोग शामिल था। मैं नामित संयोजक था और अगले कुछ दिन मैंने कॉलेज में देर शाम तक बिताए।

जब मैं छात्रों को संबोधित करने के लिए उद्योग जगत से आमंत्रित किए जाने वाले वक्ताओं की सूची को अंतिम रूप दे रहा था, तभी एक वक्ता का नाम और तस्वीर मेरी नज़र में आई। अरे, ये चेहरा तो जाना-पहचाना लग रहा है... और नाम भी। कहाँ... कहाँ? मैंने मन ही मन सोचा। मुझे यकीन था कि हम कभी न कभी ज़रूर मिले होंगे। नाम और प्रोफ़ाइल में लिखा था: चिराग वोहरा, मुख्य प्रौद्योगिकी अधिकारी, मेट्रोमैक्स, कैलिफ़ोर्निया, संयुक्त राज्य अमेरिका।

मैं अब भी सोच में डूबी हुई थी कि चपरासी मेज पर चाय का प्याला रख गया, और वह यह पूछ भी नहीं पाया कि मैं उसे भी कब तक यहाँ बंद रखने वाली हूँ। और तभी मुझे अचानक याद आया! अरे हाँ, यह तो चिराग है... मैं ज़ोर से हँस पड़ी, और प्याला गिरने से बचा लिया, हालाँकि चाय की कुछ बूँदें दुपट्टे पर गिर गईं। जी हाँ, हमारे स्कूल का चिराग (सचमुच में भी)! स्कूल का टॉपर, जिसे हम सब नापसंद करते थे क्योंकि उसने अपने शानदार प्रदर्शन से हम सबको कई परेशानियाँ दी थीं। हालाँकि वह हमसे छह साल बड़ा था, लेकिन बाद के बैचों के कई छात्रों के माता-पिता ने अपने बच्चों में चिराग जैसी प्रतिभा की तलाश की थी या उसे जगाने की कोशिश की थी। स्कूल के वॉल ऑफ फेम पर फ्रेम में लगी उनकी तस्वीर और नाम हमें दिखाया गया (भले ही हमें यह कहकर ताना मारा गया कि हम उनके आस-पास भी नहीं हैं)। कई रातों तक हम जागते-जागते उन पर ताने मारते रहे। और जिन रातों में हमें थोड़ी सी भी नींद आ जाती, तो नींद टूट जाने पर हम उनकी उपलब्धियों के बारे में बड़बड़ाते रहते—प्रिंसिपल ने अपने वार्षिक भाषणों और अन्य कार्यक्रमों में उनकी उपलब्धियों को हमारे दिमाग में इतना भर दिया था। गलियारों से गुजरते हुए हमने हजारों बार सोचा था, आखिर उन्हें इतना सफल होना ही क्यों पड़ा, क्योंकि उनकी तस्वीर तिरछी नजरों से हमें देखती रहती थी।

*****

मैंने अपना सामान उठाया और उस शाम थोड़ा जल्दी घर के लिए निकल गया। चपरासी मुस्कुरा रहा था और मानो गुनगुना रहा था। मैं माँ के साथ ज़रूरी जानकारी साझा करने के लिए उत्सुक था। मैं बैठक में पहुँचा, और वहाँ वह टीवी पर चल रहे धारावाहिक को ध्यान से देख रही थी।

'माँ, अंदाज़ा लगाओ क्या हुआ!' मैंने पूरे जोश के साथ कहना शुरू किया।

'चुप रहो... थोड़ी देर रुको। बाद में बात करना। भानुमति किसी भी पल बिल्ली बन सकती है,' उसने मेरी तरफ देखे बिना ही मुझे रुकने का इशारा करते हुए हाथ हिलाया।

मैंने तय कर लिया था कि मैं किसी घटिया सीरियल में भानुमती जैसी किसी लड़की के बहकावे में नहीं आने वाली!

'माँ, 1990 बैच का चिराग हमारे कॉलेज आ रहा है और वह सम्मेलन में वक्ताओं में से एक होगा,' मैंने एक ही झटके में घोषणा कर दी।

बेशक, माँ ने बिजली की तेज़ी से मेरी तरफ मुड़कर देखा। 'क्या! चिराग? तुम क्या कह रहे हो? इतने सालों बाद! ओह, वह कितना प्यारा लड़का था!'

माँ चिराग की तारीफों में मशगूल हो उठीं, और भानुमती घंटियों और ढोल की कान फाड़ देने वाली आवाज़ों के बीच बिल्ली का रूप धारण कर बैठीं! माँ बारी-बारी से उनकी प्रतिभा की प्रशंसा करती रहीं और इस बात पर आहें भरती रहीं कि हम भाई कितने साधारण निकले।

मुझे अब यकीन नहीं था कि यह घोषणा करना एक अच्छा विचार था या नहीं।

*****

अगले दिन से ही मैं पूरी तरह से काम में जुट गया और मेरे मन में आगे आने वाली विशाल जिम्मेदारियों के अलावा और कुछ नहीं सूझा। सम्मेलन का शुभारंभ और समापन बहुत ही सफल रहा। मुझे भरपूर प्रशंसा और सराहना मिली।

समापन सत्र के अंत में, जब चाय और जलपान के साथ बिजनेस कार्ड का आदान-प्रदान हो रहा था, मैं चिराग के पास गई और बोली, 'हैलो, श्री वोहरा! मैं लीना, एक संकाय सदस्य हूँ। मैं आपको आपकी शानदार प्रस्तुति और छात्रों के साथ आपके उतने ही प्रेरणादायक प्रश्नोत्तर सत्र के लिए बधाई देना चाहती हूँ। छात्रों को यह बहुत पसंद आया और उन्हें इससे बहुत लाभ हुआ है।'

'हैलो लीना, आपसे मिलकर भी अच्छा लगा। पिछले तीन दिनों से मैं आपको कुशलतापूर्वक काम करते हुए देख रहा हूँ। आप हर मामले में त्रुटिहीन रही हैं। अब तक मैंने जितने भी सम्मेलनों में भाग लिया है, उनमें से यह सबसे सुव्यवस्थित सम्मेलनों में से एक है। और हाँ, युवा प्रतिभाओं से बातचीत करना वाकई सुखद है।' उनकी आवाज़ में इतनी विनम्रता और गंभीरता थी कि मुझे स्कूल में उन्हें अप्रिय नामों से पुकारने पर लगभग अपराधबोध हुआ।

'धन्यवाद, श्री वोहरा।'

'अरे, आप मुझे बहुत बूढ़ा बना रहे हैं। कृपया, मुझे चिराग कहिए।'

'ठीक है, चिराग... वैसे, मुझे तुम्हें यह बताना है कि हम एक ही स्कूल से हैं।'

'अरे, ऐसा है? वाकई कमाल है! मुझे माफ़ करना, क्योंकि मुझे याद नहीं आ रहा। क्या हम एक ही बैच में थे?'

नहीं, आप मेरे सीनियर थे। मैं 1997 बैच का था।

'अहा, इसीलिए... लेकिन मुझे अपने सहपाठी से दोबारा मिलकर बहुत खुशी हुई।

जिंदगी वाकई एक चक्र की तरह घूमती है,' चिराग हंसते हुए बोला।

'हां, मुझे भी ऐसा ही लगा जब मैंने आपके बारे में पढ़ा और वक्ताओं की सूची बनाते समय आपकी तस्वीर देखी। मुझे यह समझने में देर नहीं लगी कि हम सहपाठी थे... क्योंकि आप स्कूल में काफी मशहूर थे,' मैंने शरारती मुस्कान के साथ कहा।

हम कम से कम एक घंटे तक बातें करते रहे। शुक्र है, स्वागत समिति के लोग सम्मेलन के अन्य प्रतिभागियों का ध्यान रख रहे थे और मैं चिराग से उनके बारे में जो कुछ भी जानना चाहता था, पूछ सका। उनकी उपलब्धियों के कारण उनके व्यक्तित्व से मैं थोड़ा घबराया हुआ था। हालांकि, उन्होंने मुझे तुरंत सहज महसूस कराया। वे साधारण दिखते थे; उनकी लंबाई औसत थी और शरीर मध्यम आकार का था; गोल फ्रेम का चश्मा पहनते थे और आम मानकों के अनुसार सुंदर तो नहीं थे, लेकिन बेहद बुद्धिमान और सफल थे। मुझे लगा कि उनका जीवन एकदम परिपूर्ण है और वे कैलिफोर्निया जैसी आदर्श जगह पर बसे हैं।

हम अपने पुराने शिक्षकों और स्कूल के खेल जगत के कुछ सितारों को याद कर रहे थे। हम दोनों हंसने लगे और अपने शिक्षकों को उन्हीं उपनामों से पुकारने लगे जो स्कूल में प्रचलित थे। पता ही नहीं चला कि कब मैंने उसे कुछ गपशप की बातें बता दीं और वह भी उन मजेदार जानकारियों से खुश हो गया। मुझे आश्चर्य हुआ कि हमारे स्कूल का चिराग असल में सामान्य था! मैंने मन ही मन सोचा कि उसे भी शरारत और गपशप करना पसंद है।

मैंने उन्हें अपने बारे में बस थोड़ी सी जानकारी दी, क्योंकि बताने के लिए ज़्यादा कुछ था ही नहीं। जब मैंने उनसे उनके काम के बारे में पूछा, तो उनका लहजा बेहद सहज और सरल लगा। मेट्रोमैक्स में एक उच्च-स्तरीय टीम का नेतृत्व करने के बावजूद, उनकी विनम्रता में कोई कमी नहीं आई थी। उन्होंने सहजता से बताया कि वे आध्यात्मिक रूप से भी काफी सक्रिय हैं और अमेरिका के साथ-साथ भारत में भी कई सार्थक और परोपकारी कार्यों में शामिल हैं।

एक घंटे से अधिक समय अवश्य ही बीत चुका होगा। प्रतिनिधि सभागार से बाहर निकलने लगे थे और हमें एहसास हुआ कि अब विदाई का समय आ गया है।

'लीना, आपसे संपर्क करके मुझे खुशी हुई। काश हमारे पास बात करने के लिए और समय होता। लेकिन मुझे वापस जाकर पैकिंग करनी है। कल सुबह मेरी फ्लाइट है। मुझे उम्मीद है कि हम ईमेल या चैट के माध्यम से अपनी बातचीत जारी रख सकते

हैं।'

"ज़रूर, मैं आपसे संपर्क बनाए रखना चाहूंगा। मुझे भी वैसी ही खुशी महसूस हुई। चिराग, आपको शुभकामनाएं और आपकी यात्रा मंगलमय हो।"

'आने वाले दिनों और महीनों में भी मैं आपके लिए ढेर सारी खुशियों की कामना करता हूँ। उम्मीद है कि आप या कोई अन्य संस्था अगले साल इसी तरह का सम्मेलन आयोजित करे और मुझे आमंत्रित करे, और हमें फिर से मिलने का मौका मिले,' चिराग हँसते हुए बोला और हमने सौहार्दपूर्वक हाथ मिलाया।

*****

छात्रों की टीमों को अंतिम कार्य सौंपते समय मैं पूरे समय बहुत उत्साहित थी। लेकिन घर लौटते ही मैं उदास हो गई। मुझे खुद समझ नहीं आ रहा था कि ऐसा क्यों हो रहा है। मुझे क्या परेशान कर रहा है? मैं इतनी उदास क्यों महसूस कर रही हूँ? क्या चिराग ने कुछ कहा? मुझे नहीं लगता, और सम्मेलन से संबंधित काम भी सुचारू रूप से हो गया था। तो फिर क्यों?

उस रात खिड़की से चांदनी रात में आसमान को निहारते हुए, मेरे मन में कई तरह की भावनाएं उमड़ रही थीं—हर भावना दूसरी से आगे निकलने की होड़ में थी। क्या मैं चिराग के जीवन की राह देखकर ईर्ष्या कर रही थी? हमने एक-दूसरे से अपने वैवाहिक जीवन के बारे में नहीं पूछा था, लेकिन मुझे पूरा यकीन था कि वह एक बुद्धिमान पत्नी और दो प्रतिभाशाली बच्चों के साथ सुखी वैवाहिक जीवन जी रहा होगा। कुछ जीवन एक सीधी रेखा में आगे बढ़ते हैं और उसका जीवन भी कुछ ऐसा ही लग रहा था। शायद यही बात मुझे परेशान कर रही है, मैंने सोचा।

मैं अक्सर बैठकर अपने जीवन के बारे में नहीं सोचती थी। लेकिन जब भी ऐसा होता, जीवन के उतार-चढ़ाव भरे सफर की यादें मेरे मन में डर पैदा कर देती थीं। मैं कभी नहीं भूल सकती कि पिछले चार सालों में मैंने अपने व्यक्तित्व में कितने सचेत बदलाव लाए थे। मैं दिल्ली की एक बिंदास और जीवंत लड़की थी, जिसका जीवन मेरे काम, मेरे बॉयफ्रेंड लकी, सीपी में कपड़े खरीदने, कमला नगर में चाट खाने, पार्टियों में जाने और पालिका बाजार में टाइम पास करने के इर्द-गिर्द घूमता था। लकी दिल्ली का एक स्टाइलिश और अतिआत्मविश्वासी लड़का था, जिसकी जिंदगी बेफिक्र थी। उसकी जिंदगी दिल्ली विश्वविद्यालय के साउथ कैंपस के बाहर बुलेट पर स्टाइल दिखाने, जान-पहचान वालों का ढिंढोरा पीटने, अच्छे रेस्टोरेंट में लड़कों और लड़कियों

के साथ अगली मुलाकात की योजना बनाने और ठोस व्यापारिक योजनाओं पर जोश से चर्चा करने में ही बीतती थी।

लकी और मेरी शादी सात साल पहले हुई थी, दोनों पक्षों के माता-पिता की इच्छा के कुछ हद तक विरुद्ध। सहमति के बावजूद, शादी दिल्ली में ही हुई थी। अनुमान के मुताबिक, दोनों पक्षों का खर्च लगभग 50 लाख रुपये था। यह पाँच दिनों का भव्य समारोह था और चूंकि दो समारोह महरौली के पास एक फार्महाउस में और दो अशोका होटल में हुए थे, इसलिए यह एक सभ्य पंजाबी शादी के निर्धारित मानकों को पूरा करने में कामयाब रहा। डिज़ाइनर लहंगे में सजी मुझे मेरे पिता ने एक बिल्कुल नई टोयोटा कोरोला में विदाई दी थी।

हमारा रोमांस और उत्साह लगभग छह महीने तक चला—लगभग उतना ही समय जितना परिवार और दोस्तों द्वारा नवविवाहित जोड़े को भेजे गए डिनर के निमंत्रणों को समाप्त होने में लगा। लकी ने अपने उन दोस्तों के साथ कुछ व्यावसायिक योजनाओं पर गहन बातचीत और चर्चा फिर से शुरू कर दी, जो धन और प्रभाव दोनों से परिपूर्ण थे, लेकिन उनमें व्यावहारिकता और दृढ़ संकल्प की कमी थी। ये योजनाएँ कभी साकार नहीं हुईं और उन दोस्तों के आलीशान कमरों में ही दबी रह गईं। शादी के बाद, मैंने कॉलेज में अपनी नौकरी जारी रखी।

दो साल बीत गए और लकी के व्यापारिक योजनाओं को लागू करने के छोटे-मोटे प्रयास नाकाम रहे। वह अपने पिता और मुझसे खुशी-खुशी उधार लेता रहा और आराम से गुजारा करता रहा। उसकी जीवनशैली पहले की तरह ही दिखावटी थी... एक और साल बीत गया, और हम दोनों के व्यवहार में अब निराशा के लक्षण दिखने लगे थे। मैं उसकी लगातार पैसों की माँगों को मानते-मानते थक गई थी। उसकी माँगों का विरोध करने की मेरी कोशिशों के कारण मुझे शारीरिक और भावनात्मक दुर्व्यवहार झेलना पड़ा। मुझे अपनी शादी की सच्चाई को स्वीकार करने में काफी समय लग गया। जब तक मैं कानूनी तौर पर शादी से बाहर निकल सकी, तब तक तीन साल बीत चुके थे और मैं भी पहले जैसी नहीं रह गई थी।

उसके बाद के महीनों और वर्षों में, मैं और मेरे सभी प्रियजन देख सकते थे कि मैं गहरे अंधकार में डूबता जा रहा हूँ। तभी एक समझदार चाचा ने मुझे लगभग मजबूर कर दिया कि मैं तीन महीने के योग पाठ्यक्रम में दाखिला ले लूँ। पहले तो मैं अनिच्छुक था, क्योंकि मेरे शुभचिंतकों द्वारा सुझाई गई लगभग हर बात मुझे भाँप रही थी। कुछ

भी मुझे आकर्षित नहीं कर रहा था, और मैं बस कुछ भी नहीं करना चाहता था। मैं बस अपने खोल में सिमटकर कुछ समय के लिए निष्क्रिय रहना चाहता था। पूर्णकालिक योग पाठ्यक्रम मुझे उस सुरक्षित स्थान की ओर ले जाता हुआ प्रतीत हुआ जहाँ मैं कुछ समय के लिए सुरक्षित रूप से छिप सकता था। मैंने पाठ्यक्रम में अपना नाम दर्ज करा लिया और जैसे-जैसे सत्र आगे बढ़े, मैंने योग पाठों को इतनी सहजता और पूर्णता से ग्रहण कर लिया कि मैं स्वयं अपने नए विचारों और व्यवहार पर आश्चर्यचकित रह गया।

चांद को ध्यान से देखते हुए, मैं वापस लौट आया और वर्तमान में लौट आया। मुझे पता था कि कुछ निराशाजनक विचार भले ही मन में अस्थायी रूप से उथल-पुथल मचा रहे हों, लेकिन थोड़ी देर में वे शांत हो जाएंगे।

मैंने माँ के साथ बैठक में जाकर यह पता लगाने का फैसला किया कि भानुमती के बिल्ली बनने के बाद क्या हुआ! मैं यह जानना चाहती थी कि क्या उसके पति ने उसे पहचाना था।

एक रैप

माँ ने अगले कुछ दिनों तक मेरे प्रति थोड़ा नरमी बरतने का फैसला किया। मैं उनकी देखभाल और दुलार के आराम में डूबा रहा। लेकिन उस दिन, वह कुछ ज़्यादा ही नरम थीं। ऐसा लग रहा था मानो उनका दिल कुछ ज़्यादा ही कोमल हो गया हो, क्योंकि उन्होंने दोपहर के भोजन के समय बड़े प्यार से मेरी थाली में एक विशाल, गोल और मुलायम भटूरा रख दिया।

‘बिन्नी, ज्यादा मेहनत मत करो, बेटा। आराम करो। अपने दोस्तों के साथ बाहर जाओ, सुबह की सैर करो, या शाम को फिल्में देखने जाओ और खुद को तरोताजा करो... क्या तुम मेरे साथ एक छोटी सी छुट्टी पर चलना चाहोगे?’

यह किसी नतीजे की ओर इशारा कर रहा है... मैंने तुरंत अलर्ट बटन दबा दिया और मेरे एंटीना सक्रिय हो गए, ताकि बाहर मंडरा रहे किसी भी खतरे को भांपकर उसे रोका जा सके।

'धन्यवाद, माँ। मुझे पता है कि मुझे कभी-कभी बाहर जाना चाहिए, लेकिन अभी नहीं। मैं अपने कॉलेज में होने वाले वार्षिक वाद-विवाद समारोह के जिला स्तरीय चयन में व्यस्त हूँ।'

'ठीक है, कोई बात नहीं प्रिये। लेकिन जब भी मौका मिले, जाकर आनंद जरूर लेना।'

'हम्म...।'

‘बिन्नी, क्या तुम्हें श्रीमती शाह याद हैं, हमारी पूर्व पड़ोसी जो पांच साल पहले केन्या चली गई थीं?’

आह! अब वो बोल रही है।

'हां, मां। मैं करता हूँ।'

“आज सुबह उनका फोन आया था। यकीन मानिए, वो कितनी प्यारी महिला हैं... उन्होंने यूं ही अपने बेटे के एक दोस्त का जिक्र किया, जो पिछले साल भारत वापस चला गया था।”

'ठीक है?'

श्रीमती शाह के अनुसार, वह लाखों में एक तरह का शख्स है। उसका तलाक हो चुका है। उसने केन्या में शिक्षा प्राप्त की और लगभग आठ साल तक वहीं रहा, फिर पारिवारिक व्यवसाय संभालने के लिए दिल्ली आ गया। वह अपने माता-पिता के साथ रहता है, जबकि उसकी बड़ी बहन शादीशुदा है।

‘माँ, कृपया। मुझे अपना दोपहर का भोजन आराम से करने दीजिए।’

मेरी थाली में अगला भटूरा रखते हुए माँ ने आगे कहा, ‘वो पढ़े-लिखे हैं, और तो और, सैनिक फार्म्स में रहते हैं। बिन्नी, सैनिक फार्म्स! ज़रा सोचो। क्या ये सही नहीं है? क्या हर दिल्ली की लड़की की यही ख्वाहिश नहीं होती कि उसकी शादी दक्षिण दिल्ली के किसी राजकुमार से हो जाए? उनकी उम्र बिल्कुल सही है; उनके कोई बच्चे नहीं हैं; उनका रंग गोरा है और सिर पर बाल भी नहीं हैं; वो न ज़्यादा लंबे हैं और न ज़्यादा छोटे... बस एक ही बात है कि उनका पेट निकला हुआ है। लेकिन, श्रीमती शाह ने कहा कि वो सभ्य और शिष्ट स्वभाव के हैं। क्या हमें और कुछ जानने की ज़रूरत है?’

‘माँ, क्या आपको सच में लगता है कि हमें शाह आंटी की बातों के आधार पर निष्कर्ष या राय बनानी चाहिए?’

'श्रीमती शाह बहुत दयालु हैं... उन्हें आपकी चिंता भी है। लीजिए, ये मलाई सैंडविच लीजिए, जो मैंने आज बहुत दिनों बाद खाई है... खैर, उन्होंने मुझे शक्ति का नंबर दिया। मैंने व्हाट्सएप पर उनकी प्रोफाइल पिक्चर देखी। मैं आपको बता सकती हूं कि वे हमारी उम्मीदों से कहीं बेहतर हैं। मैंने श्रीमती शाह को बताया कि आप आज रात शक्ति से बात करेंगी।'

‘शक्ति? क्या नाम है, माँ!’

इससे पहले कि मैं उस व्यक्ति के बारे में (हमारी तरफ से) अपनी राय और व्यक्त कर पाता, माँ कमरे से बाहर भाग गई और मुझे मलाई सैंडविच के लिए तरसाती रह गई!
*****
रात के खाने के बाद मुझे पता चला कि माँ ने मुझे वो नंबर भेजा था। हमेशा की तरह, जब भी वो इस तरह का कोई फ़ोन नंबर भेजती थीं, तो उसके साथ एक छोटी सी सख्त हिदायत भी होती थी। मैंने उसे व्हाट्सऐप पर देखा। प्रोफ़ाइल पिक्चर कुछ खास नहीं थी। माँ हमेशा बढ़ा-चढ़ाकर बोलती हैं! वो दिखने में तो अच्छा है, लेकिन उसका चेहरा एकदम पत्थर जैसा है... और उसकी उंगलियों में इतनी सारी अंगूठियाँ क्यों हैं? मुझे नहीं लगता कि सगाई की अंगूठी के लिए कहीं जगह है!
अब आगे बढ़ने का समय आ गया है...
रात **9** बजे
मैं: 'हे शक्ति। मैं लीना हूँ। शाह आंटी ने सुझाव दिया था कि हम संपर्क करें।'
अगले दिन सुबह **9** बजे
शक्ति: 'हाय लीना, मुझे माफ करना। मैं पहले जवाब नहीं दे पाई। जब तुमने कल रात मैसेज किया था, मैं प्रार्थना में व्यस्त थी।'
मैंने कहा: 'कोई बात नहीं। आप कैसे हैं?'
शक्ति: 'आज सुबह मेरी तबीयत ठीक नहीं थी, लेकिन जब से मैंने आज का राशिफल पढ़ा है जिसमें लिखा है कि आज मैं बहुत ऊर्जावान महसूस करूंगी, तब से मैं बिल्कुल ठीक महसूस कर रही हूं। साथ ही, उसमें यह भी लिखा है कि अगले एक घंटे किसी अनजान लड़की से बात करने के लिए शुभ समय है। आशा है कि आप बात करने के लिए थोड़ा समय निकाल सकेंगी?'
[विराम]
मैं: 'हां, ठीक है।'
शक्ति: 'तो मैं तुम्हें फोन कर लेती हूँ।'
कुछ देर बाद उन्होंने मुझे व्हाट्सएप पर कॉल किया और मैंने बड़ी उत्सुकता से कॉल उठाया, 'हेलो, फिर से। क्या आप भविष्यवाणियों में विश्वास करते हैं?'
दूसरी तरफ से एक कठोर, बचकानी आवाज़ आई, जो मानो कभी भी उपदेश देने में बदल सकती थी। 'हाँ, मैं पूरी तरह से मानता हूँ कि हमारे जीवन में सब कुछ पूर्वनिर्धारित है। फिर भी, अक्सर नक्षत्रों की गलत स्थिति और उनके बीच संघर्ष के

कारण परिस्थितियाँ बिगड़ जाती हैं। यदि हम सही समय पर सही कदम उठाएँ, तो जीवन सुचारू रूप से चलता है। शिवोहम! शिवोहम! रुकिए... मुझे अपना जूस खत्म करने के लिए एक पल दीजिए।'

गोता लगाओ... गोता लगाओ... गोता लगाओ... घूंट भर के!

मैं पूछना चाहता था, क्या अखबार में जूस पीने के समय का पूर्वानुमान भी लगाया गया है? लेकिन इसके बजाय, मैं चुप रहा।

'क्या तुम ईश्वर से डरती हो, लीना?' शक्ति ने मुझसे पूछा।

अब, यह सब क्या है? मैंने गहरी सांस ली। 'मैं आध्यात्मिक रूप से झुकाव रखती हूं और मेरी आस्था दृढ़ है। हालांकि, मैं रीति-रिवाजों का पालन नहीं करती और न ही स्थापित समारोहों में विश्वास करती हूं।'

शक्ति की आवाज़ धीमी पड़ गई और उसने कहा, "यह जानकर दुख हुआ। मैं शिव भक्त हूँ। मैं दिन में दो बार - सुबह और शाम - पूरी श्रद्धा से प्रार्थना करता हूँ। हर सप्ताहांत मैं शिव मंदिर जाता हूँ। मेरा परिवार भी मंदिर बोर्ड के न्यासियों में से एक है। हम मंदिर भवन के नवीनीकरण के लिए नियमित रूप से दान करते हैं। जो भी मुझसे विवाह करे, उसे यथाशीघ्र हमारे परिवार की संस्कृति को अपनाना चाहिए। जितनी जल्दी वह इसे अपनाएगी, हम सबके लिए उतना ही अच्छा होगा। शिवोहम! शिवोहम!"

मुझे आश्चर्य हुआ कि क्या मैं किसी अजीबोगरीब आवाज वाले बाबा से बात कर रहा था। क्या उन्हें अविवाहित ही रहना चाहिए, जबकि वे ईश्वर की सेवा में लीन हैं? 'ठीक है। बढ़िया। मेरा मानना है कि हम सभी अपनी पसंद के अनुसार चलने और करने के लिए स्वतंत्र हैं।'

'हमारी बातचीत समाप्त होने के बाद, कृपया मुझे अपनी कुंडली भेजें। मेरे पास कुंडली मिलान के लिए एक बेहतरीन सॉफ्टवेयर है। यह हमें ठीक-ठीक बता देगा कि हमारे कितने सितारे आपस में मेल खाते हैं,' शक्ति ने प्रस्ताव दिया।

मुझे पता था कि मैं उसकी बात नहीं मानूंगी। अगर वह मुझे दरकिनार करके सीधे उच्च कमान (यानी मेरी माँ) से संपर्क करता, तो मैं समझ सकती थी कि आगे क्या होगा!

उन्होंने मेरी सहमति या असहमति का इंतज़ार नहीं किया। उन्होंने आगे कहा, 'लीना, मैं केन्या में बेफिक्र ज़िंदगी जी रहा था। मेरे पास सब कुछ था; वो सब कुछ जो एक नौजवान चाहता है—लड़कियाँ, पार्टियाँ, अच्छी तनख्वाह, जंक फ़ूड, गाड़ियाँ, महंगी

घड़ियाँ... मैं अपनी हर इच्छा पूरी कर सकता था लेकिन... मेरी ज़िंदगी मुझे कहीं नहीं ले जा रही थी। कई बार मैं खुद को पूरी तरह बेकार और निराश महसूस करता था। ऐसे समय में मैं सोचता था कि मैं खुश क्यों नहीं हूँ। फिर एक दिन भगवान शिव मेरे सपने में आए। उन्होंने मुझसे कहा कि मैं परदेस छोड़कर मोह और माया को त्याग दूँ... चंचल मन के सतही आकर्षणों से दूर होकर भारत लौट आऊँ और अपना जीवन भगवान और अपने माता-पिता की सेवा में लगा दूँ। वह सपना इतना शक्तिशाली था कि उसने मुझे भगवान शिव की दिव्य शक्ति में नया विश्वास दिलाया। मैं पिछले साल भारत आ गया, अपने पारिवारिक व्यवसाय की बागडोर संभाली और अब मैं ठीक महसूस कर रहा हूँ। उनकी कृपा से इस एक साल में हमारी कंपनी का मुनाफा दोगुना हो गया है। शिवोहम! शिवोहम!'

'हम्म... लेकिन बताओ, क्या अब ऐसी कोई बात नहीं है जो तुम्हें परेशान करती हो?' मैंने उससे पूछा।

काफी देर चुप रहने के बाद शक्ति ने जवाब दिया, 'नहीं, मुझे अब भी कभी-कभी निराशा होती है जब मेरे सितारे अनुकूल नहीं होते। देखिए, जब मैं बीमार पड़ जाती हूँ, या जब कोई सौदा पूरा नहीं होता, या जब मेरी पिताजी से लड़ाई हो जाती है, तो मुझे निराशा होती है। लेकिन फिर, मुझे तुरंत यह एहसास भी हो जाता है कि मैंने अनजाने में कुछ ऐसा कर दिया होगा जिससे मेरे भगवान शिव नाराज हो गए हों या उस दिन मेरे सितारे अनुकूल न हों।'

मुझे अब चक्कर आने लगे थे और दिन में मेरी आंखों के सामने एक-दो तारे लगभग दिखाई दिए। मैंने पूछा, 'तो फिर आप क्या करते हैं?'

फिर मैं प्रार्थना करने बैठता हूँ। मैं प्रार्थना करता हूँ, प्रार्थना करता हूँ और प्रार्थना करता हूँ। सब कुछ फिर से ठीक हो जाता है। यही...यही मेरे भगवान शिव की शक्ति है। शिवोहम! शिवोहम!

वह बोलते रहे, और मैं भी धीरे-धीरे बुदबुदाने लगा, शिवोहम...शिवोहम!

मैं शादी के तुरंत बाद परिवार शुरू करना चाहती हूं।

अरे, रुको! एक विषय से दूसरे विषय पर इतनी जल्दी कैसे पहुँच गए... अभी तो बातचीत शुरू हुए मुश्किल से पाँच मिनट ही हुए हैं... क्या तुम उड़ने वाले घोड़े पर सवार हो? इसके बजाय, मैंने कहा, 'इस समय, मैं सिर्फ बच्चे पैदा करने के लिए शादी नहीं करना चाहती।'

'खैर, इससे एक समस्या पैदा होती है क्योंकि मैं एक बहुत ही परिवार-उन्मुख व्यक्ति हूं।'

‘यह अच्छी बात है। मेरे लिए, “परिवार” में बच्चों के आने से पहले दो लोगों के बीच का खूबसूरत साथ भी शामिल है। परिवार होने का मतलब सिर्फ बच्चे पैदा करना नहीं है; इसका मतलब पहले अपने साथी के साथ एक मजबूत और गहरा रिश्ता बनाना भी है।’

शक्ति ने उपेक्षा भरे लहजे में कहा, “देखिए, एक दिन ध्यान करते समय मुझे पूर्वाभास हुआ कि मेरा बच्चा वरदान प्राप्त करेगा; भगवान शिव से एक विशेष वरदान। दरअसल, मैं अपने घर में एक कमरा शिशु कक्ष के रूप में तैयार करवा रही हूँ। मेरी बहन उसका डिज़ाइन बना रही है।”

मैंने जवाब दिया, 'यह अच्छी बात है। लेकिन आपको यह समझना होगा कि हर किसी को अपनी पसंद और निर्णय खुद ही लेने होते हैं।'

उन्होंने कहा, “यह नारीवाद और इससे जुड़े जीवन-मरण के मंत्र जैसे सारे बेतुके विचार ही हमारे समाज को बर्बाद कर रहे हैं। महिलाएं बेतुके फैसले ले रही हैं। या तो वे बच्चे नहीं चाहतीं या गोद लेना चाहती हैं। मुझे लगता है कि मां बनने से पहले एक महिला अधूरी है। हमारी माताओं, हमारी दादी-नानी को देखिए... उन्होंने मातृत्व को कितनी सहजता से अपनाया। जितनी तरक्की होती है, उतनी ही परेशानी भी बढ़ती है। इस डिजिटल युग से पहले हम बेहतर स्थिति में थे। कम से कम, हमारी महिलाएं कुछ समझदारी की बातें तो करती थीं।”

मैं खुद को रोक नहीं पाई। मैंने कहा, 'मैं आपसे आग्रह करती हूं कि आप महिलाओं के लिए क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए, इसकी सूची बनाने का दायित्व अपने ऊपर न लें और न ही अतीत में उनके द्वारा किए गए कार्यों और न किए गए कार्यों पर अपना निर्णय देने की जहमत उठाएं।'

वह अपनी बात पर अड़ा रहा और बोला, 'लेकिन, यह एक सच्चाई है। मुझे लगता है कि तुम सच से डरती हो। मुझे इस बात से बहुत दुख होता है कि ज़्यादा से ज़्यादा औरतें बच्चे नहीं चाहतीं। यह बिल्कुल ठीक नहीं है। तुम्हें पहले मुझे साफ़-साफ़ बताना होगा कि तुम बच्चे पैदा करोगी या नहीं?'

तो, यही है आपकी सोच? शक्ति, संतान प्राप्ति की आपकी योजना के लिए आपको शुभकामनाएं... मेरी सलाह है कि आप अपने लक्ष्य तक पहुंचने के लिए शीघ्रता से

कदम उठाएं, वरना आपकी उम्र को देखते हुए आप मौका चूक सकते हैं। और मुझे उस लड़की पर तरस आता है जो संतान प्राप्ति की प्रक्रिया में आपकी साथी बनेगी, क्योंकि शादी के बाद शायद उसे इससे ज्यादा खूबसूरत कुछ न मिले।
मैंने कह ही दिया था। ज़ाहिर है, उसने पहले पूछा, 'तुम ये कैसे कर सकते हो?'
लेकिन मैंने उसे बीच में ही रोकते हुए कहा, 'मैं अब इस बातचीत को समाप्त करना चाहूंगी। मुझे नहीं लगता कि हम दोनों इस मामले में एकमत हैं। कॉल करने के लिए धन्यवाद, शक्ति।'
'मैं तुम्हारे लिए प्रार्थना करूंगा, लीना। तुम्हें अपनी सोच बदलनी चाहिए। तुम इस जीवन को एक अपूर्ण स्त्री बनकर व्यर्थ न जाने दो... शिवोहम... शिवोहम!' कॉल कटने से पहले ही उसने किसी तरह अपनी बात पूरी कर ली।
उनकी चुभने वाली बातों से मेरी आँखों में जलन हो रही थी। अगले कुछ मिनटों तक मैं इस बात पर गहराई से विचार करता रहा कि लोग किस तरह के विश्वासों को इतने आत्मविश्वास से, लेकिन असंवेदनशीलता से अपने मन में पालते हैं।
मुझे प्रतिभाशाली शक्तिमान जूनियर को जन्म देने का सौभाग्य नहीं मिला था! शायद यही मेरी किस्मत में लिखा था—मैंने मन ही मन मुस्कुराते हुए कहा।
मुझे आश्चर्य हुआ कि क्या जॉन ग्रीन को भी इसी तरह की स्थिति का सामना करना पड़ा था जब उन्होंने लिखा था: 'हमारे सितारों के बीच दोषों की कोई कमी नहीं है।'
*****
मैं और मेरी माँ शक्ति को जल्दी ही भूल गए।
श्रीमती शाह इतनी व्यस्त हो गईं कि वे पहले की तरह अक्सर मां से मिलने नहीं जा पाती थीं।
शिवोहम, शिवोहम... के नारों के बाद बेकाबू हंसी की गूंज कई दिनों तक हमारे बैठक कक्ष में गूंजती रही।

सुबह 3 बजे उठने वाले व्यक्ति की गाथा

दिन तेजी से बीतते गए और माँ के भावनात्मक ब्लैकमेल के उद्देश्य से दिए जाने वाले चुटकुलों की खुराक दिन में दो-तीन बार या पम्मी आंटी के निर्देशानुसार जारी रही।
एक आलसी रविवार की दोपहर, आखिरकार ऊपर बताई गई खुराक का असर हुआ और मैं अनिच्छा से माँ द्वारा shaadi-ka-laddoo.com पर की गई उनकी मेहनत भरी खोज के बाद चुने गए प्रोफाइलों को फिर से देखने के लिए सहमत हो गया।

यह एक ऐसा प्रस्ताव था, जिसे माँ ने चार सितारा रेटिंग दी थी: 38 वर्षीय आकर्षक पंजाबी लड़का, दिल्ली में जन्मा, लंदन में बसा हुआ, पढ़ने का शौकीन और एक सरल, घरेलू पंजाबी लड़की की तलाश में है।

क्या मैं बदसूरत हूँ? मैंने कई मिनट तक यही सोचा लेकिन मुझे इसका जवाब नहीं मिला।

सुनीत के चेहरे पर एक अजीब सा भाव था, मानो वह अपने जन्म पर अफसोस जता रहा हो। उसका रंग गोरा और मटमैला था, माथा चौड़ा था और पेट निकला हुआ था। उसने अपने प्रोफाइल पर करीब आठ तस्वीरें लगा रखी थीं: एक पूरी तस्वीर; एक साइकिल पर बैठे हुए; एक एम एंड एस शॉपिंग बैग के साथ; एक धूप के चश्मे के साथ... मुझे चिढ़ हो रही थी, फिर भी मैं स्क्रॉल करता रहा और आखिर में मुझे उसकी महंगी जिम ड्रेस वाली तस्वीर दिखी।

'माँ, मुझे इस लड़के, सुनीत के बारे में अच्छा महसूस नहीं हो रहा है,' मैंने माँ को आगाह करने की कोशिश की।

माँ ने भौंहें चढ़ाते हुए कहा, 'अरे, सुनीत को क्या हुआ है? मुझे तो उसके शारीरिक रूप या चेहरे में कोई कमी नज़र नहीं आती। वो जिम तो जाता है, लेकिन मुझे लगता है उसने कोई पैकेज ले रखा होगा। सस्ते पैकेज लेने वालों पर ट्रेनर ज़्यादा ध्यान नहीं देते। शायद आप उसकी तोंद कम करने में मदद कर सकते हैं और उसे कुछ योगासन बता सकते हैं।'

आखिरी पंक्ति बोलते हुए उसने मुझे आँख मारी। अविश्वसनीय!

'माँ, उसके चेहरे पर एक अजीब सी उदास सी भावभंगिमा है,' मैंने विरोध किया।

'लीना, हर समय इतना नकारात्मक रवैया मत अपनाओ, वो भी उस लड़के से मिले बिना। योगी सत्य श्री गुरु कहते हैं: "अपनी उंगली हमेशा खुद की ओर उठाओ।" अब चलो...चल पड़ो!'

मैंने कनेक्ट करने का अनुरोध स्वीकार कर लिया।

दो घंटे बाद मुझे जवाब मिला और यहीं से लड्डू की एक और कहानी की शुरुआत हुई।

सुनीत: 'हे लीना, मुझसे जुड़ने का अनुरोध स्वीकार करने के लिए धन्यवाद। आप कैसी हैं?'

मैं: 'मैं ठीक हूँ। आप कैसे हैं?'

सुनीत: 'मैं ठीक हूँ... क्या आप यह बातचीत मोबाइल पर करना चाहेंगे? यह थोड़ा

अधिक सुविधाजनक होगा।'
मैं: 'हम्म...क्यों नहीं?'
जैसे ही हमने अपने नंबर एक्सचेंज किए, व्हाट्सएप पर एक मैसेज आया।
सुनीत: 'अरे, मैं सुनीत हूँ। यहाँ रहना ज़्यादा अच्छा लगता है।'
मैं: "हे सुनीत, लीना बोल रही हूँ। हाँ, मुझे पता है।"
सुनीत: 'लीना, लगता है हम दोनों ही अपने जीवनसाथी की तलाश में हैं और इसी वजह से हम shaadi-ka-laddoo.com पर आए हैं... तो, अपने बारे में कुछ बताओ।'
अगले कुछ संदेशों में भी हमने वही बातें दोहराईं: मैं क्या करता हूँ, मेरा जन्म कहाँ हुआ था, मुझे क्या पसंद है... और दूसरी तरफ से भी इसी तरह के कई सवाल पूछे गए।
सुनीत: 'क्या मैं आपको कॉल कर सकता हूँ? मुझे लगता है कि बात करना सबसे अच्छा है।'
मेरी थकी हुई उंगलियां उनके इस विचार से पूरी तरह सहमत हैं!
दो मिनट बाद हम फोन पर बात कर रहे थे।
'हे लीना, मुझसे बात करने के लिए धन्यवाद।'
धन्यवाद? वह मुझे धन्यवाद क्यों दे रहा है? अरे, क्या तुम ठीक हो?—मैं पूछना चाहती थी, लेकिन इसके बजाय मैंने आभार स्वीकार कर लिया, 'बिल्कुल।'
'तो, आप गुड़गांव में रहते हैं? मेरा परिवार भी वहीं बसा हुआ है।'
'अच्छा, तो क्या आप अक्सर भारत आते हैं?'
'हां, साल में एक बार। दरअसल, पिछले साल मैं दो बार आया था।'
कुछ देर का विराम आया। उसने उस शब्द पर दो बार ज़ोर दिया और उसके बाद मानो कहीं खो गया हो... 'हे सुनीत, सब ठीक है? तुम कहीं खोए हुए से लग रहे हो।'
'शायद सुनने में अटपटा लगे, लेकिन पिछले एक साल में मैं दो बार यहाँ आया और हर बार एक लड़की ने मुझे धोखा दिया। खैर, मुझे बुरा न लगे, लेकिन मैं आपसे पूछना चाहता हूँ कि क्या आप वाकई शादी करके घर बसाना चाहती हैं या सिर्फ़ लड़कों से बातें करके समय बिताना चाहती हैं?' अब वह लगभग फुसफुसा रहा था।
ओह, नहीं! चोट लग गई! मैंने अपना माथा ज़ोर से रगड़ा और एक गहरी, लंबी आह भरी! 'बेशक, मुझे पता है कि मैं क्या चाहती हूँ।'

‘जानते हो, ये दिल्ली की लड़कियाँ तो हद ही पार कर देती हैं! बेशक, मेरा मतलब तुमसे नहीं है जब मैं दिल्ली की लड़कियों की बात कर रही हूँ। उन्हें खुद नहीं पता कि ज़िंदगी में उन्हें क्या चाहिए या शायद कभी-कभी उन्हें अपने इरादों का ज़रूरत से ज़्यादा ही पता होता है, लेकिन हम बेवकूफ लड़के कभी समझ ही नहीं पाते कि वे असल में क्या चाहती हैं। क्या मैं तुमसे कुछ बात करूँ?’

दिल्ली की छोटी और मासूम लड़कियों के बारे में उसने जो कहा, उस पर विरोध जताने के लिए मेरा मुंह लगभग खुल ही गया था, लेकिन फिर मैंने अपना इरादा बदल दिया। भला मुझे किसी अनजान आदमी को दिल्ली की हम लड़कियों की खूबियों और विश्वसनीयता के बारे में क्यों ज्ञान देना चाहिए? और वैसे भी, तकनीकी रूप से, क्या गुड़गांव दिल्ली की सीमा से बाहर नहीं है? इसलिए, प्रतिक्रिया देने की कोई ज़रूरत नहीं है, मैंने खुद से कहा।

इस बीच, उनकी आवाज़ मुश्किल से सुनाई दे रही थी क्योंकि वे उस अनुभव को साझा कर रहे थे जिसने स्पष्ट रूप से उन पर गहरा घाव छोड़ा था। मैंने बहुत ध्यान से सुना और मन ही मन बुदबुदाया: क्या मुझे फिर से किसी की दुख-दर्द बाँटने वाली बनना पड़ेगा?

मैंने बात टालने की कोशिश की। 'लेकिन आप मुझसे अपना निजी अनुभव क्यों साझा करना चाहते हैं? हमने अभी मुश्किल से दस मिनट ही बात की है।'

एक गहरी आह भरने के बाद, उसने आगे कहा, 'आपकी आवाज़ में कुछ खास है... एक सुकून देने वाला प्रभाव... एक आश्वासन जो मुझे महसूस होता है... मुझे लगता है कि मुझे आपको बताना चाहिए... लंबे समय से किसी के साथ ऐसा तुरंत जुड़ाव महसूस नहीं हुआ; आप बहुत दयालु लगती हैं।'

बिंगो! एक और अजीब सा सन्नाटा छा जाता है। 'ठीक है, सुनीत, अगर तुम्हें ऐसा लगता है... तो बोलो!'

कहानी शुरू हुई... मैंने भगवान को एक छोटी सी कृपा के लिए धन्यवाद दिया—कि वह रविवार था!

‘मैं इस लड़की से ऑनलाइन मिला, उसी वैवाहिक वेबसाइट पर जिसने हमें मिलाया। वह बहुत प्यारी और आकर्षक थी... सब कुछ एकदम सही लग रहा था; सब कुछ ठीक होता दिख रहा था। हम हर दिन घंटों बातें करने लगे... सुबह की शुभकामनाएँ और रात की शुभकामनाएँ भेजते... वही रोज़ाना के सवाल होते थे, जैसे तुमने खाना

खाया या नहीं खाया... मैंने उसे बेबी डॉल कहना शुरू कर दिया... और वह मुझे शोना बॉय कहती थी... यह सिलसिला दो महीने तक चला। एक दिन, जब मैंने उससे मिलने के लिए कहा, तो उसने जवाब दिया, "ओह, मेरे शोना बॉय... यह तो बहुत अच्छा विचार है, लेकिन आप लंदन में हैं, मैं दिल्ली में रहती हूँ।" मैंने उससे कहा, "कोई बात नहीं, बेबी डॉल... मैं दिल्ली आ जाऊँगा... चलो कुछ समय साथ बिताते हैं।"'

जब भी वह 'बेबी डॉल' या 'शोना' कहता, मुझे अपने अंदर एक अजीब सी अनुभूति होती... मुझे डर लगता, जैसे मैं अनजाने में ही किसी विचित्र बातचीत में खिंची जा रही हूँ। मेरे मन में ज़रा भी सहानुभूति नहीं थी... फिर भी मैं कोशिश कर रही थी। ऐसी स्थितियों में, पीजी वोडहाउस की रचनाएँ एकदम सटीक शब्दों में सही भावना व्यक्त करने के लिए भरोसेमंद होती हैं। सुनीत की डरावनी कहानी सुनते हुए मैंने गूगल पर कुछ उद्धरण खोजे और अचानक एक मज़ेदार उद्धरण सामने आ गया:

'पुरुष के प्रेम में एक ऐसा पड़ाव आता है जब अगर उसकी प्रेमिका उसे तिरछी नज़रों से भी देख ले तो उसका मन करता है कि वह सिकुड़कर गेंद की तरह बैठ जाए और मिमियाने जैसी आवाज़ें निकाले।' मेरा मन किया कि एक पल के लिए खुद को अलग कर लूँ और ज़ोर से हँस दूँ, लेकिन मेरे भीतर की दया ने मुझे ऐसा करने नहीं दिया।

सुमित ने आगे कहा, "मैं अपनी बेबी डॉल से मिलने के लिए पूरे जोश से अपना सामान पैक कर रहा था... और लीना, मैं तुम्हें बताना चाहता हूँ कि हालाँकि मैं लंदन में बस गया हूँ, लेकिन मैं अपनी पंजाबी जड़ों को नहीं भूला और अपनी बेबी के लिए एक महंगी घड़ी खरीदी। एयरपोर्ट पर हम एक-दूसरे को देखकर बहुत खुश हुए... उफ़, अब जब मैं पीछे मुड़कर देखता हूँ, तो मुझे लगता है कि वह घड़ी देखकर ज़्यादा खुश हुई थी! खैर, उस पल मुझे खुद पर बहुत गर्व महसूस हुआ, क्योंकि वह उपहार देखकर इतनी खुश थी। मैंने एयरपोर्ट पर उससे कहा, "कल मिलते हैं। हम कॉफी पर बैठकर बातें करेंगे..." मेरी बेबी डॉल ने जवाब दिया, "अरे नहीं, शोना... चलो फिल्म देखते हैं और शॉपिंग करने चलते हैं।"

घड़ियों की बात करते-करते मैंने दीवार पर टंगी घड़ी पर नज़र डाली। ऐसा लग रहा था मानो वो उस दिन जानबूझकर धीरे-धीरे चल रही हो। उस एक घंटे में माँ चुपके से कुछ बार अंदर आई, मुस्कुराई और जाते समय दरवाज़ा थोड़ा खुला छोड़ गई। उन्हें नहीं पता था कि मैंने सामने लगे शीशे में उनके आने-जाने को देख लिया था। मैंने तय किया कि अगली बार जब वो मुझे देखने आएँगी, तो मैं उनसे एक कप कॉफ़ी और

कुछ स्वादिष्ट नाश्ता लाने को कहूँगी ताकि मुझे नींद न आ जाए, और ये सिलसिला चलता रहे... जब मैं उनके होने वाले दामाद से बात कर रही थी, तब वो मुझे वो सब कुछ लाकर देंगी जो मैं माँगूँगी, मुझे पता था। मैं सोचने लगी कि क्या माँ से समोसे और मैंगो मिल्कशेक माँगना अच्छा विचार होगा!

इस बीच, मैंने एक भी शब्द नहीं छोड़ा था।

सुनीत ने अपनी परेशानियाँ बयां करते हुए कहा, “अगले दिन, हमने एक फिल्म देखी और हालाँकि मैं थका हुआ था, उसने मुझे जीके 1 और साउथ-एक्स बाजारों के उबाऊ चक्कर लगवाए... मेरा इंटरनेशनल क्रेडिट कार्ड, इतनी ज़्यादा खरीदारी का आदी न होने के कारण, पूरी तरह से थक गया था! उसने परफ्यूम, कपड़े, जूते, मेकअप... और न जाने क्या-क्या खरीदा! मुझे बस उस दिन अपने मोबाइल फोन पर मिला संदेश याद है: आज 300 पाउंड की खरीदारी के लिए आपके क्रेडिट कार्ड का उपयोग करने के लिए धन्यवाद।”

अगले तीन दिनों तक, दिल्ली की उस खूबसूरत लड़की ने खरीदारी करके, महंगे रेस्तरां में खाना खाकर और मुझे उम्मीद भरे आलिंगन देकर मेरे आने का जश्न मनाया। उसके साथ बैठकर हमारी भविष्य की योजनाओं पर बात करने का मेरा विचार धीरे-धीरे धराशायी हो गया।

उह...क्या तुम सुन रही हो, लीना? मुझे माफ़ करना, जब मैंने दिल्ली की लड़कियों को 'स्मार्ट बेब्स' कहा था, तो मेरा मतलब सामान्यीकरण करना नहीं था।

अगले कुछ सेकंड तक सन्नाटा छाया रहा।

‘हेल्लोoooo...क्या तुम वहाँ हो?’ उसने थोड़ा हिचकिचाते हुए पूछा।

मैं थोड़ा थका हुआ था, लेकिन फिर भी पूरी कहानी जानने के लिए उत्सुक और उत्साहित था। मैं यह भी चाहता था कि दिल्ली की लड़कियों के बारे में उसने जिस तरह से बात की, उसके लिए उसे पछतावा हो। मैंने बस इतना कहा, 'हम्म...'

उन्होंने इसे आगे बढ़ने का संकेत समझा और उनकी आवाज़ में मौजूद झिझक पल भर में गायब हो गई। उन्होंने आगे कहा, “चौथे दिन मैंने उन्हें फोन किया और उनसे बात करने का फैसला किया। क्योंकि जब भी हम मिलते थे, उनकी शरमाती निगाहें...मीठी मुस्कान...और पलकों का फड़कना मुझे अवाक कर देता था—दुकानों और रेस्टोरेंटों के लगातार बढ़ते बिलों की तो बात ही छोड़िए। जैसे ही उन्होंने मेरा फोन उठाया, उन्होंने बोलना शुरू किया, “ओह, मेरी शोना, क्या हम आज अशोका होटल में

दुल्हन की प्रदर्शनी देखने जा सकते हैं? मुझे लगता है वहाँ कुछ खास चीज़ें प्रदर्शित की गई हैं।""

मैंने हिम्मत जुटाई और सीधे मुद्दे पर बात करने का फैसला किया। मैंने उससे कहा, "बेबी, क्या तुम्हें नहीं लगता कि हमें पहले अपने भविष्य के बारे में बात करनी चाहिए? चलो एक-दूसरे के परिवारों से मिलते हैं। मुझे भी वापस जाकर काम पर लौटना है।" लेकिन वह इसके लिए तैयार नहीं थी। उसने कहा कि मैं अच्छा लड़का हूँ, लेकिन उसे नहीं लगता कि अभी माता-पिता से मिलने का सही समय है। और फिर... फिर...

मैंने उसे सिसकते हुए सुना। क्या वह रो रहा था? बेचारा... इस दिल दहला देने वाले अनुभव ने उसे पूरी तरह से परेशान कर दिया था। तभी माँ समोसे और इलायची की चाय लेकर कमरे में आईं और उनके चेहरे पर एक प्यारी सी मुस्कान थी... इस पंजाबी एनआरआई लड़के से घंटों बात करने के बाद उनकी उम्मीदें आसमान छू रही थीं! मैंने खुद को याद दिलाया कि आज तो मैं कुछ भी मांग सकता था। उन्होंने मुझे समोसे और उस किस्से का आनंद लेने के लिए छोड़ दिया और मैं असमंजस में था कि किसे प्राथमिकता दूं। मैंने पहले मटर-जीरा-आलू समोसे का एक टुकड़ा खाया और फिर उस बेचारे की परेशानी की ओर मुड़ा। 'क्या तुम ठीक हो? मैं कहती हूँ, रहने दो। तुम्हें उस परेशान करने वाली घटना को याद करने की ज़रूरत नहीं है। इसे भूल जाओ... हम किसी और चीज़ के बारे में बात कर सकते हैं।'

'नहीं...नहीं...नहीं... मैं आप सबको बताना चाहती हूँ। अपना दर्द आप सबके साथ बाँटने से मुझे सुकून मिल रहा है... जब मैंने उससे ज़िद की कि हमें इस मामले को आगे बढ़ाना चाहिए, तो उसने ठीक यही कहा, "देखो, मैं तुम्हें पसंद तो करती हूँ, लेकिन मुझे अभी तक हमारे बीच कोई चिंगारी महसूस नहीं हो रही है। क्यों न हम थोड़ी और बात करें और धीरे-धीरे आगे बढ़ें? साथ ही, मुझे लगता है कि तुम्हें अपने वज़न पर ध्यान देना चाहिए। मुझे तुम मोटी लगती हो! खैर, अब मुझे जाना होगा। अशोका में प्रदर्शनी तो रोज़-रोज़ नहीं होती," और इतना कहकर वह मुझे बुरी तरह से आहत और टूटा हुआ दिल छोड़कर चली गई।'

बुरी तरह से टूटा हुआ शोना अगले दो दिन रूठकर बैठा रहा, फिर लंदन वापस चला गया और अपनी रोज़मर्रा की दिनचर्या में लौट आया—और यह बात उसने सिसकियों के बीच बुदबुदाते हुए बताई। एक खिलती हुई प्रेम कहानी का क्या ही दुखद अंत!

लेकिन अरे! क्या हम 'अंत' पर पहुँच गए हैं? मुझे तो यही लगा था, लेकिन—ज़ाहिर है, कहानी यहीं खत्म नहीं हुई।

'ओह, यह तो बहुत दुखद है! कितना भयानक अंत!' मेरे लहजे में छिपी हल्की-फुल्की बेफिक्री उनके गंभीर समकक्ष की नजरों से नहीं बच पाई होगी।

लेकिन सुनीत ने तुरंत बीच में ही टोकते हुए कहा, 'नहीं...नहीं...बात यहीं खत्म नहीं हुई।'

'क्या? क्या इसमें और भी कुछ है?' मुझे जवाब से डर लग रहा था।

हां, लंदन पहुंचने के बाद मैंने अपनी बेबी डॉल को अनगिनत संदेश भेजे, लेकिन किसी का जवाब नहीं मिला। तीन महीने बाद मैं दिल्ली लौट आया। उन तीन महीनों में मैंने एक क्रैश डाइट शुरू की और शाम को लंदन के एक जिम में जमकर कसरत की। मैंने उसे फ्लाइट का समय और अपने दुबले-पतले रूप में एक सेल्फी भेजी और एयरपोर्ट पर मिलने का अनुरोध किया।

'अच्छा, क्या वह वहाँ थी?' समोसे और चाय ने मुझे ऊर्जा दी थी...लेकिन दिल्ली की उस स्मार्ट लड़की के चतुर व्यवहार ने भी मुझे ऊर्जा दी थी।

हां, वो एयरपोर्ट पर थी। उसने मुझे प्यार से गले लगाया और बोली, "अरे वाह... कोई तो बहुत हॉट लग रहा है! जब मैंने तुम्हारी सेल्फी देखी, तो मुझे यकीन ही नहीं हुआ कि ये मेरा अपना शोना लड़का है!" लेकिन मुझे महसूस हुआ कि उसकी नज़रें कुछ और ही तलाश रही थीं। और मैं, भ्रम में डूबा हुआ, उसे वो हार दे दिया जो मैंने उसके लिए खरीदा था। उसकी आँखें चमक उठीं और उसने मुझे और कसकर गले लगा लिया। उसके मदहोश कर देने वाले भावों ने मुझे उस भ्रम में और भी खुश कर दिया। इस बार उसने अपने परिवार से मिलने की बात शुरू की और मैं खुशी-खुशी मान गया। मैं बहुत खुश था कि सब कुछ सही दिशा में जा रहा है! हमने पूरा दिन खुशी-खुशी शॉपिंग की, घूमने-फिरने गए और खूब मज़ा किया... अगले दिन, मुझे उसके परिवार से मिलना था। उसी रात करीब 11:30 बजे, उसने मुझे मैसेज किया, "मुझे नहीं लगता कि बात आगे बढ़ रही है... मुझे समझ नहीं आ रहा कि मैं क्या चाहती हूँ। चलो इसे रद्द कर देते हैं। अलविदा।" लीना, मुझे यकीन है कि तुम्हारे जैसी दयालु इंसान समझ सकती हो कि मैं कितना टूट गया होगा...

दूसरी तरफ से ज़ोर-ज़ोर से रोने की आवाज़ आ रही थी। एक मासूम शोना लड़के को एक चालाक गुड़िया के हाथों इतना दुख झेलते देखकर, कठोर से कठोर हृदय वाले

व्यक्ति के मन में भी सहानुभूति की लहर दौड़ जाती! इस दूसरे दिल टूटने के बाद, बेचारा शोना लड़का टूटे दिल और बढ़ते क्रेडिट कार्ड बिल के साथ लंदन लौट आया।
'सुनीत, मुझे आपके इस अनुभव के बारे में जानकर बहुत दुख हुआ।'
मूर्ख! मैंने दबी हुई आवाज़ में कहा।
'क्या मैं आपसे कुछ पूछ सकती हूँ, लीना?'
कुछ देर का विराम रहा। जाहिर है मेरी तरफ से... 'हां, आप कर सकते हैं।'
'लड़कियां ऐसा व्यवहार क्यों करती हैं?'
'खैर, मुझे सच में नहीं पता, लेकिन चलो सुनीत... हिम्मत रखो! नए सिरे से शुरुआत करने का समय आ गया है!'
'जी हां, आप सही कह रहे हैं। आपसे बात करके बहुत अच्छा लगा। आपकी धैर्यशीलता और मधुर आवाज की मैं बहुत प्रशंसा करता हूं।'
अब काफी देर हो चुकी है। हम किसी और समय बात करेंगे।
****
एक और अवसर 24 घंटे से भी कम समय में सामने आ गया।
प्रशंसाओं की भरपूर बौछार हुई: आपकी आवाज बहुत मधुर है; आप बहुत संतुलित लगते हैं; मेरी माँ आपसे मिलना पसंद करेंगी...जो भी आपसे शादी करेगा वह बहुत भाग्यशाली होगा, और इसी तरह की बातें।
मैंने अभी-अभी सहानुभूति जताना शुरू ही किया था और तारीफों को थोड़ा-बहुत पसंद भी करने लगा था कि वे पहले से ही बहुत बनावटी और उबाऊ लगने लगीं।
दो दिन बाद:
सुनीत: 'अरे, तुम्हें पता है तुमने पल भर में मेरे मन पर इतनी गहरी छाप छोड़ दी है कि आज सुबह 3 बजे तक मैं तुम्हारे बारे में सोचता रहा और फिर इंटरनेट पर तुम्हारे बारे में खोजबीन की... क्या कहते हो, क्या मैं अगले महीने दिल्ली आऊं?'
आज सुबह 3 बजे मैं तुम्हारे बारे में सोचते हुए जाग उठी—उसके शब्द मेरे कानों में गूंजते रहे और मुझे एक अजीब सी अनुभूति हुई। आखिर उसने सुबह 3 बजे मेरे बारे में क्यों सोचा और इंटरनेट पर मुझे क्यों खोजा? मेरे दिमाग में तरह-तरह के विचार उमड़ने लगे।
उसके बाद से सब कुछ और भी अजीब होता चला गया... संदेश हर समय आते रहते थे और उसकी मीठी-मीठी बातें मुझे हद से ज़्यादा अटपटी लगती थीं। उसकी तरफ से

होने वाली बातचीत में मुझे शामिल करने की कोई कोशिश नहीं होती थी। मुझे एहसास हुआ कि मैंने उससे शायद ही कभी बात की थी। मैं बस दूसरी तरफ एक मूक श्रोता बनकर बैठी थी। एक शाम, जब सुनीत ने फोन किया, और इससे पहले कि वह मेरी कोई और तारीफ करता या दिल्ली का टिकट बुक करता, मैंने विनम्रता से उसे बता दिया कि मैं इस रिश्ते को यहीं खत्म कर रही हूँ।

जैसा कि उम्मीद थी, उसके बाद एक भयानक भावनात्मक विस्फोट हुआ (जो 'आप दिल्ली की लड़कियों' पर लक्षित था), जिसे मैंने धैर्यपूर्वक सहन किया। मैं उसे तकनीकी और भौगोलिक तथ्य से अवगत कराना चाहती थी जिससे स्पष्ट रूप से साबित होता था कि मैं दिल्ली से नहीं हूँ, लेकिन उसने मुझे मौका ही नहीं दिया।

'तुम मेरे साथ ऐसा कैसे कर सकती हो? नहीं, तुम ऐसा नहीं कर सकती; बिलकुल नहीं। मैं तुमसे मिलने के लिए बहुत उत्सुक थी। मैंने तुम्हारे लिए एक उपहार भी खरीदा है। उपहार पर खर्च किए गए पैसों की मुझे कोई शिकायत नहीं है, लेकिन तुम ऐसा नहीं कर सकती... तुम्हें पता है जो भी तुमसे शादी करेगा, वह बहुत भाग्यशाली होगा...'

सिसकियाँ तेज़ होने से पहले ही मैंने फ़ोन काट दिया... इस लड्डू की उदास गुगली गेंदों ने मुझे पूरी तरह से वश में कर लिया था।

एक साहसिक मक्का

मैं लंदन और लेक डिस्ट्रिक्ट घूमने को लेकर बेहद उत्साहित थी। मैंने आखिरकार अपनी बकेट लिस्ट में शामिल पहले दो स्थानों को पूरा करने का पक्का इरादा कर लिया था।

मेरे लिए, बचपन की उन अविस्मरणीय यादों में से एक, जो हमेशा मेरे दिल में बसी रहती है, बीट्रिक्स पॉटर की किताबों के प्रति मेरा आकर्षण था। बच्चों के लिए उन्होंने जो जादुई दुनिया बुनी थी, वह मेरी किशोरावस्था के दौरान हर मुश्किल घड़ी में मेरा सहारा थी। जैसे-जैसे जवानी किशोरावस्था को अलविदा कह रही थी, वर्ड्सवर्थ की 'द डैफोडिल्स', 'द सॉलिटरी रीपर' और अन्य रचनाएँ मुझे मंत्रमुग्ध करती रहीं। स्वाभाविक रूप से, लेक डिस्ट्रिक्ट (लंदन से लगभग पाँच घंटे की दूरी पर) जाना मेरी सबसे बड़ी इच्छा थी—क्योंकि मेरे दोनों सुपरस्टार वहीं के थे। मैं उस हवा में साँस लेना चाहती थी जिसने उनके शब्दों को रंग और जोश से भर दिया था और उस ज़मीन पर चलना चाहती थी जिस पर उनके पदचिह्न पड़े थे। लंदन का भी मेरे दिल में एक

खास स्थान था। इतिहास से उसका जुड़ाव मुझे आकर्षित करता था; और उसकी सुंदरता और आकर्षण (जो मैंने तब तक टीवी पर देखा था) मुझे मोहित कर लेता था। मुझे एक सपना भी बार-बार आता था जिसमें मैं केंसिंग्टन गार्डन्स की हरी-भरी घास पर योगा करती हुई दिखाई देती थी।

'मैं इस गर्मी की छुट्टियों में लंदन और लेक डिस्ट्रिक्ट जा रही हूँ,' मैंने खाने की मेज पर ऐलान किया, हालाँकि मुझे उम्मीद थी कि माँ इस खबर पर घबरा जाएँगी! लेकिन, उन्होंने जब खुशी से 'आहा!' कहा तो मैं दंग रह गई।

मुझे यकीन नहीं था कि यह उसकी असली और अंतिम प्रतिक्रिया थी या वह हथियारों से लैस होने के लिए समय बिता रही थी।

'क्या! आपको इससे कोई आपत्ति नहीं है? मैं आपको बता दूं कि मैं यह यात्रा अकेले ही करने जा रही हूं, किसी "केवल महिलाओं" वाले समूह में नहीं जाऊंगी और हिम्मत मत करना कि आप हमारे किसी भी रिश्तेदार को मेरे साथ आने के लिए कहें। और मैं आपको यह भी बता दूं कि मैं पूरे दो सप्ताह आराम करना चाहती हूं।' मैंने आसपास बैठे तीनों चेहरों—मां, पापा और शौर्य—की ओर उत्सुकता से देखा। बेशक, अगले ही पल मुझे तीन अलग-अलग प्रतिक्रियाएं मिलीं—इतनी अलग कि मुझे यह बताने की भी जरूरत नहीं है कि किसने क्या कहा।

पहली प्रतिक्रिया: 'वाह! आपकी छुट्टियाँ कितनी शानदार होंगी! आखिरकार आप अपने सपनों और इच्छाओं के बारे में सोच रहे हैं... वैसे, आप मेरे लिए क्या लाएँगे?'

दूसरी प्रतिक्रिया: 'ठीक है, अगर आपने पहले ही अपना मन बना लिया है तो हम क्या कह सकते हैं? वैसे, अगर आपने मुझे भी अपने साथ शामिल होने के लिए कहा होता तो अच्छा होता।'

प्रतिक्रिया 3: 'मैं खुश हूँ, बेटा... तुम्हें आराम की ज़रूरत है और तुम्हारी एक बड़ी इच्छा भी पूरी हो रही है। अगर तुम्हें किसी चीज़ की ज़रूरत हो, तो मुझे ज़रूर बताना। मैं तुम्हारे लिए एक अतिरिक्त क्रेडिट कार्ड का इंतज़ाम कर दूँगा, एहतियात के तौर पर...।'

*****

चेहरे पर हल्की सी मुस्कान और पेट में गुदगुदी लिए मैं उत्साह से खरीदारी और पैकिंग करने लगी। वर्ड्सवर्थ की डोव कॉटेज में कदम रखना हमेशा से उन दूर के सपनों में से एक था, जिनके सच होने की उम्मीद कोई नहीं करता। आखिर, मेरी

आमदनी सीमित थी और जीवन सरल था। मेरे सपने मुझे परेशान नहीं करते थे, बल्कि मुझे आनंदित करते थे। सपने देखने के बाद भी मैं खुश रहती थी और असल दुनिया में कदम रखते हुए मैंने कोई आह नहीं भरी। अपने सपनों को साकार करने के लिए कभी संघर्ष न करना बुद्धिमानी थी या नहीं, यह मैं नहीं जानती। मेरे सपनों ने मुझे कभी परेशान नहीं किया; कभी रातों की नींद नहीं उड़ाई। बल्कि, अपने सपनों के बारे में दिन में सपने देखने के बाद मुझे ठीक से नींद नहीं आती थी...

जीवन अच्छा चल रहा था। मैं संतुष्ट थी और शाम को अलग-अलग पृष्ठभूमि के विद्यार्थियों के साथ योग सत्रों का भरपूर आनंद ले रही थी। उनमें वरिष्ठ नागरिक भी थे, गर्भवती महिलाएं भी थीं और नन्हे-मुन्नों को पढ़ाना तो वाकई बहुत सुखद था! पिछले कुछ महीनों में चिराग से मेरा नियमित संपर्क बना रहा, जो लगभग मेरा अच्छा दोस्त बन चुका था। हम ईमेल के ज़रिए बातचीत करते थे, हालांकि हमारी बातचीत ज़्यादातर सामाजिक, शैक्षिक, औद्योगिक या राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय मामलों से संबंधित होती थी। कभी-कभी हम कोई नया विचार साझा करते थे, या बस औपचारिक बातें करते थे, और कभी-कभी विद्यार्थियों को विशेषज्ञ सलाह या ज्ञानवर्धक सुझाव की ज़रूरत पड़ने पर मैं उससे परामर्श लेती थी। हम कभी निजी मामलों पर चर्चा नहीं करते थे, लेकिन कई बार तो मेरी जिज्ञासा भी बेकाबू हो जाती थी।

माँ की मुझे शादी के ज़रिए फिर से बसाने की लगातार कोशिशों से मैं अक्सर घबरा जाती थी। अब जब मैंने हार मानकर shaadi-ka-laddoo.com पर अपना नाम रजिस्टर करवा लिया था, तो उनके कदमों में एक नई चमक आ गई थी। पहले की कोशिशें नाकाम होने के बावजूद उनका हौसला बुलंद था। कभी मैं मन ही मन बड़बड़ाती, कभी थोड़ा गुस्सा करती, लेकिन माँ के कहे प्रस्तावों को देखती रहती। हालांकि, इस बार मैंने उनसे यह बात छुपा ली थी कि साइट पर प्रोफाइल देखते हुए मुझे एक लड़का दिलचस्प लगा था और मैं उससे बात कर रही थी। संयोग से, वह लंदन में रहता था। क्या लंदन जाने की यह इच्छा महज़ एक संयोग थी?

*****

शोना-बेबी डॉल घटना के एक महीने बाद, सौरभ की दिलचस्प प्रोफ़ाइल ने मेरा ध्यान खींचा। मेरी पहली प्रतिक्रिया थी: वाह, कितना सुंदर है! हालाँकि मैंने कभी भी रूप-रंग को लेकर कोई छवि नहीं बनाई थी, लेकिन मुझे यह स्वीकार करना होगा कि सौरभ

की प्रोफ़ाइल तस्वीर देखते ही मैं उसकी ओर आकर्षित हो गई। क्या यह इसलिए है क्योंकि वह मुझसे लगभग छह साल बड़ा है? क्या उसकी तस्वीर में आत्मविश्वास झलक रहा है और क्या यही मैं पुरुषों में खोज रही हूँ? या फिर उसकी मासूम मुस्कान और गालों के डिंपल ने मुझे मोहित कर लिया है? उसका शरीर सुगठित था, उसकी लंबाई 5 फीट 9 इंच थी और उसका चेहरा एकदम तराशा हुआ था।

वह लंदन में अकेले रहते थे, जबकि उनके माता-पिता और बहन कनाडा में बसे हुए थे। वह एक मैनेजमेंट कंसल्टेंट थे और एक बहुराष्ट्रीय कंपनी में काफी ऊंचे पद पर थे। वह योगाभ्यास भी करते थे और कर्म के दर्शन में विश्वास रखते थे। शुरुआत में मैंने थोड़ा संशय दिखाया। मैं बहुत अधिक उम्मीदें लगाकर किसी बात में कूदना नहीं चाहता था, कहीं बाद में पछता न जाऊं।

हमारी शुरुआती बातचीत में सौरभ बेहद विनम्र, संवेदनशील और परिपक्व लग रहा था। धीरे-धीरे मुझे उसके साथ घंटों सहजता से बातें करने का मन होने लगा। हम खुलकर हँसते थे और दिनभर के अपने जीवन से जुड़े लगभग हर विषय पर चर्चा करते थे। वह काफी पढ़ा-लिखा व्यक्ति था और उसके विचार भी काफी विकसित प्रतीत होते थे। मैंने उससे उसके अविवाहित होने का कारण नहीं पूछा, हालाँकि मैंने उसे अपनी असफल शादी के बारे में सब कुछ बता दिया था।

लगभग दो महीने पहले, हमने आखिरकार मिलने की आपसी इच्छा व्यक्त की थी।

एक दिन सौरभ ने हंसमुख अंदाज में अचानक कहा, 'अरे, तुम लंदन क्यों नहीं आ जाते? वैसे भी तुम्हें शहर घूमने का बहुत शौक लगता है, है ना?'

मैं चौंक गया, लेकिन उसकी तरह मैंने भी हल्के-फुल्के अंदाज़ में जवाब दिया, 'वाह! यह तो बहुत बढ़िया होगा, है ना? क्या आप वाकई चाहते हैं कि मैं आऊं? क्योंकि, शायद मैं आ ही जाऊं...।'

'बिल्कुल, हाँ... मुझे पूरा यकीन है। आप किसी अच्छे ट्रैवल एजेंट से टिकट और वीजा के बारे में क्यों नहीं पता कर लेते? चलिए मिलते हैं और इस रिश्ते को आगे बढ़ाते हैं,' सौरभ पहले से कहीं अधिक आत्मविश्वास से भरा हुआ लग रहा था।

अगले दो दिनों तक मैं लंदन और लेक डिस्ट्रिक्ट जाने के विचार पर सोचती रही—इसके हर फायदे और नुकसान का जायज़ा लेती रही। सौभाग्य से, मैं मम्मी-पापा को खुलकर नहीं बता सकी कि इस यात्रा का एक कारण ऑनलाइन मिले एक लड़के से मिलना भी था। बेशक, ये दोनों जगहें मेरी सबसे पसंदीदा जगहों में से थीं... दृढ़

निश्चय के साथ, मैंने जोखिम उठाने और यह जानने का फैसला किया कि जीवन में मेरे लिए क्या लिखा है।

सब कुछ इतनी तेजी से हो रहा था कि मुझे कभी-कभी चक्कर आने लगता था। मैं उत्साहित थी, फिर भी बीच-बीच में डर भी सता रहा था। क्या मैं सही कर रही हूँ? क्या मुझे किसी अजनबी से मिलने के लिए इतनी दूर जाना चाहिए? मैं अक्सर यही सोचती थी।

किसी भरोसेमंद व्यक्ति को जानकारी देते रहने के लिए, मैंने चिराग को अपनी यात्रा योजनाओं के बारे में लिखने का फैसला किया। मुझे पता था कि वह मुझसे क्यों और कैसे नहीं पूछेगा; असल में, वह कुछ भी नहीं पूछेगा। मैंने उसे एक ईमेल लिखा, जिसमें मैंने उसे बताया कि मैं बताई गई तारीखों पर यूके में रहूँगा। मैंने उससे विनम्रतापूर्वक पूछा कि क्या वह उस समय यूरोप में होगा और क्या मिलना संभव होगा। चिराग ने उत्साहपूर्वक जवाब दिया और मुझे अपने सपने को पूरा करने के लिए प्रोत्साहित किया। हालांकि, उसने खेद व्यक्त किया कि वह उस दौरान शंघाई में रहेगा। मैंने उसे यात्रा का असली कारण नहीं बताया था, इस बात ने मुझे कई घंटों तक असहज कर दिया। मैंने उसके साथ ईमानदार रहने का फैसला किया। हालांकि, मैंने तब तक उसे अपनी निजी जानकारी नहीं दी थी। इसके परिणामस्वरूप व्हाट्सएप पर कई संदेश डिलीट हो गए।

अगली सुबह जब चिराग का फोन आया, तब तक मेरी दुविधा बढ़ती ही जा रही थी। हल्की-हल्की बूंदा-बांदी हो रही थी और मैं आरामकुर्सी पर चाय की चुस्की लेते हुए मजे कर रही थी। मम्मी-पापा सुबह जल्दी ही मामा के घर कीर्तन के लिए निकल गए थे। शौर्य कॉलेज के लिए रवाना हो चुका था।

'लीना, क्या मैं पूछ सकती हूँ कि क्या कोई बात है? क्या तुम बात करना चाहती हो?'

नहीं, बात बस इतनी सी है कि... मुझे... मुझे नहीं पता कि क्या कहूँ और कहाँ से शुरू करूँ।'

‘क्या हुआ? क्या तुम ठीक हो? कल तो तुम अपने सपनों में से एक को पूरा करने की संभावना से काफी खुश लग रही थी।’

'हां, मैं अब बहुत खुश हूं क्योंकि मेरे पास आगे देखने के लिए अनमोल पल और यादें हैं। बस बात यह है कि इसमें और भी बहुत कुछ है जो मैंने आपको नहीं बताया है।'

क्या आप साझा करना चाहेंगे?

और मैंने उन्हें अपने निजी जीवन की पूरी कहानी सुनाई। उन्होंने बड़ी समझदारी से सुना और सही समय पर सहानुभूति भरे सुझाव दिए। मुझे पहले कभी इतना हल्का और राहत महसूस नहीं हुई थी। उन्होंने मेरा न्याय नहीं किया, बल्कि मुझे जीवन में किसी भी बात को ज़रूरत से ज़्यादा गंभीरता से न लेने की सलाह दी। उनका लोगों और जीवन के प्रति एक विनोदी दृष्टिकोण था; उन्होंने कहा कि दर्शक का नज़रिया अक्सर आदर्श होता है। जब मैंने उन्हें shaadi-ka-laddoo.com पर अपने अनुभवों के बारे में बताना समाप्त किया, तब तक हम दोनों दिल खोलकर हंस चुके थे।

जीवन के किसी भी मोड़ पर एक सच्चा और निष्पक्ष मित्र मिलना, जो हमें बिना शर्त स्वीकार करे, स्वर्ग से मिली अप्रत्याशित दौलत के समान है! मैंने ऊपर देखा और इस अप्रत्याशित लाभ के लिए ईश्वर का धन्यवाद किया।

*****

घर पर सबको खुशखबरी सुनाने के बाद और मेरे जाने से दो हफ्ते पहले, जब मैंने सौरभ को यह खुशखबरी देने के लिए फोन किया कि मैंने अपनी टिकटें बुक कर ली हैं, तो दूसरी तरफ अजीब सी खामोशी छा गई।

मैं उस समय बहुत उत्साहित (या मूर्ख?) था, इसलिए मैंने ध्यान नहीं दिया कि उसने सावधानीपूर्वक जवाब देने से पहले कुछ मिनट का समय लिया और फिर धीरे से कहा, 'ओह, क्या सच में? आप कब आ रहे हैं? आपने अचानक ही क्यों फैसला कर लिया? आपने तो बताया ही नहीं! हम इस बारे में साथ में बात कर सकते थे।'

जब वह बोल रहा था तो मुझे उसकी आवाज में जरा भी झिझक या हल्की झुंझलाहट महसूस नहीं हुई। मैंने सवालों की बौछार को उसकी हैरानी का संकेत समझा था।

मैंने उसे फ्लाइट की जानकारी मैसेज से भेजी और अपनी तैयारियों में जुट गई। मैंने उसके लिए उपहार ले जाने के बारे में काफी देर तक सोचा। कुछ विकल्पों पर विचार करने और फिर उन्हें खारिज करने के बाद, मैंने अंत में दो किताबें चुनीं—एक कविता पर और दूसरी दर्शन पर।

मेरे जाने से दो दिन पहले, मुझे यह बात थोड़ी अजीब लगी कि सौरभ ने एक हफ्ते से ज़्यादा समय से न तो मुझे कॉल किया था और न ही मेरे मैसेज का जवाब दिया था। शुरू में मैंने उसके इस अजीब व्यवहार पर ध्यान नहीं दिया था। पिछले दो महीनों से हम हर रोज़ चैट कर रहे थे। जब उसकी तरफ से कोई जवाब नहीं आया, तो मेरा दिल

एक पल के लिए ज़ोर से धड़कने लगा। कहीं ऐसा तो नहीं... अचानक डर के कई ख्याल मेरे मन में उमड़ आए। अगले ही पल, मैंने अपना सिर हिलाकर उन सभी को मन से निकाल दिया। नहीं, ऐसा नहीं हो सकता... नहीं, चिंता की कोई बात नहीं है... मैं उसे अच्छी तरह जानती हूँ। वह काम में व्यस्त होगा—मैंने खुद को समझाया और अपनी टू-डू लिस्ट पर ध्यान देने का फैसला किया।

फ्लाइट में चढ़ने से ठीक पहले सौरभ ने सिर्फ एक बार फोन किया था। मैं ज़्यादा सतर्क थी और मैंने गौर किया कि वो अपने सामान्य स्वभाव में नहीं था। मैं उलझन में थी। मेरे दिमाग में तरह-तरह के विचार उमड़ रहे थे: क्या वो ठंडा पड़ गया था या काम के दबाव से थका हुआ था? वो उत्साहित क्यों नहीं था? खैर, नहीं... शायद वो अपने मन की बात ठीक से कह नहीं पा रहा है। ज़ाहिर है, वो भी इंतज़ार कर रहा होगा। हम कब तक सिर्फ ऑनलाइन चैट करते रहे? शायद वो घबरा गया है। लड़के घबराते ही हैं, है ना? सब ठीक हो जाएगा, जब हम मिलेंगे।

*****

मैंने फ्लाइट पकड़ी और स्थानीय समयानुसार रात करीब 9 बजे हीथ्रो एयरपोर्ट पहुंची। मैंने उसे दो महीने से हर दिन वीडियो चैट पर लाइव देखा था, इसलिए मुझे पूरा यकीन था कि उसे ढूंढने में मुझे कोई खास मेहनत नहीं करनी पड़ेगी। मेरी आंखें उस जाने-पहचाने चेहरे को ढूंढ रही थीं, पहले उत्सुकता से, फिर बेचैनी से और अंत में, दिल डूबते हुए—मेरी निगाहें तलाशती रहीं। नहीं, वह यहां नहीं है, मेरी थकी हुई आत्मा ने कहा। मैं यात्रा के दौरान प्रार्थना कर रही थी कि मुझे कोई झटका न लगे। और फिर भी, पहला झटका लग ही गया—मैंने अपना सिर हिलाया और टर्मिनल से बाहर निकल गई।

मुझे बहुत खुशी है कि मैंने अपना पूरा यात्रा कार्यक्रम तैयार कर लिया है और मेरी कोई भी बड़ी योजना गड़बड़ नहीं होगी। मैं उपहार किसी योग्य व्यक्ति को दे दूंगी। मैंने होटल बुक कर लिया है और हाँ, मैं अपने बाकी के दौरे का भी पूरा आनंद उठाऊंगी, मैंने हिम्मत दिखाने की कोशिश की।

मुझे पूरा यकीन था कि सौरभ मुझे सबसे पहले उत्साह से अपने अपार्टमेंट ले जाएगा और जेट लैग के बावजूद हम घंटों बातें करेंगे। मैंने कल्पना की थी कि उसके अपार्टमेंट में मेरे लिए बढ़िया खाना तैयार होगा। उस रात मुझे नींद नहीं आई। मैं जागती रही, सोचती रही कि आखिर सब क्या होगा और आगे क्या होगा। अगली सुबह, मैंने अपना

सामान खोला और घर पर कुछ फोन किए। मैंने चिराग को भी फोन किया। लेकिन मैंने सौरभ को फोन नहीं किया। उसे सारी जानकारी है, फिर भी अगर वह इतनी बुरी तरह पीछे हट जाता है और न तो एयरपोर्ट आता है और न ही होटल, तो ठीक है—मैंने दृढ़ निश्चय के साथ शीशे में देखते हुए कहा।

फोन की घंटी बजी और मेरी धड़कनें तेज़ हो गईं। स्क्रीन पर सौरभ का नंबर दिख रहा था। क्या मुझे कॉल उठानी चाहिए? या कल उसने जिस तरह से मुझे नज़रअंदाज़ किया था, उसे अनदेखा करके एयरपोर्ट न आने की बात को नज़रअंदाज़ कर देना चाहिए?

मैंने कहा, 'हैलो।'

'हैलो, आप कैसे हैं? आपकी उड़ान कैसी रही?'

फोन पटक देने की तीव्र इच्छा और सब कुछ भूलकर ऐसा दिखावा करने की चाहत के बीच मैं बुरी तरह उलझ गई थी जैसे कुछ हुआ ही न हो। उसका एयरपोर्ट न आना कोई बड़ी बात तो नहीं है, है ना? मुझे समझ नहीं आ रहा था कि क्या कहूँ। इसके बाद कुछ देर तक असहज सन्नाटा छाया रहा।

'तुम्हें यहाँ अचानक नहीं आना चाहिए था। तुमने मुझसे सलाह भी नहीं ली। क्या एक सभ्य लड़की को ऐसे ही व्यवहार करना चाहिए? किसी अजनबी से मिलने के लिए इतनी दूर आना कितना बेतुका है? क्या तुम्हें यह ख्याल नहीं आया कि मैं व्यस्त हो सकता हूँ और तुम्हारे साथ समय बिताने का समय न हो?' सौरभ ने चिढ़कर कहा।

मैं स्तब्ध रह गई। उनके इस तरह के मौखिक हमले के लिए मैं बिलकुल भी तैयार नहीं थी। मैंने कुर्सी पर ज़ोर से हाथ पटका। सौरभ मुझ पर बरसता रहा और मुझ पर अमीर लड़कों के पीछे भागने की आम भारतीय मानसिकता रखने का आरोप लगाया, ताकि मैं विदेश में बस सकूँ। उसने साफ-साफ शब्दों में बताया कि मैं कितनी अपरिपक्व हूँ। मेरी आँखों से आँसू बह रहे थे... सिसकियाँ मेरे गले से निकल ही गईं, हालाँकि मैंने उन्हें रोकने की पूरी कोशिश की थी। अगले ही पल, वह धीरे से कुछ बुदबुदाते हुए मुझे शांत होने के लिए कह रहा था। मुझे अपने कानों पर विश्वास नहीं हो रहा था। वह मुझसे माफ़ी माँग रहा था, और उसकी आवाज़ उतनी ही सौम्य और मधुर थी जितनी हमारी ऑनलाइन चैट में होती थी। मैं आँखें फाड़कर बैठी रही, समझ नहीं पा रही थी कि आखिर हो क्या रहा है।

मैं असमंजस में थी, फिर भी मैंने हिम्मत दिखाने का फैसला किया। मैंने मुस्कुरा दिया

और हम अनौपचारिक रूप से कुछ अनसुलझे विषयों पर बातें करते रहे। हम दोनों में से किसी ने भी मिलने के बारे में एक शब्द भी नहीं कहा।

मैंने अपने होटल के पास फैले विशाल हाइड पार्क में लंबी, बिना किसी मकसद की सैर की। जब मैं होटल लौटी, तो मैं बहुत थकी हुई और परेशान थी। उस रात भी मुझे नींद नहीं आई। मेरे दिमाग में तरह-तरह के विचार उमड़ रहे थे: मेरे साथ क्या हो रहा है? अब मैं क्या करूँ? वह इतना अजीब व्यवहार क्यों कर रहा है? वह पहले तो बहुत मिलनसार था और मुझमें भी उतनी ही दिलचस्पी रखता था... क्या वह रिश्ते में बंधने से डर रहा है, इसलिए पीछे हट रहा है या वह मुझे डराने की कोशिश कर रहा है? क्यों?

मैंने उसके व्यवहार के लिए हर तरह के स्पष्टीकरण देने की कोशिश की, लेकिन कोई भी स्पष्टीकरण तर्कसंगत नहीं लगा।

*****

अगले दिन, मैंने होटल के हेल्प डेस्क से कुछ टिप्स लिए और अकेले ही शहर घूमने निकल पड़ी। सुबह तड़के ही मैंने तय कर लिया था कि इस ट्रिप के लिए मैंने अपनी सारी बचत खर्च कर दी है, इसलिए मैं किसी को भी इसे बर्बाद नहीं करने दूंगी। सौरभ से बात करते हुए मुझे वो अच्छा लगा, लेकिन अगर वो अपने वादों से मुकर जाता तो मेरे पास कोई चारा नहीं था। मैंने हॉप ऑन-हॉप ऑफ बस टूर का टिकट खरीदा और पूरा दिन इतिहास में डूबे मनमोहक नज़ारों को निहारने में बिताया। ऐसा लग रहा था मानो हर इमारत और हर कोने में एक गौरवशाली अतीत छिपा हो। मैं बहुत उत्साहित थी और हर पल को अपनी यादों में संजोना चाहती थी। मैंने जॉर्जियन और विक्टोरियन वास्तुकला और उन मजबूत इमारतों को देखकर आश्चर्यचकित रह गई, जिन्होंने कई बार अविश्वसनीय उथल-पुथल और विनाश देखा था; कई तरह के व्यंजनों वाले फास्ट-फूड जॉइंट्स को देखकर मैं दंग रह गई; स्वादिष्ट आइसक्रीम के अलग-अलग फ्लेवर चखे; और लगभग हर बस स्टॉप पर उतरकर उस जगह को देखा और फिर से बस में चढ़ गई...

शाम करीब छह बजे मेरा फोन बजा। सौरभ का फोन था। एक पल के लिए मैं हिचकिचाई, लेकिन आखिरकार मैंने फोन उठा लिया। वह विनम्र थे और उन्होंने मुझसे पूछा कि मेरा दिन कैसा बीता। मैंने सामान्य लहजे में कहा कि दिन यादगार रहा। मुझे डर था कि कहीं वह मुझसे मिलने के लिए न कहें, लेकिन उन्होंने मुझे उस दुविधा से

बचा लिया। उन्होंने मुझसे मेरी यात्रा की योजना के बारे में कोई जानकारी नहीं पूछी। मैंने विनम्रतापूर्वक उनका हालचाल पूछने के लिए धन्यवाद किया और उन्हें शुभ रात्रि कहा।

****

नींद न आने की वजह से मेरी हालत खराब हो रही थी; मैं ठीक से सोच भी नहीं पा रही थी। मुझे यकीन था कि वह जानबूझकर अपने उदासीन और बदतमीजी भरे शब्दों से मुझे दूर धकेलने की कोशिश कर रहा है। वह जानबूझकर मेरे साथ बदतमीजी कर रहा है... भाड़ में जाए वो! मैंने पहले सोने का फैसला किया और फिर सुबह उठकर आगे क्या करना है, इस बारे में सोचूंगी।

सुबह करीब दस बजे लगातार बज रही फोन की घंटी से मेरी नींद खुली। मैंने आलस से कंबल से बाहर निकलकर अपना मोबाइल फोन देखा। फिर से वही था। वह क्यों फोन कर रहा है? मैंने बेमन से फोन उठाया।

'अरे, नींद में डूबे पक्षी। क्या कर रहे हो?' सौरभ की आवाज दूसरे हाथ से सुनाई दी।

मुझे अब भी यकीन नहीं था और मैंने धीरे से कहा, 'माफ़ कीजिए?'

'जी हां... मैं आपसे ही बात कर रहा हूं। आज मेरी छुट्टी है और मैं आपकी सेवा में हाजिर रहना चाहता हूं,' सौरभ ने कहा।

असमंजस! 'यह आपकी मेहरबानी है, सौरभ, लेकिन मैं शहर को अपने आप ही घूम लूंगी... मैं आपकी छुट्टी के दिन आपको परेशान नहीं करना चाहती।'

मुझे बहुत खुशी हुई! चलो, तैयार हो जाओ... मैं आधे घंटे में वहाँ पहुँच जाऊँगा।

और ऐसा कहकर सौरभ ने कॉल काट दिया।

अनिच्छा से ही सही, मैं उठी और तैयार होने लगी—मेरे मन में गहरी उलझन छाई हुई थी। मैंने कैजुअल कपड़े पहने और लॉबी में उसका इंतज़ार करने का फैसला किया। अगले ही पल, मेरा दिल ज़ोर से मुझे उससे न मिलने के लिए कह रहा था। इससे पहले कि मेरा दिल पिघल पाता, मैंने उसे फोन किया और विनम्रता से उसे अपनी इच्छा बता दी कि मैं उससे नहीं मिलना चाहती।

मुझे ऐसा लगता है कि मैं अब आपको पहचान ही नहीं पा रही हूँ। आपके व्यवहार से मैं बहुत दुखी हूँ। मैं आपके इस अभद्र रूप से दोबारा नहीं मिलना चाहती। आपके दो फोन कॉल के लिए धन्यवाद और आपके उज्ज्वल भविष्य की कामना करती हूँ।

'अरे बेवकूफ भारतीय!' उसने रिसीवर पर चिल्लाते हुए कहा। 'तुम्हें बात करने या

व्यवहार करने का तरीका बिल्कुल नहीं आता। इसका क्या मतलब है? क्या तुम्हें लगता है कि भारत के लड़कों की तरह मैं तुमसे मिलने के लिए गिड़गिड़ाऊंगा? जब तुमने उत्साह से हंसते हुए मुझे बताया था कि तुमने यहां आने का फैसला कर लिया है, तब से मैं तुम्हारे पागलपन भरे व्यवहार को बर्दाश्त करने की कोशिश कर रहा हूं। अगर कोई और होता, तो मैं तुम्हें एक बार भी फोन नहीं करता। देखो, मैं तुम्हारे साथ विनम्रता से पेश आने की कोशिश कर रहा हूं, लेकिन तुम भारतीय लड़कियां—तुम बस किसी अमेरिकी या ब्रिटिश पासपोर्ट धारक की तलाश में रहती हो और एक बार मिल जाए, तो अपनी किस्मत पर काबू नहीं रख पाती हो।'

मैं उसकी इस बकवास को सुनकर स्तब्ध रह गया। उस पल मेरा मन किया कि मैं उसके सामने खड़ा होकर उसे ज़ोरदार थप्पड़ मारूँ या ज़मीन में धंस जाऊँ। वह ऐसे बोल रहा था मानो उस पर किसी अलौकिक शक्ति का कब्ज़ा हो गया हो।

ये शब्द मेरे दिल को छलनी कर रहे थे। ज़िंदगी में मुझे कभी इतना अपमानित नहीं होना पड़ा था। 'जब से हमने बात करना शुरू किया है, तुम मुझे चिढ़ा रही हो। तुम भारतीय लड़कियाँ ज़रा भी ध्यान देने लायक नहीं हो, क्योंकि तुम इसका गलत इस्तेमाल करती हो। न तो तुम संस्कारी हो, न ही तुम्हें पता है कि जिससे अभी-अभी बात शुरू की है, उससे कैसे आगे बढ़ना है। मैंने सोचा था कि तुम एक अच्छी लड़की हो, लेकिन मैं गलत था।' और बड़बड़ाते हुए उसने गुस्से में फोन काट दिया।

उस दिन और रात भर मैं सुन्न और सदमे में रही। सुबह तड़के, मैंने एक कप चाय बनाई और खिड़की पर बैठकर रात के अंधेरे को चीरते हुए भोर का इंतज़ार करने लगी। खिड़की से टेम्स नदी का खूबसूरत नज़ारा दिख रहा था। चाय की चुस्की लेते हुए मेरा मन उथल-पुथल में था। मैं यहाँ घर से हज़ारों मील दूर बैठी हूँ—बिल्कुल अकेली और इस पूरी घटना से मुझे क्या सीख मिलनी चाहिए, यह मुझे पता नहीं, मैं सोचती रही। मैं यह मानने को तैयार नहीं थी कि वह मुझे पसंद नहीं करता। वह करता था, और मैं जानती थी। अगर मैंने उसकी भावनाओं को न समझा होता, तो मैं इतनी दूर आने का फैसला कभी न करती। शायद उसे कुछ मनोवैज्ञानिक समस्याएँ हैं और वह किसी को अपने जीवन में आने देने के ख्याल से ही कांप जाता है। मेरे अंतर्मन ने मुझे यही संकेत दिया कि शायद यही उसके इस अजीब व्यवहार का कारण हो सकता है। पल भर में, मुझे लगा जैसे धुंध छट गई हो।

अगले ही पल, भयानक विचार मुझे जकड़ लेते हैं: क्या होता अगर वह मेरे सामने

बनावटी व्यवहार करता रहता? अगर वह हमेशा मीठा व्यवहार करता, तो कुछ ही महीनों में हमारी शादी हो जाती। और, क्या होता अगर तब उसका असली रूप मेरे सामने आ जाता? मैं डर के मारे सीधी बैठ गई। क्या यह एक आशीर्वाद नहीं है कि उसकी उलझनें, असुरक्षाएँ और कमज़ोरियाँ मेरे सामने समय रहते आ गई हैं? मैंने खिड़की से बाहर झाँका और आकाश की ओर देखा। हाँ, ईश्वर महान है! प्रेम ने मुझे पंख दिए... मैं उस जगह पहुँच गई हूँ जहाँ मैं हमेशा से जाना चाहती थी और अपने सपने को जी रही हूँ।

मुझे वह पसंद आया, और मैं आगे बढ़ी। शायद उसे भी मैं पसंद आई थी, इसलिए वह पीछे हट रहा है, मैंने मन ही मन व्यंग्य से कहा, जैसे ही भोर की पहली किरण लंदन के खूबसूरत क्षितिज को भेदने लगी।

'तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई?'

लंदन से लौटते समय मेरे मन में खुशी, उत्साह और निराशा से भरी राहत की मिली-जुली भावनाएँ थीं। दूल्हे की तलाश में मेरी एक गहरी इच्छा पूरी हो गई थी। मैंने मीलों पैदल चलकर प्रकृति की सुंदरता और शांति का आनंद लिया। अब तक मैंने केवल वर्ड्सवर्थ की ये पंक्तियाँ पढ़ी थीं: मैं बादल की तरह अकेला भटकता रहा, लेकिन जब मैं वहाँ था, तो मैं उन भावनाओं को महसूस कर सकता था और जी सकता था जो उन्होंने महसूस की होंगी, क्योंकि यह लेक डिस्ट्रिक्ट की सर्वोत्कृष्ट कविता है। राजसी पहाड़ों और मनमोहक झीलों ने मुझे मंत्रमुग्ध कर दिया था। भले ही सौरभ से मुलाकात ने मेरी आँखों में आँसू ला दिए हों और मुँह में कड़वाहट भर दी हो, लेकिन विंडरमेयर और ग्रासमेयर में बिताए बाकी दिनों का रोमांच और होमस्टे में मिले हंसमुख लोग और मुझे रास्ता दिखाने वाले टूर गाइडों ने पूरे अनुभव को अविश्वसनीय बना दिया। मैं शांत और खुश होकर घर लौटा।

फिर भी, कुछ पल ऐसे भी थे जब मुझे बहुत चिड़चिड़ाहट महसूस हुई। हालांकि, जब भी मुझे लंदन में फोन पर हुई बातचीत और सौरभ के साथ आगे बढ़ने पर हालात कितने बदतर हो सकते थे, ये सब याद आता, तो मैं बहुत बेचैन हो जाती थी। लौटते ही मैंने चिराग को वहां हुई सारी बातें बता दीं। वह हैरान, सहानुभूतिपूर्ण और अंत में राहत महसूस कर रहा था। फिर भी, मैं अपने मन का बोझ पूरी तरह से नहीं उतार पाई थी। क्या ऐसा दूसरों के साथ भी होता है? या मैं ही अकेली ऐसी हूं?

कुछ दिनों तो मुझ पर चिड़चिड़ापन इतना हावी हो जाता था कि मैं चिराग को

व्हाट्सएप पर आंसू से भीगा हुआ चेहरा वाला इमोजी भेज देती थी।
मैं: 'हैलो ☹'
चिराग: 'अरे लीना, क्या हुआ? यह चेहरा तुम्हारा नहीं है!'
मैं: 'अच्छा, जब भी मुस्कुराने और शिकायत करने के बीच चुनाव करना होता है, तो कई बार मैं शिकायत करना ही चुनता हूँ, खासकर उनके साथ जिनके सामने दिखावा करने की ज़रूरत नहीं होती... क्या मैं गलत हूँ? क्या मुझे हमेशा यही सोचना चाहिए कि तुम या कोई और दोस्त मुझे किस रूप में देखना चाहते हो और उसी के अनुसार व्यवहार करना चाहिए?'
चिराग: 'शांत हो जाओ, लीना। तुम परेशान लग रही हो। चलो किसी और समय बात करते हैं।'
मैं: 'क्यों? हमें हमेशा सहज और सुविधाजनक समय और शब्दों का चुनाव क्यों करना चाहिए? चलिए अभी बात करते हैं...'
चिराग: 'मुझे पता है लीना, लंदन में सौरभ के साथ सब ठीक नहीं रहा, लेकिन अरे...खुश हो जाओ! अपनी यात्रा के अच्छे पहलुओं पर ध्यान दो। तुमने लंदन में कुछ बेहतरीन काम किए। तुमने खुद मुझे बताया था और उस दिन तुम बहुत आत्मविश्वास से भरी हुई लग रही थी। फिर खुद पर तरस खाने की क्या ज़रूरत है?'
मैं: 'जानते हो क्या... मुझे पता है कि तुम बड़े ज्ञानी हो और सब कुछ जानते-समझते हो। लेकिन कुछ बातें ऐसी भी हैं जो तुम भी नहीं समझ पाओगे। मैं मानती हूँ कि मैं लगभग सब कुछ तुमसे कह देती हूँ, लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि तुम हर बार मुझे दुलार करोगे। हर समय सकारात्मक पक्ष देखना संभव नहीं है। यह मानवीय स्वभाव नहीं है। और हाँ, मुझे खुद पर दया नहीं आती। मुझे इस बात पर दया आती है कि लोग यह नहीं जानते कि वे कितना निराश करते हैं। उनके रहस्य... उनकी मनमानी... उनकी सनक— ये सब मुझे दुख पहुँचाते हैं।'
इसके बाद काफी देर तक सन्नाटा छाया रहा...
चिराग: 'हां! सौरभ को इस तरह चुप नहीं रहना चाहिए था। उसे अपने अंदर की सारी बातें साफ-साफ बता देनी चाहिए थीं।'
मैं: 'क्या आपने किया है?'
चिराग: 'तुम्हारा क्या मतलब है?'
वह स्पष्ट रूप से अचंभित था। लेकिन सच्चाई यह थी कि मैं भी उसके बारे में बहुत

कुछ नहीं जानता था। तो शायद सभी पुरुष अपने राज़ छुपाकर रखते हैं और अपने भीतर कुछ छिपे हुए रहस्य रखते हैं।

मैं: 'मुझे नहीं लगता कि मैंने कुछ ऐसा कहा जो समझना मुश्किल हो। मैंने तो बस यही पूछा था कि क्या आप खुद पारदर्शी रहे हैं? क्या आपके बारे में ऐसी बहुत सी बातें नहीं हैं जो मुझे नहीं पता? आखिर क्यों सभी पुरुषों को क्रिप्टोग्राफर बनना पड़ता है, जबकि हम आपके स्पष्ट और छिपे हुए संदेशों को समझने की कोशिश में अपना सिर फोड़ते रहते हैं?'

मैंने स्टडी टेबल के नीचे अपना पैर पटका और दोनों तरफ जोर से लात भी मारी। ज़ाहिर है, अगले ही पल मुझे दर्द से कराह उठनी पड़ी!

इसके बाद एक और लंबा विराम आया।

चिराग: 'मुझे लगता है कि आप मेरे बारे में लगभग सब कुछ जानते हैं। और अभी, यह बातचीत मेरे बारे में है या आपके बारे में?'

मैं: 'यही तो असली मुद्दा है! हमारी सारी बातचीत और चर्चाएँ मेरे बारे में ही क्यों होती हैं? सारी बातें एक ही तरफ से क्यों बताई जाती हैं? और हाँ, मैं आपके बारे में बहुत कुछ जानती हूँ। क्या आपने जानबूझकर अपनी निजी जिंदगी के बारे में बात करने से परहेज नहीं किया है? क्या आपकी पत्नी है? क्या आप अविवाहित हैं? आपके कितने बच्चे हैं? मुझे तो यह भी नहीं पता कि आप अभी किसी रिश्ते में हैं या नहीं...'

इस बार, यह विराम असहज है।

चिराग: 'बताने के लिए कुछ नहीं है। मुझे अभी अपनी निजी जिंदगी के बारे में बात करने में सहज महसूस नहीं हो रहा है।'

मैं: 'ओह, अच्छा...'

चिराग: 'तुम्हें इस तरह का व्यंग्यात्मक लहजा क्यों अपनाना पड़ता है? क्या दो लोगों को दोस्ती में यह तय करना चाहिए कि कौन कितना हिस्सा साझा करेगा? मेरी पत्नी और बच्चों के बारे में जानने की इतनी उत्सुकता क्यों?'

मैं: 'अहा...ज़रूर कोई न कोई तो होगा। शायद कोई खूबसूरत पत्नी या प्रेमिका? सामाजिक-पेशेवर सीढ़ी पर ऊँचा मुकाम रखने वाली? बिल्कुल आपकी तरह...कम से कम मुझे बताइए कि आपके बच्चे हैं या नहीं? कितने और उनकी उम्र क्या है? आपके माता-पिता कहाँ रहते हैं? आपके साथ या भारत में?'

चिराग: 'अरे, अरे, अरे! बस करो! मुझे पता है कि मुझे अपनी निजी जिंदगी के बारे में

थोड़ा बताना चाहिए था। लेकिन, मेरी हालत नहीं है... मुझे अब जाना होगा। बाद में बात करते हैं।'
मैं: 'लेकिन क्यों? आप बस साझा क्यों नहीं कर सकते? जैसे मैं करता हूँ...'
चिराग: 'ठीक है! अगर आप मेरे साथ कुछ साझा नहीं करना चाहते, क्योंकि मैंने नहीं किया है—तो कोई बात नहीं। मेरे साथ साझा करना बंद करो... मुझे अब जाना होगा। अपना ख्याल रखना।'
मैं: 'हाँ, मैं इसे बंद कर दूँगा। अब से कुछ नहीं... अलविदा।'
चिराग: 'बाय। शांत होने के बाद बात करते हैं।'
इस बार मैंने गुस्से में अपनी मुट्ठियाँ मेज पर पटकीं।
तीस सेकंड बाद, माँ रसोई से चिल्लाई, 'लीना, अपनी स्टडी टेबल पर थोड़ी दया करो। जिससे तुम बातें कर रही थी, वह तुम्हारी पीड़ा देख भी नहीं सकती। और, योग का क्या फायदा जब खुद टीचर को ही टेबल पीटनी पड़े! अगर मुझ पर नहीं, तो कम से कम टेबल का तो सम्मान करो!'
गुस्से में आकर मैंने चिल्लाकर जवाब दिया, 'ठीक है!'
कुछ मिनट बाद, माँ ने दरवाजे से झाँककर प्यार से कहा, 'मुझे पता है कि तुम्हें ये तली हुई चीजें नहीं खानी चाहिए, लेकिन पालक बहुत ताज़ा था और शौर्य ने शाम को पालक-पूरी खाने की ज़िद की। आओ और गरमागरम खा लो। तुम्हें अच्छा लगेगा।'
*****
मुझे बेहद राहत मिली कि माँ को सौरभ वाले पूरे मामले की ज़रा भी जानकारी नहीं थी। बेशक, शादी की दिशा में गंभीरता से कदम न उठाने को लेकर उनके गुस्से भरे outbursts तो आश्चर्यजनक और विस्मयकारी नियमितता से होते ही थे, इतने नियमित कि अक्सर उन्हें भड़काने के लिए किसी बाहरी उकसावे की ज़रूरत ही नहीं पड़ती थी। उनके एकालापों का लहजा, भावना और विषय एक ही होता था। कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं:
'तुम्हारी बेवकूफी भरी विचारधाराओं से तो वे डर कर भाग ही रहे होंगे।'
'आप संयुक्त परिवार में रहने वाले व्यक्ति को ना कहती हैं; आप शादी के बाद संतान होने की संभावना को नकारती हैं; और तो और—आप नास्तिक हैं... क्यों न आप एक बार मेरी बात सुनें और स्वामी दिलभराजी का आशीर्वाद लेने आएं? कौन जाने, शायद तारों और ग्रहों में कोई समस्या हो। वे उन्हें अपनी नंगी आंखों से देख सकते हैं

और उन्हें उनकी सही जगह पर रखना भी जानते हैं।'

'हे भगवान, मुझे सिर्फ आप पर ही भरोसा है! सिर्फ आप ही कुछ कर सकते हैं। आपने मुझे ऐसे दिन देखने और ऐसे असाधारण बच्चे देने के लिए क्यों चुना?'

'बिन्नी, मुझे यकीन है कि तुम बेचारे पुरुषों के लिए बहुत डरावनी लगती हो।'

अगली सुबह माँ को देखते ही मैं सहज ही समझ गया कि मुझे व्यंग्यपूर्ण फटकार के साथ घेर लिया जाएगा। मैं दबे पांव रसोई में गया और कुर्सी पर बैठ गया, मेरा इरादा था कि एक कप चाय पीकर चुपके से निकल जाऊं। लेकिन बात उनकी गहरी साँसों की एक तेज़ फुफकार से शुरू हुई, फिर बर्तनों की खनखनाहट और खड़खड़ाहट की आवाज़ आई, जिसके बाद कुछ धीमी फुसफुसाहट सुनाई दी। मैं समझ गया था कि आगे क्या होने वाला है। ज़रूर, उनकी किसी सहेली ने सुबह-सुबह उन्हें किसी बात की सूचना दी होगी, जिसकी चिंगारी मुझे जल्द ही आग में झुलसाने वाली थी। मुझे दो मिनट से ज़्यादा इंतज़ार नहीं करना पड़ा।

मैंने तुमसे कहा था, बेंगलुरु मत जाओ, पर तुमने मेरी बात क्यों मानी? तुमने जाने का फैसला कर लिया था; बस अपना सामान पैक किया और निकल पड़ी! और फिर, वहाँ से लौटने के बाद, तुमने एक बार फिर अपना सामान पैक किया और लंदन चली गई! ऐसा कौन करता है? मुझे अपने किसी भी दोस्त की ऐसी बेटी याद नहीं आती जो इतनी बेवकूफी कर सके! अब देखो, हम अभी भी वहीं खड़े हैं जहाँ से शुरू किया था। कांता मेहता की बेटी—जो तलाकशुदा है—तुम्हारे जाने के बाद उसकी दोबारा शादी हो गई और उसकी माँ ने आज सुबह फोन करके बताया कि वह गर्भवती है। मैंने फोन पर देखा कि श्रीमती मेहता मुँह बना रही थीं और मुझे देखकर बुरी तरह मुस्कुरा रही थीं।

मेरी माँ की दूरदृष्टि कमाल की थी, है ना? लोग फ़ोन पर सुनते थे, लेकिन वो सब कुछ देख सकती थीं! मैं उनकी बातों को एक खास (काफी अभ्यास से सीखी हुई) भावहीन चेहरे के साथ सुनती थी। कभी-कभी, मैं उन्हें प्यार से गले लगा लेती थी और तब वो शांत हो जाती थीं... इस बार मुझे समझ नहीं आ रहा था कि क्या करूँ। क्या बहस करूँ या पलटवार करूँ? या फिर एक बार खुलकर अपनी बात पर अड़ी रहूँ और कह दूँ कि मैं वही करूँगी जो मुझे पसंद है? या फिर बस विनम्रता से माफी मांग लूँ? मुझे कुछ तो कहना ही था...

'माँ, मुझे पता है मैं आपको निराश करती हूँ। मैं अक्सर अपने दिल की सुनती हूँ और

इस चक्कर में आपको और खुद को भी दुख पहुँचाती हूँ। हालाँकि मैं इस बात को लेकर बहुत उलझन में हूँ कि आखिर मैं दोबारा शादी क्यों करना चाहती हूँ, फिर भी मैं आपकी बात मानने की कोशिश कर रही हूँ, माँ। मुझे नहीं पता कि मैं अपने बुढ़ापे से डरती हूँ या अंत में अकेले रह जाने से या फिर मैं अकेले ही खुश रहूँगी। क्योंकि मैं उलझन में हूँ, इसलिए मैंने वही सुनने का फैसला किया जो आपको मेरे लिए सही लगता है। मैं उन लड़कों से मिलती हूँ जिन्हें या तो आप पोर्टल से सुझाती हैं या फिर कुछ ऐसे जिनसे मैं अचानक मिल जाती हूँ, इस उम्मीद में कि मुझे कोई ऐसा मिल जाए जिसके साथ मैं जीवन बिता सकूँ। लेकिन हाँ, मैं अब भी उलझन में हूँ, माँ। और इसीलिए कभी-कभी यह सब मेरे लिए बहुत ज़्यादा हो जाता है और फिर मैं इस सारी उलझन से निकलने की कोशिश करती हूँ।'

उस पल दोनों की आँखें नम हो गईं। उसने मेरा हाथ प्यार से दबाया और मैंने उसे एक बार फिर गले लगा लिया। इस बार, थोड़ी देर और।

*****

दिन में कुछ देर बाद, मैं कॉलेज के स्टाफ रूम में बैठा था, अपने मेलबॉक्स में ईमेल देख रहा था, घंटी बजने और अगले लेक्चर के शुरू होने का इंतज़ार कर रहा था। अचानक मुझे याद आया कि मैंने पिछले दिन चिराग के साथ कितना बुरा बर्ताव किया था। मैंने उससे माफी मांगने का फैसला किया।

प्रति: chiragevohra@gmail.com

विषय: मुझे खेद है

हैलो चिराग,

मैं कहां से शुरू करूं? मुझे उस दिन अपने मूर्खतापूर्ण व्यवहार पर बहुत शर्म आ रही है। ज़ाहिर है, मैं होश में नहीं था। सौरभ के साथ हुई घटना ने मेरी मानसिक स्थिति पर बुरा असर डाला है... क्या आप कृपया मुझे माफ़ कर देंगे और उस बातचीत को भूल जाएंगे? क्या हम कभी बात कर सकते हैं?

लीना

ईमेल भेज दिया गया।

इनबॉक्स (1)

प्रति: leena.yoga@gmail.com

विषय: पुनः: मुझे खेद है

हे लीना,

सब ठीक है। जल्द ही बात करते हैं। अगले कुछ हफ्तों तक मैं उपलब्ध नहीं रहूंगा। काम के सिलसिले में यात्रा कर रहा हूं। अगर कोई बात हो तो मुझे लिख देना।

प्रोत्साहित करना!

चिराग

चिराग के ईमेल के तुरंत बाद, माँ का ईमेल इनबॉक्स में आया: 'लो, इस प्रोफाइल को देखो। वह एक वित्तीय विश्लेषक है और तुम्हारे पसंदीदा देश - सिंगापुर में बस गया है। बिन्नी, वह तुम्हारे लिए बिल्कुल सही है। वह तुम्हारी तरह ही घूमने-फिरने का शौकीन है और खाने-पीने का भी शौकीन लगता है!'

मेरे आहत और ज़ख्मी मन में एक बार फिर आशा की एक धुंधली किरण जगी। मैंने प्रोफ़ाइल पर क्लिक किया। हम्म, चलो देखते हैं... क्या मैं एक और लड्डू खाने के लिए तैयार हूँ? हम्म... लगता है तैयार हूँ! उनका नाम है—संजय मिर्चांदानी। ठीक है, चलो उनकी प्रोफ़ाइल तस्वीर ज़ूम करके देखते हैं। आह! वो अच्छे दिखते हैं!

दी गई जानकारी इस प्रकार थी: 'नमस्कार, मैं अपने बेटे की ओर से यह प्रोफाइल बना रहा हूँ। वह सिंगापुर का निवासी है, मूल रूप से दिल्ली का रहने वाला है; उसने डीपीएस से शिक्षा प्राप्त की है; वह एक वित्तीय विश्लेषक है; सिंगापुर में उसका एक स्टार्ट-अप और समुद्र के नज़ारे वाला एक कॉन्डो है। उसके दोस्त उसे स्नेही, देखभाल करने वाला, रचनात्मक, सहज, विनम्र और सम्मानजनक बताते हैं। हम माता-पिता हैं और दिल्ली में हमारा अपना व्यवसाय है। मेरे बेटे के लिए आदर्श जीवनसाथी जिम्मेदार, देखभाल करने वाली और दयालु, शिक्षित और घरेलू स्वभाव की होनी चाहिए, जिसे परिवार और दोस्तों के साथ समय बिताना पसंद हो, और जिसे अच्छा खाना और यात्रा करना पसंद हो।'

ठीक है, अंकल जी। समझ गया! अपने बेटे की इतनी तारीफ करना और उसकी दुल्हन के रूप में जिस सुपरवुमन को आप ढूंढ रहे हैं, उससे इतनी उम्मीदें रखना... बिलकुल आम बात है!

मैंने माँ को संदेश भेजा: 'माँ, ये संजय नाम का लड़का तो अपना प्रोफाइल भी नहीं बना सकता! मुझे नहीं लगता कि उसके पास शादी करने का समय है। उसके पिता

उसकी तरफ से काम कर रहे हैं। वो एक वित्तीय विश्लेषक हैं और इन लोगों के पास साँस लेने तक का समय नहीं है, फिर भी सिंगापुर में समुद्र के नज़ारे वाले अपार्टमेंट इनके पास हैं।'

माँ ने जवाब दिया: 'बेचारा, खूब मेहनत करता होगा और समय नहीं निकाल पाता होगा। इससे वो योग्य क्यों नहीं हो जाता? और अगर पिता को परवाह है तो तुम्हें क्या आपत्ति है... इस बीबा बॉय की आलोचना मत करो। क्या मैंने तुम्हारी प्रोफाइल नहीं बनाई है? क्या इससे तुम्हारी पहचान या तुम्हारा नेक इरादा बदल जाता है?'

मैं: 'ठीक है, मैं आपकी बात समझ गया। वैसे, प्रोफाइल अच्छी है।'

Sanjay Mirchandani—Marwari or Sindhi? I wondered.

मैंने उसे ईमेल किया: हाय

उन्होंने जवाब दिया: लीना, मुझे आपकी प्रोफाइल पसंद आई। चलिए बात करते हैं!

मैंने जवाब दिया: हे संजय, आपसे बात करके अच्छा लगा। कभी बात करते हैं। अब मुझे क्लास लेने जाना है...

*****

माँ के कहने पर लड्डू से बात करने की मेरी तत्परता (बिना किसी झंझट के) ने उस रात खाने की मेज पर हमारी बातचीत को और भी मधुर बना दिया। माँ के चेहरे पर एक शरारती मुस्कान थी। मुझे राहत महसूस हुई।

रात करीब 10 बजे, मैं लगभग कंबल में लिपटकर सोने ही वाली थी कि तभी मेरे व्हाट्सएप पर नोटिफिकेशन आया। इस समय कौन हो सकता है? मैंने मैसेज देखा जो सिंगापुर के एक नंबर (+65...) से आया था: 'हे लीना, मैं संजय हूँ। अभी ऑनलाइन आया हूँ और मैसेज आया है। तुम्हारी माँ भी ऑनलाइन थीं और हमारी थोड़ी देर बात हुई। उन्होंने तुम्हारा नंबर दिया है। क्या अभी बात कर सकते हैं?'

माँ! मैं चीखना चाहती थी।

मैं: 'हे संजय, उम्म... थोड़ी देर हो गई है, लेकिन हाँ, थोड़ी बातचीत करने में कोई हर्ज नहीं है। आप कैसे हैं?'

संजय: 'मैं ठीक हूँ। आप कैसे हैं?'

मैं: 'मैं बिल्कुल ठीक हूँ।'

संजय: 'मुझे यकीन नहीं है कि मुझे इतनी जल्दी निजी तौर पर फोन करना चाहिए था या नहीं।'

मैं: 'नहीं, नहीं...कोई बात नहीं!' (मैंने इस शिष्टाचार को देखकर मुस्कुरा दिया।)
संजय: 'लीना, मैंने ब्लॉग और कुछ वेब-पोर्टल पर आपके लिखे कुछ लेख पढ़े। मैंने आपका एक लेख भी पढ़ा जिसमें आपने जीवन के अर्थ पर कुछ रोचक विचार साझा किए हैं। मुझे आपकी सादगी बहुत पसंद आई, जिसमें आपने जीवन की छोटी-छोटी खुशियों का वर्णन किया है जिन्हें हम अपनी रोजमर्रा की भागदौड़ में अक्सर नजरअंदाज कर देते हैं। सिंगापुर में तो हर चीज और हर कोई इतना दिखावटी है! लोगों का असली रूप, उनकी सच्ची भावनाएं जानना अक्सर मुश्किल होता है। शायद यहाँ का जीवनशैली ही ऐसी है... शायद इसीलिए मुझे आपकी प्रोफाइल इतनी आकर्षक लगी।'
वह सोचने-समझने वाले लोगों में से एक लगते हैं... मैं पूरी तरह से जाग गया और उनकी और बातें सुनने के लिए उत्सुक था। अगर मैंने उस समय खुद को आईने में देखा होता, तो मुझे एक खुश चेहरा और चौड़ी मुस्कान दिखाई देती।
एक छोटी सी बातचीत से शुरू हुई बात आखिरकार एक घंटे से अधिक समय तक चली। सिंगापुर से भारत तक; डीपीएस से सेंट मैरी स्कूल तक; और सिंगापुर के मोमोज से लेकर चाणक्यपुरी के छोले-भटूरे तक—हंसी और आश्चर्य के बीच हर बात पर चर्चा हुई।
मैं: 'अरे संजय, क्या तुम्हारे यहाँ लगभग आधी रात नहीं हो गई है?'
संजय: 'अरे हाँ! मुझे पता ही नहीं चला कि भोर होने का समय हो गया है। लीना, आप तो बहुत ही बढ़िया बातें करती हैं। इसमें कोई हैरानी की बात नहीं, आप तो लेक्चरर हैं। मुझे यकीन है कि छात्र लेक्चर के बाद भी आपको सुनकर मंत्रमुग्ध हो जाते होंगे। क्या आप रविवार को वीडियो चैट करना चाहेंगी? चलिए मैं आपको अपना अपार्टमेंट दिखाता हूँ और हम अपनी पसंदीदा किताबों के बारे में और बात कर सकते हैं। क्या कहती हैं?'
उस क्षण दर्पण में एक चेहरा लाल-लाल होता हुआ दिखाई दिया होगा... मैं शर्म से लाल हो गया और मैंने जवाब दिया, 'संजय, यह योजना मुझे अच्छी लग रही है!'
*****
अगले दो दिन काम की समय-सीमा पूरी करने, घर के पेंडिंग काम निपटाने और ज़ाहिर तौर पर रविवार को संजय से मिलने की उत्सुकता में पलक झपकते ही बीत गए। इन दो दिनों में कुछ 'अरे, कैसा चल रहा है?' जैसे मैसेज का आदान-प्रदान हुआ।

मैं ज़्यादा उत्साहित नहीं होना चाहती थी, लेकिन मुझे पूरा यकीन था कि हमारी अच्छी शुरुआत हुई है।

मुझे पता था कि माँ को रविवार को अपने दोस्तों के साथ साप्ताहिक मिलन समारोह में जाना है, इसलिए मैंने चतुराई से वही समय चुना जब मैं संजय से आराम से बात कर सकूँ। हालाँकि पापा घर पर थे, लेकिन वे बहुत प्यारे थे, कभी दखल नहीं देते थे, अपनी ही दुनिया में मग्न रहते थे और खुश रहते थे, खासकर जब माँ घर पर नहीं होती थीं। उस सुबह मैंने अपना कमरा अच्छे से साफ किया। मैंने चादरें बदलीं, किताबों को इस तरह से व्यवस्थित किया कि विद्वतापूर्ण और आध्यात्मिक किताबें सामने दिखाई दें, कुछ पौधे लगाए, एक अच्छा सा पंजाबी सूट पहना और फोन का इंतज़ार करने लगी। हमने पिछली रात ही अपनी स्काइप आईडी एक-दूसरे को दे दी थीं।

दोपहर करीब 1 बजे मां चली गईं और उनके जाने के तुरंत बाद मुझे स्काइप कॉल का अलर्ट सुनाई दिया।

ओह हाँ, यह वही है... मैंने आखिरी बार आईने में खुद को देखा और कॉल उठा ली।

संजय मेरे 14 इंच के कंप्यूटर स्क्रीन पर दिखाई दिया। गुलाबी कमीज में वह बेहद आकर्षक लग रहा था; उसका रंग गोरा था और उसके बाल करीने से संवारे हुए थे... उसकी मुस्कान इतनी मनमोहक थी कि किसी भी लड़की का दिल धड़कना बंद कर सकती थी।

मैंने खुद को अपने दिवास्वप्न से बाहर निकाला और मुस्कुराकर जवाब दिया।

'हैलो लीना, आपसे मिलकर अच्छा लगा। क्या मैं समय पर आई हूँ?'

जी हाँ, बिल्कुल! मेरा दिल इतनी ज़ोर से धड़क रहा था कि मैं अपना जवाब भी नहीं सुन पा रहा था।

'यह एक अजीब सी अनुभूति है—क्योंकि मैंने कभी किसी से इतनी जल्दी बात नहीं की है। मुझे थोड़ी शर्म आ रही है।'

कुछ देर तक अजीब सी खामोशी छाई रही, जिसे मैंने आखिरकार तोड़ा। 'संजय, तुम्हारे पीछे वो खूबसूरत पेंटिंग क्या है?'

मुझे पेंटिंग इकट्ठा करना पसंद है। मैंने इसे पिछले हफ्ते एक कला प्रदर्शनी से खरीदा था। यह मेरे पसंदीदा कलाकारों में से एक की अमूर्त पेंटिंग है।

वह कला के पारखी हैं! मैं लगभग विस्मय से बोल पड़ी। यह सब कुछ इतना अच्छा लग रहा था कि सच होना मुश्किल था।

‘चलिए मैं आपको घर घुमा देता हूँ,’ उसने कहा।
अगले दस मिनट तक मैंने संजय के समुद्र किनारे बने आलीशान अपार्टमेंट में चुपके से झाँका। उसमें फर्नीचर, किताबें, सजावटी सामान और अन्य ज़रूरी चीज़ों का एकदम सही अनुपात था। उनके लिविंग रूम से समुद्र का नज़ारा सचमुच शानदार था! अंत में मैं दंग रह गया।
'लीना, मैं पहले अमेरिका में था और अब लगभग पांच साल से सिंगापुर में हूँ, लेकिन अगर अवसर मिले तो मैं हर तीन से पांच साल में एक नई जगह पर जाना चाहता हूँ। क्या आपको इससे कोई आपत्ति नहीं है?'
हे भगवान! ये तो सपना ही होगा, मैंने खुद से कहा। मैं चिल्लाना चाहती थी: हाँ, मुझे अलग-अलग जगहों पर जाना, विभिन्न संस्कृतियों को देखना, तरह-तरह के व्यंजन चखना बहुत पसंद है...
मैं अवाक रह गया और बस इतना ही कर पाया कि सौहार्दपूर्ण ढंग से सिर हिला सका।
वाह, यह तो बहुत बढ़िया है! अरे, क्या आप मुझे पाँच मिनट का समय देंगे? मुझे अपने धुले हुए कपड़े उतारने हैं और उन्हें ड्रायर में डालना है।
हे भगवान*!* अगर यह सपना है तो मुझे चुटकी काट कर देखो... आह, वह तो अलग है*!* कोई ऐसा जो ज़रूर बोझ बाँटेगा*!*
‘लीना, क्या तुम्हें मेरा घर पसंद आया?’
'बेशक, मुझे बहुत अच्छा लगा। क्या मैं आपको अपना छोटा सा कमरा दिखाऊं?'
'मैं देखना चाहूंगी... मैं जानना चाहती हूं कि क्या तुम्हारा कमरा भी तुम्हारी तरह ही आकर्षक है, लीना।'
मैंने वस्तुतः उसे अपने सुव्यवस्थित ढंग से सजाए गए कमरे का भ्रमण कराया और मैं उसकी आँखों में प्रशंसा का भाव देख सकता था।
आपका कमरा वाकई खूबसूरत है और आपके व्यक्तित्व के बारे में बहुत कुछ बताता है।
एक सवाल काफी समय से मेरे मन में खटक रहा था। मैंने सोचा कि पूछ ही लेता हूँ।
‘संजय, बताओ, तुमने दोबारा शादी करने का फैसला क्यों किया?’
आपने अच्छा सवाल पूछा है। देखिए, मैं पिछले तीन सालों से अकेले रह रहा हूँ। मेरी कमाई अच्छी है, भविष्य में तरक्की की संभावनाएं उज्ज्वल हैं और मेरा परिवार मेरी

उपलब्धियों और फैसलों में पूरा सहयोग देता है। मुझे लगता है कि मैं अब दोबारा बसने के लिए तैयार हूँ। मैं हर छह महीने में दिल्ली में अपने परिवार से मिलने जाता हूँ, लेकिन फिर भी कभी-कभी यहाँ अकेलापन महसूस होता है। और खासकर जब आपके दोस्त हमेशा अपने पार्टनर के साथ घूमते रहते हैं—फिल्म देखने, पार्टियों में जाने, बारबेक्यू करने—और आप...तो आपको ऐसा लगता है जैसे आप सबसे अलग-थलग पड़ गए हों।

दिल की धड़कन थोड़ी धीमी हो गई और मेरे दिमाग ने काम करना शुरू कर दिया।

'ठीक है, और...?'

'देखो लीना, मैं अपने दोस्तों के साथ रहकर बहुत खुश हूं। सच कहूं तो, मैं खुद से प्यार करता हूं, लेकिन जब दोस्तों के साथ समय बिताने की बात आती है, तो मुझे लगता है कि मैं एक हारा हुआ इंसान हूं क्योंकि वे सभी शादीशुदा हैं और उनका जीवन उनकी पत्नियों और बच्चों के इर्द-गिर्द घूमता है। मैं उन्हें खोना नहीं चाहता। मैं उनके साथ समय बिताना चाहता हूं और उनके ही समूह में रहना चाहता हूं।'

दिल की बेचैनी कम हो रही थी और हकीकत की रोशनी चारों ओर छा रही थी... अचानक, संजय के पीछे बनी अमूर्त पेंटिंग के रंग मेरी आँखों को चुभने लगे। मैंने सोचा, ये रंग बहुत उदास हैं। फिर भी, दिल ने पूरी तरह से नियंत्रण छोड़ने से इनकार कर दिया। उसे झुकने से पहले और स्पष्टीकरण चाहिए था।

'अगर मैं गलत समझ रही हूँ तो कृपया मुझे सुधारें। क्या आप अपने विवाहित दोस्तों द्वारा स्वीकार किए जाने और उनके करीबी समूह में शामिल होने के लिए शादी करना चाहती हैं? क्या आप अपने विवाहित दोस्तों के साथ मौज-मस्ती करना चाहती हैं और अलग-थलग नहीं पड़ना चाहतीं? क्या इसीलिए आप दोबारा शादी करना चाहती हैं?' मैंने साफ-साफ कहा।

नहीं, लीना, तुम समझ नहीं रही हो। जब तुम किसी के साथ होती हो, तो तुम्हें आसानी से स्वीकार कर लिया जाता है। जब तुम पार्टियों में जाती हो, तो तुम्हें खास समझा जाता है और तुम अपने जीवनसाथी से जुड़ी गपशप में शामिल हो सकती हो... तुम्हें परिवार का सदस्य माना जाता है; बराबरी का दर्जा दिया जाता है। अगर तुम्हारा चेहरा आकर्षक हो, तो तुम्हें आसानी से निमंत्रण मिल जाते हैं। इसके अलावा, तुम्हें काम से घर आकर सिर्फ़ कोल्डस्लॉ और बेक्ड बीन्स खाने की ज़रूरत नहीं पड़ती... क्योंकि घर पर किसी ने खाना बना दिया होता है!

जी हाँ, बिल्कुल! कोई न कोई घर पर होगा जो आपके लिए खाना बनाएगा, आपके कपड़े धोएगा और फिर आपको सज-धज कर आपके शादीशुदा दोस्तों के बीच शान से पेश करेगा!

बेशक, मैंने संजय से ये सब या इनमें से कोई भी बात नहीं कही। मैंने कुछ पल सोचा और कैमरे में उसकी तरफ देखा। उसकी मनमोहक मुस्कान अभी भी वैसी ही थी, लेकिन अब उसे देखकर मेरे दिल में गुदगुदी नहीं हो रही थी।

'संजय, क्या तुम शादी इसलिए करना चाहते हो ताकि तुम्हें बात करने, अपने विचार साझा करने और अपना जीवनसाथी बनाने के लिए एक दोस्त मिल जाए? या फिर दूसरों को प्रभावित करने के लिए शादी करना चाहते हो? क्या तुम्हें अकेले रह जाने का डर है? क्या यही कारण है कि तुम शादी करना चाहते हो?'

'लीना, तुम्हारा क्या मतलब है?'

मुझे उसकी मुस्कान धीरे-धीरे फीकी पड़ती हुई दिखाई दी... उसने अपनी भौंहें भी ऊपर उठा लीं, और फिर वह उतना आकर्षक नहीं लग रहा था। 'संजय, क्या तुम सच में अपने लिए शादी करना चाहते हो?'

'बेशक, मैं शादी करना चाहता हूँ।' उसकी आवाज़ तेज़ होती जा रही थी और उसका लहजा बदल रहा था...

'मैं आपसे फिर पूछती हूँ... क्या आप अपने लिए शादी करना चाहते हैं? या फिर, क्या आपको अपने दोस्तों को प्रभावित करने के लिए सिर्फ एक दिखावटी पत्नी चाहिए? मुझे सच में नहीं लगता कि आपको अपने लिए कोई साथी चाहिए; बल्कि आपको पार्टियों और दोस्तों के समूह में शामिल होने के लिए एक तरह का गेट-पास चाहिए।'

जब मैंने अपने दिल की सारी बात कह दी, तब तक उसके चेहरे से मुस्कान पूरी तरह गायब हो चुकी थी। उसकी भौंहें और भी ऊपर उठ गई थीं और नथुने लाल और फूले हुए लग रहे थे।

'तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई? बकवास! तुम फिजूल की बातें कर रहे हो! मुझसे इतनी बेवकूफी भरी बात पूछने की तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई? मैं शादी करना चाहता हूँ और इसीलिए मैं यहाँ धैर्य से तुमसे बात कर रहा हूँ; इसीलिए मैं उस बेवकूफी भरी वैवाहिक वेबसाइट पर हूँ; और इसीलिए मैंने अपने दोस्तों के साथ फिल्म देखने जाने का प्लान कैंसिल कर दिया, जो अपनी पत्नियों और बच्चों के साथ किसी आलीशान

थिएटर में बैठकर खूब मजे कर रहे होंगे! मैं कितना मूर्ख रहा हूँ! मैंने यहाँ बैठकर तुम्हारे साथ बात करने और तुम्हारी बकवास सुनने में अपना समय बर्बाद किया। तुमने मेरा समय बर्बाद किया है। मैं अब इस बेकार की बहस को आगे नहीं बढ़ाऊँगा।'
और उसने फोन काट दिया।
मुझे यह समझने में कुछ सेकंड लगे कि मैं अब वीडियो चैट पर नहीं हूँ। मैं काफी देर तक स्तब्ध बैठा रहा, तभी मेरे कानों में एक तीखी आवाज गूंजी।
अच्छा हुआ कि उसने हमें अपने स्वभाव की झलक दिखा दी। हम एक बड़ी मुसीबत से बच गए। उसे भूल जाओ! उसे एक पूर्णकालिक सहायक और एक अंशकालिक एस्कॉर्ट की ज़रूरत है। चलो कुछ और प्रोफाइल देखते हैं। वैसे, मैं जल्दी वापस आ गई क्योंकि वहाँ सब लोग आलिया की नई फिल्म के बारे में बात कर रहे थे। मैंने सोचा कि तुम घर पर हो और हम साथ जा सकते हैं। क्या तुम ऑनलाइन टिकट बुक करोगी या हम सीधे थिएटर चलें?
मां मेरे बेडरूम के दरवाजे पर खड़ी थी, उसके चेहरे पर स्नेहपूर्ण भाव था, मानो वह कह रही हो कि चलो इन बेवकूफों को नजरअंदाज करते हैं।

The Bengalurean Madrasi

'तीन विधियों से हम ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। पहली विधि है चिंतन, जो सबसे श्रेष्ठ है; दूसरी विधि है अनुकरण, जो सबसे सरल है; और तीसरी विधि है अनुभव, जो सबसे कठिन है'—कन्फ्यूशियस के ये शब्द मेरे लैपटॉप की स्क्रीन पर अंकित हैं।
मेरी असफल शादी की कहानी सुनाने के बाद चिराग ने मुझे यह ज्ञानवर्धक कथन भेजा था। मैं उस कथन को घूर रही थी, खुद को शांत करने की कोशिश कर रही थी। मेरा मन पीड़ा से उबल रहा था; मुझे समझ नहीं आ रहा था कि मैं अपनी ही बेवकूफी भरी उत्सुकता से ज़्यादा आहत थी, जो मैं लगभग हर किसी से बात करने के लिए करती थी, या फिर इस मंदबुद्धि संजय ने मुझे बीमार कर दिया था।
मेरे दिल का बोझ असहनीय होता जा रहा था। मैंने घड़ी देखी और सहज ही चिराग को फोन किया। थोड़ी देर शिष्टाचारवश बातचीत करने के बाद, और बिना यह पूछे कि क्या वह व्यस्त हैं या थोड़ी देर बात करने के लिए समय निकाल सकते हैं, मैंने अपने सारे मन की बात कह दी।
'चिराग, मुझे सच-सच बताओ... क्या मुझमें कुछ गंभीर खामी है कि मेरी जिंदगी में हमेशा सारे घमंडी लोग ही आ जाते हैं? मैं इन सबसे तंग आ चुकी हूँ... सिर्फ इसलिए

कि मैंने एक ऑनलाइन पोर्टल पर रजिस्ट्रेशन कराया और शादी में खुद को दूसरा मौका देने का फैसला किया, ऐसा लगता है जैसे पूरी दुनिया ने मुझे मुसीबतों में डालने की साजिश रच दी हो।'

अरे, अरे! ज़रा धीरे चलो, प्यारी... क्या हुआ है? तुमने बेचारे लोगों के खिलाफ झंडे क्यों लहराए हैं?

दूसरी तरफ से 'डियरी' की आवाज़ सुनकर मैं लगभग शर्म से लाल हो गई। नहीं लीना, अब अपने दिमाग में कोई फालतू विचार मत लाओ और मामले को और उलझाओ मत। मैंने संजय की चिराग को की गई कॉल के बारे में बताया। फोन पटकने से पहले मैंने जो कहा था, उसे दोहराते हुए मुझे दोपहर से भी ज़्यादा बुरा लगा।

फिर भी, मुझे महसूस हुआ कि चिराग अपनी हंसी को मुश्किल से दबा पा रहा था। लेकिन उसने समझदारी से खुद को संभाला और मेरी हंसी के निशाने पर आने से बच गया।

'मानो लीना, मैं इन सब पर गुस्सा करने की कोशिश कर रही हूँ, लेकिन इसके बजाय मुझे हंसी आ रही है। मुझे बहुत दुख है कि तुम इन सब से गुज़र रही हो... मुझे पता है कि तुम्हारे लिए हर बार अनजान राह पर कदम रखना आसान नहीं होता। लेकिन जब तक हम अच्छी तरह से जांच-परख नहीं कर लेते, तब तक हमें कैसे पता चलेगा कि किसे नाराज़ करना है? इन सभी अनुभवों को थोड़ा तटस्थ भाव से लो, क्योंकि ये थोड़े समय के लिए ही रहेंगे और तब तक ही रहेंगे जब तक तुम आखिरकार किसी को नाराज़ नहीं कर देती।'

मुझे पता है, चिराग और मैं यह सब समझते हैं और इसीलिए मैं हर बार इस तरह की गिरावट से पहले खुद को तैयार कर लेता हूं लेकिन...'

'थोड़ा संशयवादी या कड़वा हुए बिना समझदार बनना कभी आसान नहीं होता। इसके लिए एक मनोरंजक, दर्शक जैसी मनोवृत्ति बनाए रखने की अद्भुत क्षमता की आवश्यकता होती है। ठीक है, अब संजय, इस बात को एक तरफ रख दें और मुझे बताएं कि आप आजकल क्या पढ़ रहे हैं?'

****

उसके बाद के दिनों में मुझे थोड़ा बेहतर और काफी हल्का महसूस हुआ।

मैंने सुबह-सुबह लंबी सैर और ध्यानमग्न क्षणों के दौरान, दर्शकों की उस बहुप्रतीक्षित मनोवृत्ति को और मजबूत करने का प्रयास किया।

जीवन उतना बुरा नहीं है; यह काफी दिलचस्प है और कभी-कभी अविश्वसनीय भी— मैंने अपने मन में जीवन का यही सार निकाला। अगर कोई चाहे तो आसानी से मुस्कुराकर जीवन में आगे बढ़ सकता है। मैंने बुरे पलों को भुलाकर यूनाइटेड किंगडम की अपनी यात्रा पर एक कॉफी टेबल बुक बनाई और उसे अपने लिविंग रूम में एक महत्वपूर्ण कृति के रूप में गर्व से प्रदर्शित किया।

एक दिन जब मैं कॉलेज जाने की तैयारी कर रहा था, तभी मुझे अपने एक पूर्व सहकर्मी अरुण का फोन आया। वह कभी हमारे कॉलेज के आईटी विभाग में काम करता था। उससे बात करके मुझे बहुत खुशी हुई।

'अरे अरुण, कैसे हो? हे भगवान, कितना समय हो गया। क्या तुम मर गए थे?'

'हा हा! मैं बिल्कुल ठीक हूँ। आप जानते ही हैं कि मुझे टेक्नोलॉजी का बहुत शौक है। मैं एक ऐप बनाने में व्यस्त था और अब मैं उस ऐप का मालिक हूँ। मैंने अपनी खुद की कंपनी शुरू की है और मेरी टीम में लगभग पंद्रह लोग हैं,' अरुण ने उत्साह से जवाब दिया।

'बहुत बढ़िया! यह तो शानदार है! जी हाँ, जी हाँ... यह जानकर कोई आश्चर्य नहीं हुआ कि आप भी उद्यमिता की लहर में बह गए हैं। मुझे आपके लिए खुशी है। यह तो एक दावत बनती है!'

'बेशक, एक दावत तो बनती है और जल्द ही बनेगी। फिलहाल, मुझे आपकी मदद की जरूरत है।'

'मुझे बताओ।'

मैंने एक डेटिंग ऐप विकसित किया है और अब तक हमारे पास लगभग 2,000 पंजीकृत उपयोगकर्ता हैं। मैं इसे और अधिक लोगों तक पहुंचाने की प्रक्रिया में हूं और कुछ भरोसेमंद दोस्तों से संपर्क कर रहा हूं ताकि वे ऐप का उपयोग करें, इसे आज़माएं और मुझे बताएं कि इसे और बेहतर और बड़ा कैसे बनाया जा सकता है।

'इसलिए?'

'तुम मेरी जान-पहचान की सबसे समझदार महिलाओं में से एक हो! और, मुझे लगता है, तुम सिंगल भी हो, है ना? साथ ही, तुम हमेशा से एक मददगार दोस्त रही हो। कृपया इसे आजमाओ।'

'कौन? मैं? नहीं, नहीं... मैं नहीं कर सकती। हाँ, मैं अभी अविवाहित हूँ। लेकिन मैं ये सब नहीं करूँगी। कृपया मुझे माफ़ कर दीजिए, अरुण।'

अरे, अरे... मेरी बात सुनो, प्लीज़। मेरा ऐप कोई आम ऐप नहीं है। हम किसी को भी अपनी सूची में शामिल करने से पहले कई चरणों की जांच करते हैं और कम से कम 8-10 समान गुणों के आधार पर दो लोगों का मिलान करते हैं। चलो, लीना। मुझे पता है कि तुम उन लोगों में से हो जो मुझे सचमुच में राय दोगी और इससे भी बड़ी बात, हो सकता है तुम्हें कोई दिलचस्प लगे। प्लीज़, प्लीज़...।

वह इतना ज़िद कर रहा था कि मुझे झुकना पड़ा। अनिच्छा से ही सही, मैंने सहमति दे दी और बाद में देखने के लिए डेटिंग ऐप की जानकारी सेव कर ली। मेरे मन में यह बात पक्की थी कि बाद में कभी नहीं। एक और लड्डू देखने का ख्याल आते ही मेरी रूह कांप उठी।

लेकिन दोस्त अक्सर हमारी परछाई होते हैं। अगर मैं जिद्दी थी, तो वह मुझसे भी ज्यादा जिद्दी था। अरुण अपनी गुजारिशों में इतना अड़ियल था कि हर दूसरे दिन वह मुझे लॉग इन करने की याद दिलाता रहता था। आखिरकार, एक रविवार की सुबह, मम्मी के बनाए स्वादिष्ट ब्रंच को खाने के बाद, जिससे मेरा मूड अच्छा हो गया था, मैंने ऐप डाउनलोड करने और शुरू करने के तरीके के बारे में अरुण के मैसेज देखे।

जैसे ही मैंने लॉग इन किया, मुझे एक संदेश मिला: 'सिंगल-मिंगल में आपका स्वागत है, लीना। हमने आपकी पहचान सत्यापित कर ली है। कृपया अपनी प्राथमिकताएं निर्धारित करें और अपनी तस्वीर के साथ एक संक्षिप्त प्रोफ़ाइल पोस्ट करें ताकि वहां मौजूद सिंगल पुरुष आपको जान सकें। क्या आपको कोई टिप चाहिए?'

नहीं, धन्यवाद, मैंने मन ही मन बुदबुदाया और एक छोटा सा नोट, साथ ही अपनी एक तस्वीर अपलोड की जिसमें मैं मुस्कुरा रही थी। ऐप में मुझे अपनी रुचियों, मजेदार/दिलचस्प पलों और ऐप पर आने के कारणों का उल्लेख करने के लिए कॉलम भरने थे। आखिरी सवाल का जवाब मैं देना चाहती थी—अरुण ने मुझे यहाँ आने के लिए बहुत ज़ोर दिया, इसलिए मैं यहाँ हूँ। लेकिन मैंने गंभीरता से लिखा: 'समान सोच वाले लोगों से जुड़ने के लिए।'

और फिर ऐप ने मुझे एक ही बार में लगभग पच्चीस अजनबियों से मिला दिया। वाह!

एक संदेश: 'अरे, तुम्हारी मुस्कान बहुत प्यारी है।'

मैंने इसे नजरअंदाज कर दिया।

एक और संदेश: 'हे लीना, अच्छा नाम है।'

मैंने भी इसे नजरअंदाज कर दिया।

एक और संदेश: 'लीना, तुम यहाँ क्यों आई हो?'
मैं पलटकर जवाब देना चाहता था: क्या तुम इसे मेरी प्रोफाइल पर नहीं पढ़ सकते?
बेशक, मैंने इसे नजरअंदाज कर दिया।
बीस अपठित संदेश सामने आए। मैंने उन सभी को अनदेखा कर दिया।
चालीस अनपढ़े संदेश... मैं उन्हें अनदेखा करता रहा।
रात करीब 9 बजे मैं बिस्तर पर लेट गया था, तभी एक और वाइब्रेशन हुई और मैंने सहज रूप से बेडसाइड टेबल पर पड़ा अपना फोन उठा लिया।
संदेश में लिखा था: 'हे लीना, मैं राघव हूँ। संयोग से आपकी प्रोफ़ाइल पर नज़र पड़ी और आपसे बात करना चाहता था। मैं एक टेक-फ़ाउंडर हूँ, तलाकशुदा हूँ, अपने बेटे के साथ किकबॉक्सिंग का शौकीन हूँ ताकि मैं फिट रहूँ और जब ऑफिस में नहीं होता, तो रसोई में नई-नई रेसिपीज़ आज़माता रहता हूँ। एक ऐसे लेक्चरर से जुड़ना अच्छा लगेगा जिनकी मुस्कान भी प्यारी हो।'
मैंने थोड़ी हिचकिचाहट दिखाई लेकिन जवाब देने का फैसला किया।
मैं: 'हाय राघव। आपसे बात करके अच्छा लगेगा।'
राघव: 'अरे, शीघ्र उत्तर देने के लिए धन्यवाद। क्या शिक्षक जल्दी नहीं सोते?'
मैं: 'हां, वे करते हैं।'
राघव: 'तो फिर आज आपको नींद क्यों नहीं आ रही?'
मैं: 'आज तो मैं सामान्य से अधिक देर तक आराम करता रहा... इसलिए मुझे नींद नहीं आ रही है।'
राघव: 'बहुत बढ़िया लग रहा है... अरे, शिक्षक बनना कैसा होता है; बदलाव का सूत्रधार बनना कैसा होता है? आप मानवता को आकार देने में लगे होते हैं; हमारे समाज के भविष्य को संवारने में।'
राघव की सरल और हास्यपूर्ण टिप्पणी ने मुझे जोर से हंसा दिया।
मैं: 'सोने से पहले हंसी की एक झटपट थेरेपी के लिए धन्यवाद। अरे, ऐसा कुछ नहीं है। मैं बस अपने जुनून का पीछा कर रही हूँ और इस जुनून को उन लोगों तक पहुँचा रही हूँ जो इस यात्रा में मुझसे मिलते हैं। मुझे खुशी है कि मैं वह कर पा रही हूँ जो मुझे लगता है कि मैं अच्छे से कर सकती हूँ।'
राघव: 'बहुत बढ़िया... मुझे यह पसंद आया। वैसे, मैडम लीना—क्या आप कुछ ग्नोची खाना चाहेंगी? मैंने अभी-अभी बनाई हैं।'

मैं: 'वाह, यह क्या है? मैंने इसके बारे में सुना तो है, लेकिन इसे खुद बनाने की कभी कोशिश नहीं की।'

राघव: 'यह मैदा, अंडे और आलू से बना एक इतालवी व्यंजन है। इसे तैयार करने में बस कुछ ही मिनट लगते हैं, और इसे गाढ़ी टमाटर की चटनी के साथ परोसा जाता है, जिसे निश्चित रूप से इसी तकनीकी विशेषज्ञ ने बनाया है।'

मैं: 'हम्म... दिलचस्प! तो, आपका एक बेटा है। उसकी उम्र कितनी है?'

राघव: 'मेरा बेटा अब आठ साल का है और बेहद शरारती है, हालांकि रसोई में काफी मददगार है। वह सब्जियां काटता है, जबकि मैं खाना पकाने और सजाने का काम करता हूं। वह बेंगलुरु के एक डे स्कूल में पढ़ता है।'

मैंने कहा: 'बहुत बढ़िया... बहुत कम माता-पिता बच्चों को रसोई में काम करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। लगता है आपको कम परेशानियां होती हैं।'

राघव: 'धन्यवाद... मुझे अब जाना होगा, इससे पहले कि ग्नोची ठंडी हो जाए और मेरे बेटे का गुस्सा भड़क उठे। संपर्क में रहना। अलविदा।'

मैं: 'हाँ, संपर्क में रहना। अलविदा।'

राघव में कुछ ऐसा था जिसने मुझे काफी देर तक जगाए रखा। मैंने उसका प्रोफाइल एक बार फिर ध्यान से पढ़ा। उसकी शक्ल-सूरत औसत थी; कद मध्यम; रंग सांवला और चेहरा, बिल्कुल दक्षिण भारतीय जैसा। मैंने इंटरनेट पर भी खोजबीन की और मुझे उसके कुछ वीडियो मिले जिनमें वह विभिन्न सम्मेलनों और संगोष्ठियों में युवा प्रौद्योगिकीविदों को व्याख्यान दे रहा था। हम्म... दिलचस्प... मैंने नींद में बड़बड़ाते हुए कहा और सो गया।

*****

अगले हफ्ते मैं व्यस्त रही और राघव और डेटिंग ऐप के बारे में लगभग भूल ही गई थी। रविवार शाम को ही मेरे सिंगल-मिंगल मेलबॉक्स में उसका संदेश आया।

राघव: 'हेलो, सुश्री लेक्चरर! आप कैसी हैं?'

मैं: 'अरे, राघव, तुम हो! तुम कहते हो कि मैं ठीक हूँ...'

राघव: 'एक आकर्षक महिला कभी परेशान नहीं करती। इसलिए मैंने सोचा, अहंकारी क्यों बनूँ? चलो जो करना है कर ही देता हूँ। उम्मीद है मैं आपको ज्यादा परेशान नहीं कर रहा हूँ।'

मैं: 'नहीं... बस ये हफ्ता बहुत व्यस्त था। आपके यहाँ क्या चल रहा है?'

राघव: 'दरअसल, मैं काम के सिलसिले में दिल्ली गया था और लौटने पर बच्चे की सप्ताहांत की परीक्षा में व्यस्त रहा।'

मैंने कहा: 'अरे, आप दिल्ली में थे? आपने फोन क्यों नहीं किया? हम कॉफी पर मिल सकते थे।'

जैसे ही मैंने आखिरी पंक्ति कही, मुझे उसे वापस लेने का मन हुआ। वह कहाँ जाता है या आता है और किसे फोन करता है या नहीं करता है, इससे मुझे कोई लेना-देना नहीं है, मैंने खुद को फटकारा।

मैं: 'ओह, मुझे बहुत खेद है... उह, मुझे आपसे यह नहीं पूछना चाहिए था।'

राघव: 'सच कहूं तो, लीना, मैं भी तुम्हें फोन करना चाहता था, लेकिन थोड़ा झिझक रहा था। हमारी अभी-अभी ही बातचीत शुरू हुई है। अगर फोन होता तो काफी जल्दबाजी हो जाती।'

मैं: 'हम्म, मैं समझ गया। तो, आपने दिल्ली में क्या किया?'

राघव: 'खैर, काम से जुड़ी नियमित बैठकों के बाद, मैंने कुछ पुराने दोस्तों से मुलाकात की। दरअसल, मेरा एक दोस्त, अरुण, मुझसे मिलने के लिए बहुत ज़िद कर रहा था क्योंकि वह चाहता है कि मैं उसका मार्गदर्शन करूं।'

मैं: 'अरुण?!?!'

राघव: 'हां, अरुण। क्यों? तुम हैरान लग रहे हो?'

मैंने पूछा: 'क्या आपका यह दोस्त—अरुण—आपकी तरह ही एक टेक्नीशियन है और क्या वह इस ऐप का मालिक भी है?'

मैंने बेसब्री से उसके जवाब का इंतजार किया।

राघव: 'अब तुम मुझे डरा रहे हो। हाँ, वो डरा रहा है!'

मैं: 'हे भगवान! वाकई, हम एक छोटी सी दुनिया में रहते हैं! वह मेरा दोस्त भी है। हमने कुछ साल पहले तक साथ काम किया था।'

राघव: 'अरे... ठीक है, एक मिनट रुको! लीना, कृपया मुझे यह मत बताना कि तुम यहाँ इसलिए आई हो क्योंकि अरुण ने तुमसे लगभग गिड़गिड़ाकर कहा था, है ना?'

कुछ देर रुकने के बाद, मैंने सहमति में सिर हिलाया और चैट बॉक्स में 'हां' टाइप किया।

राघव: 'अरे बाप रे! मैं भी इस ऐप का टेस्टर हूं और यूजर एक्सपीरियंस को बेहतर बनाने के सुझाव देने के लिए अरुण से मिला था।'

अगले कुछ सेकंड के लिए, राघव और मैंने बस हा! हा! हा! जैसे इमोजी का आदान-प्रदान किया।

बातचीत जारी रही और हम एक-दूसरे की रुचियों, शौक और अब तक के अपने जीवन के बारे में थोड़ा-बहुत जानने लगे। यह जानकर अच्छा लगा कि राघव आम तमिल ब्राह्मणों से बिल्कुल अलग थे, जो शायद ही कभी साहसी या गैर-परंपरागत होते हैं। वे सक्षम तो थे, लेकिन रूढ़िवादी या रूढ़िवादी नहीं थे। उन्होंने देश भर के और यहाँ तक कि आधी से ज़्यादा दुनिया के लोगों के साथ अपने विभिन्न संस्कृतियों के अनुभवों को साझा करके मुझे बांधे रखा। मैंने घड़ी देखी और समय इतनी जल्दी बीत जाने पर आश्चर्यचकित रह गया।

मैं: 'अरे, लगभग आधी रात हो गई है। मुझे कल कॉलेज जाना है।'

राघव: 'हां, मुझे एहसास है कि मैंने बहुत ज्यादा बक-बक कर दी, क्षमा करें।'

मैं: ‘अरे नहीं, बिलकुल नहीं... सब ठीक है। मैं तो बस आनंद से सुन रहा था। शुभ रात्रि।’

राघव: 'शुभ रात्रि। कल आप अपने अनुभव और कहानियां साझा करना।'

मैं: ‘ठीक है, ज़रूर... हो गया।’

लॉग आउट करने के बाद, मुझे कुछ हद तक यकीन हो गया कि डेटिंग ऐप को आज़माना शायद बुरा विचार नहीं था!

सोने से पहले मैंने धीरे से कहा, "धन्यवाद, अरुण।"

*****

अगले कुछ महीनों में हमारी बातचीत की आवृत्ति बढ़ गई, साथ ही कभी-कभार फोन पर भी बातचीत होती रही। हमें एक-दूसरे के जीवन के बारे में और अधिक जानकारी मिली। साथ ही, मैं सावधानी बरत रहा था और सहजता से आगे बढ़ रहा था। मैंने हर दिन और हर बातचीत को अपने आप आगे बढ़ने दिया। मुझे उसकी संगति अच्छी लगने लगी थी और राघव में एक परिपक्व, बुद्धिमान और सच्चा दोस्त पाकर मैं खुश था।

एक और रविवार की सुबह हो गई और इससे पहले कि यह मुझ पर कोई मुसीबत ला दे, मैंने इसे पूरी तरह से बर्बाद करने का फैसला किया। मैं सबसे बेवकूफी भरी चीजें क्या कर सकती हूँ? चलो देखते हैं... ओह! ता-दा... मैं मम्मी से सबसे तीखा सास-बहू साबुन पूछूंगी, फिर उनसे अपने बालों में तेल लगाने को कहूंगी, उसके बाद मैं

अपने नाखून काटूंगी, मास्क लगाऊंगी और अपना फेसबुक पेज भी अपडेट करूंगी। मैं संतुष्ट थी। इससे ज्यादा बेवकूफी भरा दिन और क्या हो सकता था।

मैंने अपने फेसबुक पेज पर जाने से शुरुआत करने का फैसला किया। इतने लंबे समय से फेसबुक नहीं खुला था कि मुझे अपना पासवर्ड याद ही नहीं था। मेरा पासवर्ड क्या था? pgwodehouse? ekomkar? नहीं... नहीं... उम्म... ओह, याद आया... fir-se-single!

मैंने लॉग इन किया। कई महीने बीत गए थे। नोटिफ़िकेशन, दोस्तों के सुझावों, फ्रेंड रिक्वेस्ट और दुनिया के अलग-अलग कोनों में छुट्टियां मना रहे मेरे दोस्तों की घटिया तस्वीरों से मेरा अकाउंट भरा पड़ा था; कुछ ने मेरी सबसे अच्छी दोस्त की शादी में शामिल होने की बेहूदा सेल्फी क्लिक करके पोस्ट कर दी थीं, तो कुछ अपने मेकओवर या किसी खुद को लाइफ कोच समझने वाले के ज्ञान भरे शब्दों से हुए बदलाव के बारे में शेखी बघार रहे थे। मुझे पूरा यकीन है कि फेसबुक पर मौजूद हर कोई एक ही मकसद के पीछे पड़ा है और वो ये है: साइट पर मौजूद बाकी लोगों को इस धरती पर अपनी उबाऊ, नीरस, अर्थहीन और ग्लैमर से रहित ज़िंदगी पर सवाल उठाने के लिए मजबूर करना! हर कोई इस साइट पर मौजूद हर किसी को ये यकीन दिलाना चाहता है कि उसकी ज़िंदगी बकवास नहीं है!

जब मैं फेसबुक विशेषज्ञों द्वारा मित्र बनने के सुझावों को देख रहा था, तो मैं एक नाम पर रुक गया: तारा जैन, कैलिफोर्निया।

मुझे स्वाभाविक रूप से जिज्ञासा हुई। मैंने उसकी प्रोफ़ाइल पर क्लिक किया। उसमें लिखा था: जीवन से प्यार करने वाली, 35 वर्ष की आयु की एक आर्किटेक्ट और अपने सभी प्यारे दोस्तों की एक स्नेही सहेली, तारा...

उसकी प्रोफ़ाइल देखते-देखते, मैंने उसकी तस्वीर को ध्यान से देखना शुरू किया और पाया कि वह बेहद शालीन और स्टाइलिश थी। ऐसा लग रहा था मानो वह अपने जीवन पर पूरी तरह से नियंत्रण रखती हो। उसकी बादाम जैसी आँखें गहरी नज़र से भरी हुई थीं। मैंने प्रोफ़ाइल को नीचे स्क्रॉल किया।

तारा ने एक हफ्ते पहले एक तस्वीर (लोगों का एक समूह हाथ पकड़े हुए एक घेरे में बैठा हुआ) पोस्ट की थी, जिसका कैप्शन था: 'उन दोस्तों के साथ खुशी के पल जो 'परवाह करते हैं' और एक खास दोस्त जिसकी मैं 'परवाह करती हूं'।'

एक अन्य तस्वीर में, वह शरमाते हुए मुस्कुरा रही थी और एक लड़के के कंधे पर

झुकी हुई थी।
मैं दूसरी पोस्ट देखने ही वाली थी कि अचानक मेरी नज़र उस शख्स पर पड़ी जिसके कंधे किसी काम में लगे हुए थे। मैं चौंक गई। हे भगवान! नहीं! ऐसा हो ही नहीं सकता! ये तो चिराग है! मैंने तस्वीर ज़ूम की... हाँ, ये चिराग ही है। दोनों तस्वीर में मुस्कुरा रहे हैं। क्या ये चिराग की पत्नी है? गर्लफ्रेंड? ये किसे अपना 'खास दोस्त' कह रही है? ये कितनी सुंदर है। दोनों मग्न लग रहे हैं... ध्यान में या एक-दूसरे में?
मैंने बेसब्री से नीचे स्क्रॉल किया, इस उम्मीद में कि चिराग और इस महिला के बीच और भी संबंध देखने को मिलेंगे (या शायद न मिलें?)। लेकिन मुझे आगे कुछ भी नज़र नहीं आया, जिससे मुझे चिंता हुई। कोई भी ऐसी दिलचस्प जानकारी नहीं मिली जिससे किसी महत्वपूर्ण बात का संकेत मिले।
तभी बगल वाले कमरे से माँ की तीखी आवाज सुनाई दी।
'प्यारी बिन्नी, तुम ऑनलाइन हो, फेसबुक पर हो क्या? शुक्र है! मुझे चिंता थी कि तुमने शायद मेरा प्रोफाइल ब्लॉक कर दिया होगा, लेकिन तुम ऐसा कभी सपने में भी नहीं सोचोगी। हम सिर्फ मां-बेटी ही नहीं हैं; हम दोस्त भी हैं!'
मैंने दरवाजे की तरफ देखा, मुझे लग रहा था कि वो किसी भी पल अंदर आ सकती है। क्या मुझे तारा के बारे में और जानकारी जुटानी चाहिए? शायद बाद में...
'बिन्नी, क्या तुम मनाली ट्रिप की वो तस्वीर शेयर कर सकती हो जो मैंने अभी अपलोड की है? मैंने कैप्शन में लिखा है: करीना और मलाइका हट जाओ... हम शहर की नई #बेस्ट फ्रेंड्स हैं... मां-बेटी की जोड़ी। #योमनाली। कमाल है ना? लाइक्स की बारिश होने वाली है। बस देखते रहो... मेरे दोस्त हमारी दोस्ती की तारीफ करते नहीं थकेंगे।'
मेरा मन असमंजस में था। विचारों और शंकाओं के अंबार के बीच, तारा भी अचानक आ गई थी और उलझन को और बढ़ा रही थी।
'माँ, क्या आप मुझे थोड़ी देर के लिए अकेला छोड़ सकती हैं? मैं व्यस्त हूँ।' मैंने आह भरी।
मुझे पता था। मेरी बात को तुरंत न मानने का अपना रिकॉर्ड तुम कैसे तोड़ सकते हो! नहीं! मुझे लगता है कि तुम्हें इस बात से शर्म आ रही है कि लोग जान लें कि तुम फेसबुक पर अपनी ही मां के दोस्त हो।
'मम्मी, क्या आपको यह करना ही पड़ेगा...?'

वह सूंघते हुए और टिशू से अपनी नाक पोंछते हुए कमरे में दाखिल हुई। वह बिस्तर पर बैठ गई। मैंने आह भरी।

‘बेटी, क्या मुझे बुढ़ापे में तुमसे कोई उम्मीद रखनी चाहिए जब तुम अपने फेसबुक पेज पर मेरे साथ एक तस्वीर भी साझा नहीं कर सकती? क्या अपनी ही बेटी से इतनी उम्मीद करना बहुत ज्यादा है? मुझे आज ही बताओ। एक बार और हमेशा के लिए... क्या तुम्हें मेरे साथ देखे जाने में शर्म आती है?’

सूंघने की क्रिया तेज हो गई।

‘बिल्कुल ठीक! मैंने अभी-अभी अपनी फोटो अपने पेज पर शेयर की है और उसके नीचे दो दिल के निशान बनाए हैं।’

माँ के चेहरे पर वही जानी-पहचानी जीत की खुशी थी। 'प्यारे बिन्नी, क्या तुम अपने प्रोफाइल पर भी हैशटैग दोहराओगे? इससे हमें सर्च में ढूंढना आसान हो जाएगा।'

'हां, ठीक है।' मैंने हैशटैग कॉपी-पेस्ट किए और मुझे पता था कि ध्यान भटकाना बेहद जरूरी है।

‘माँ, क्या मैं आपके लिए अदरक-नींबू की चाय बना दूँ? आप बहुत थकी हुई होंगी...।’

*****

दिन भर मेरा ध्यान न तो अपने नाखूनों पर लगा और न ही मम्मी के पसंदीदा सीरियल में बनी अप्सराओं पर। शाम करीब 5 बजे मेरे मोबाइल पर एक मैसेज आया। राघव को 'हाय' लिखते देखकर मैं हैरान रह गई।

मैं: ‘अरे राघव, आज रविवार है। क्या आज तुम्हारा अपने बच्चे के साथ समय बिताने का दिन नहीं है? रविवार को हम आमतौर पर रात में बातें करते हैं, है ना?’

राघव: ‘जी हाँ, जी हाँ... हम अपना रविवार साथ बिता रहे हैं। अभी-अभी तैराकी खत्म की है और सूरज अभी भी पूल में है। मैंने आपको यह बताने के लिए फोन किया था कि कल दिल्ली में एक ग्राहक के साथ एक ज़रूरी मीटिंग तय हुई है। मैं दो दिन आपके शहर में रहूँगा और मंगलवार रात को बेंगलुरु के लिए मेरी वापसी की फ्लाइट है। क्या मैडम कल रात मेरे साथ किसी रेस्टोरेंट में डिनर करना चाहेंगी?’

मैं: ‘ज़रूर... वाह! चलिए मिलते हैं।’

राघव: 'बहुत बढ़िया! मैं कल दोपहर आपसे संपर्क करूंगा और हम एक योजना बनाएंगे। मुझे दिल्ली के अधिकांश स्थानों के बारे में अच्छी जानकारी है और हां, अगर

आप अपनी पसंदीदा जगह चुनते हैं जहां मैं नहीं गया हूं, तो गूगल मैप्स मेरी मदद करेगा।'

मैं: 'ज़रूर... कल मिलते हैं।'

*****

अगले दिन मैं हमेशा से ज़्यादा खुश थी। मैंने माँ की गपशप सुनकर भी मुस्कुरा दिया और उन्हें बताना नहीं भूली कि मैं रात के खाने के लिए बाहर जा रही हूँ। माँ भी काठी रोल की एक नई रेसिपी आज़माने में इतनी व्यस्त थीं कि उन्होंने मेरे डिनर डेट के बारे में ज़्यादा नहीं पूछा।

दिन बीत गया, मैं घर लौटी, शाम के लिए तैयार हुई और योजना के अनुसार शाम 7 बजे घर से निकल गई। राघव ने मुझे समय तय करने और रेस्तरां के स्थान की पुष्टि करने के लिए पहले ही दो बार फोन कर दिया था, जिसे मैंने चुना था क्योंकि वह मेरे पसंदीदा रेस्तरां में से एक था।

मैं ठीक समय पर, शाम 7:30 बजे पहुँच गया और देखा कि राघव पहले से ही एक कोने में बैठा हुआ था। जैसे ही मैं उसके पास पहुँचा, मैंने देखा कि वह अपनी उम्र (42 वर्ष) का बिल्कुल भी नहीं लग रहा था; वह बहुत छोटा दिख रहा था। उसके सांवले चेहरे पर एक मासूम सा लड़कपन था और फिर भी वह शांत और सहज लग रहा था। लेकिन अरे, अजीब बात है... उसके होंठ इतने गहरे रंग के क्यों हैं? कोई बात नहीं... वह अपनी प्रोफ़ाइल तस्वीर से कहीं ज़्यादा असल में अच्छा दिखता है! मैं एक पल के लिए झिझका, लेकिन फिर उसकी तरफ़ बढ़ गया।

'मैडम लीना! आपसे मिलकर आखिरकार बहुत खुशी हुई,' राघव ने मुझसे हाथ मिलाने के लिए उठते हुए कहा।

'राघव, आपको भी। वैसे, मुझे खुशी है कि आप समय पर आए हैं,' मैंने बदले में आपकी प्रशंसा की।

समय का महत्व समझना मेरे जीवन के प्रमुख सिद्धांतों में से एक है! अब, क्या हम पहले ऑर्डर कर लें और फिर आगे बढ़ें? मुझे बहुत भूख लगी है।

पहले तो हमने शाकाहारी ऐपेटाइज़र और मॉकटेल ऑर्डर किए और बातें करने लगे। राघव मुझमें किसी बात से मोहित हो गया था, और यह समझना मुश्किल नहीं था। बाद में उसने माना कि वह मेरी मुस्कान पर मंत्रमुग्ध हो गया था। वह एक कुशल वक्ता था और अपनी हाजिरजवाबी और हास्यबोध से मुझे हमेशा उत्साहित रखता था।

अपने बेटे के साथ अपने रिश्ते के बारे में प्यार से बात करते हुए उसकी परिपक्वता झलकती थी। उसने मुझसे कभी भी बदले में वैसी ही बातें करने की अपेक्षा नहीं की। उसका बेफिक्र व्यवहार और सहजता मुझे सबसे ज्यादा भा गई। उसके साथ बातचीत करते समय जरा भी दबाव या बोझ महसूस नहीं हुआ।

रात के खाने के बाद, मुझे उसके साथ कुछ ही कदम दूर स्थित एक छोटे से रेस्तरां में टहलने में कोई आपत्ति नहीं थी। काफी देर हो चुकी थी, लेकिन मैंने माँ को संदेश भेज दिया था और अब तक सब कुछ ठीक चल रहा था।

अचानक राघव चलना बंद करके मेरी तरफ देखते हुए बोला: 'लीना, अगर आप मुझे माफ़ करें तो मुझे सिगरेट पीनी है। क्या आप जा सकती हैं और मैं पाँच मिनट में आपके पास आ जाऊँगा?'

मुझे इस बात पर आपत्ति तो थी, लेकिन मैंने बस सिर हिलाया और अकेले ही बिस्ट्रो की ओर चल पड़ी। ओह, यही उसके काले होंठों का कारण था, अब मुझे समझ आ गया था। मैं अभी ठीक से बैठी ही थी कि कुछ ही मिनटों में राघव आ गया। हमने दो कैपुचीनो ऑर्डर किए।

राघव के बोलने तक सन्नाटा छाया रहा। “मैं धूम्रपान करता हूँ। हुआ यूँ कि तलाक के बाद, जिसके लिए मैं बिल्कुल भी तैयार नहीं था, एक बच्चे की अकेले परवरिश की ज़िम्मेदारी मुझ पर आ पड़ी, और अपने करियर में आगे बढ़ने के दबाव के साथ-साथ, मैंने धूम्रपान शुरू कर दिया। एक समय यह मेरे लिए ज़रूरी था। दस साल हो गए, लेकिन अब मैंने धीरे-धीरे कम करने और अंततः छोड़ने का फैसला किया है। यह आसान नहीं होगा, लेकिन मैंने जीवन में इससे भी कठिन समय देखे हैं। मेरी पत्नी हमें —मुझे और सूरज को—तब छोड़कर चली गई जब वह मुश्किल से छह महीने का था। उस समय हम संयुक्त राज्य अमेरिका में थे और मैं अपने करियर के शिखर पर था। मुझे अचानक तब झटका लगा जब एक दिन मैं घर आया और मुझे उसका हाथ से लिखा हुआ एक नोट मिला, जिसमें लिखा था, “मैं जा रही हूँ, राघव। मैं अपने करियर से समझौता नहीं कर सकती, और मुझे डर है कि अब जब हमारा एक बच्चा है, तो मुझे ऐसा करना ही पड़ेगा। मुझे लगता है कि गलती दोनों की थी, लेकिन मैं अब अपने बाकी जीवन को दांव पर नहीं लगा सकती। मुझे पता है कि तुम एक अच्छे पिता बनोगे। अलविदा!””

जिस गंभीरता से उन्होंने बात की, उसे देखकर मेरी आँखों में आंसू आ गए। बेचारा,

उसने कितना कुछ सहा है, फिर भी वह इतना सहज है...
उन्होंने आगे कहा, 'लीना, मेरे लिए यह बिल्कुल भी आसान नहीं था। अचानक ही, छह महीने के बच्चे की देखभाल और प्रबंधन की पूरी जिम्मेदारी मुझ पर आ गई; घर की देखभाल और काम की जिम्मेदारियों को भी निभाना मेरे ऊपर आ गया। मैंने नौकरी छोड़ दी, भारत वापस आ गया और अपने माता-पिता के घर के पास रहने लगा। जब मैं आसपास नहीं होता था, मेरी माँ मेरे बेटे की देखभाल करती थी।'
मुझे खुशी है कि जो कुछ भी हुआ है, उसके परिणामस्वरूप आप कड़वे स्वभाव के व्यक्ति नहीं बने हैं।
मैंने इसे इस तरह समझा—जो होना तय है, वही होकर रहता है। तो फिर, इस वास्तविकता को क्यों न स्वीकार किया जाए? मुझे थोड़ा समय लगा, लेकिन आखिरकार मैंने इसे स्वीकार कर लिया और अपनी पत्नी को माफ कर दिया। तब से, मुझे अपने बेटे में एक दोस्त मिल गया है। हमारा रिश्ता बहुत गहरा है और वही मेरे जीने का मकसद है। इन सभी वर्षों में मैंने किसी और साथी की तलाश नहीं की और जब अरुण ने जोर देकर कहा कि मैं ऐप पर रजिस्टर कर लूँ, तो मैं अनिच्छा से मान गया। लेकिन देखो, मुझे तुम मिल गए।
मैं शर्म से लाल हो गई। मैं विषय बदलना चाहती थी, लेकिन वह बोलता ही रहा।
आपमें कुछ ऐसा है जो मुझे यह विश्वास दिलाता है कि जीवन को दूसरा मौका मिलना चाहिए। आपमें सब कुछ सूक्ष्म और शांत है। यह मुझे आकर्षित करता है और आपकी संगति में मुझे सुकून मिलता है। कई वर्षों बाद, मुझे लगता है कि मैं किसी के साथ अपना जीवन साझा करना चाहता हूँ और वह कोई और नहीं बल्कि आप ही हैं। मैं आपको सिर्फ दोस्त से बढ़कर जानना चाहता हूँ। मैं इस रिश्ते को पूरी ईमानदारी से निभाना चाहता हूँ, भले ही हम अलग-अलग शहरों में रहते हों। मुझे नहीं पता कि भविष्य में क्या होगा क्योंकि मेरे लिए अपने बेटे की परवरिश करना सबसे बड़ी प्राथमिकता है। अभी तुरंत दूसरी शादी करना संभव नहीं है, लेकिन वर्तमान इतना खूबसूरत है कि मैं भविष्य में इसे साकार करने की दिशा में काम करना चाहता हूँ। आपके विचार जानना मेरे लिए महत्वपूर्ण है और क्या आपके कोई प्रश्न हैं?
वह काफी देर तक बोलते रहे, और मैं श्रोता के विशेषाधिकार के समान उस तल्लीनता में खो जाने का आनंद ले रहा था। जब उन्होंने दोहराया, 'तो, आप क्या सोचते हैं?', तब मैं तल्लीनता से बाहर आया। मैं उन्हें पसंद तो करता था, लेकिन इतने बड़े खुलासे

के लिए तैयार नहीं था। राघव ने जो कहा था वह बहुत महत्वपूर्ण था, लेकिन मैं जानता था कि मुझे उनके साथ ईमानदार रहना होगा।

खैर, ये सब सुनना मेरे लिए थोड़ा मुश्किल है, लेकिन साझा करने के लिए धन्यवाद। आपकी शादी टूटने की खबर सुनकर दुख हुआ, लेकिन आपने जिस तरह से हिम्मत जुटाई और फिर से संभली, वो सराहनीय है। उम्मीद है आप और आपका बेटा अच्छे दोस्त बने रहेंगे। हमारी बात पर वापस आते हैं—हाँ, मुझे आप एक दोस्त के रूप में अच्छे लगते हैं। हमारे बीच एक तरह का जुड़ाव महसूस हो रहा है। मुझे आपमें वो इंसान दिखता है जिसके साथ मैं अपना जीवन बिताना चाहूँगी। हालाँकि, इस समय न तो मैं तुरंत किसी रिश्ते में बंधने के लिए तैयार हूँ और न ही आप इसके लिए पूरी तरह से तैयार लग रहे हैं। जैसे आपको अपने बेटे के बारे में सोचना है, वैसे ही मुझे भी आपके और आपके बेटे के बारे में सोचना है। हम दोनों ने जो कुछ भी झेला है, उसके बाद मैं अब और जोखिम नहीं लेना चाहती। बेशक, आपकी सिगरेट पीने की आदत मुझे परेशान करती है, लेकिन इससे मेरे फैसले पर ज्यादा असर नहीं पड़ेगा। मैं आपको तीन महीने से जानती हूँ। मुझे लगता है कि जब आप कहते हैं कि आप सिगरेट छोड़ देंगे, तो आप सच में ऐसा ही सोचते हैं।

उन्होंने मेरी तरफ देखा और बिल मंगवाने से पहले मुस्कुराए। आगे कुछ कहने की ज़रूरत नहीं थी। मैंने अपने लिए एक टैक्सी बुक की और जब हम दोनों टैक्सी का इंतज़ार कर रहे थे, राघव ने कहा, 'यह मेरी ज़िंदगी की सबसे शानदार शामों में से एक थी। मैं कल शाम 6 बजे तक यहीं हूँ। एक और कप कॉफ़ी पी लें? लेकिन अगर आप चाहें तो...'

इसी बीच टैक्सी आ गई। मैंने उसे देखकर मुस्कुराया; हमने हाथ मिलाया और अलविदा कहा।

मैंने ऐसा दिखाया जैसे मुझे पता ही नहीं चला कि उसकी आँखें उदास थीं। मैं टैक्सी में बैठ गई और रास्ते में अपनी नम आँखों को पोंछती रही। ज़रूर कोई बात मुझे अंदर ही अंदर परेशान कर रही थी। क्या मैंने सही बातें कह दीं? क्या मैं इस रिश्ते को गंभीरता से ले सकती हूँ? क्या मुझे लेना चाहिए? उसका एक बेटा है! आठ साल का बेटा! हम दोनों एक-दूसरे को कैसे स्वीकार करेंगे? क्या मैं किसी बहुत जटिल मामले में उलझ रही हूँ? क्या मुझे उसे मैसेज करके बता देना चाहिए कि अब आगे कुछ भी संभव नहीं है? ये सवाल मेरे दिमाग में तब तक घूमते रहे, जब तक मैं घर नहीं पहुँच गई।

*****

अगले दिन, मैं किसी और चीज़ पर ध्यान केंद्रित नहीं कर पा रही थी। मैंने जल्दी घर जाने का फैसला किया, इस उम्मीद में कि दोपहर तक मेरा मन शांत हो जाएगा। मेरा मन बहुत बेचैन था, मेरे अपने भ्रम और किसी के प्रति पूरी तरह से प्रतिबद्ध न हो पाने की उसकी लाचारी के बीच विचार उलझे हुए थे। फिर भी, मैं उसके बारे में सोचना पूरी तरह से बंद नहीं कर पा रही थी, क्योंकि वह संवेदनशील, आकर्षक और बुद्धिमान भी था। साथ ही, कई सवाल मन में उठ रहे थे... क्या होगा अगर उसके बेटे को मैं पसंद न आऊं? क्या होगा अगर वह अगले पांच सालों में भी अपना मन न बना पाए? क्या होगा अगर वह झूठ बोल रहा हो और सिर्फ मौज-मस्ती करना चाहता हो?

शाम करीब 5 बजे मैंने राघव के मैसेज की उम्मीद में अपना मोबाइल चेक किया, लेकिन कोई मैसेज नहीं था। मैंने उसे कॉल करने का फैसला किया।

‘हेलो राघव, क्या मैं आपको परेशान कर रहा हूँ?’

‘नहीं, बिलकुल नहीं,’ उसने तुरंत जवाब दिया। ‘मैंने अभी-अभी अपना सारा काम खत्म किया है और अपना सामान लेने होटल वापस जा रहा हूँ। हालाँकि मेरी फ्लाइट रात 10 बजे है, लेकिन मेरा इरादा आज टर्मिनल के अंदर सभी कॉफी शॉप्स में घूमने का है।’ यह कहते हुए वह हँस पड़ा।

मेरे मुंह से बस ये शब्द निकल पड़े, 'क्या आप मिलना चाहेंगे?'

उनका जवाब तुरंत आया, 'बिल्कुल, हाँ।'

मुझे एक कैफे के बारे में पता है जो हवाई अड्डे के रास्ते में पड़ता है। यह मेरे लिए भी ज्यादा दूर नहीं है। मैं आपको लोकेशन भेज देता हूँ, और एक घंटे में मिलते हैं।

जब हम अपनी कैपुचीनो की चुस्कियां ले रहे थे, तो मैंने गौर किया कि राघव बार-बार मेरी तरफ देख रहा था। उसकी आंखें कई सवालों के जवाब तलाश रही थीं, लेकिन वह चुप रहा।

तो, दिल्ली की यह यात्रा कैसी रही? क्या कुछ अलग थी?

‘अहा! मैं कहूंगा कि इस बार यह बेहद खास था,’ राघव ने शरारती अंदाज में आंख मारते हुए कहा।

बिना लाग-लपेट के, मैंने पूछा, 'क्या होगा अगर आप कई सालों तक फैसला न कर पाएं? क्या होगा अगर आपका बेटा सहमत न हो?'

वह थोड़ा चौंक गया, लेकिन जल्दी ही खुद को संभालते हुए बोला, 'मुझे नहीं पता,

लेकिन मैं हमारे रिश्ते को सुधारने की पूरी कोशिश कर रहा हूँ। फिलहाल, मैं समय को अपना काम करने दे रहा हूँ, लेकिन तुम्हारे जैसी अद्भुत इंसान को जानने का मौका गंवाना नहीं चाहिए। चलो पल में जीते हैं! क्या तुम सहमत नहीं हो?'

मैंने कॉफी का आखिरी घूंट पिया, मग नीचे रखा और सीधे उसकी ओर देखते हुए कहा, 'कल शाम से तुम मेरे दिमाग में हो। कल रात मैंने जो कहा, उससे मैं खुश नहीं हूँ। राघव, मैं भी तुम्हें पसंद करती हूँ, लेकिन थोड़ी चिंतित हूँ।'

उनकी आवाज में कोमलता थी जब उन्होंने कहा, 'मैं आपकी चिंताओं को समझता हूं। मैं उन्हें धीरे-धीरे दूर करने की पूरी कोशिश करूंगा।'

हम दोनों ने एक-दूसरे को प्यार भरी नजरों से देखा और मुस्कुराए। राघव के जाने का समय हो गया था। हम दोनों अपनी-अपनी कैब की ओर चल पड़े। उसके बाद जो गले मिलना हुआ, वह सहज और स्नेह तथा आशा से भरा हुआ था।

टैक्सी में बैठते ही मैंने झिझकते हुए खुद से पूछा, क्या मैंने अभी-अभी डेटिंग शुरू की है?

*****

वसंत का मौसम तो नहीं था, लेकिन मेरे कदमों में और मेरे पूरे अस्तित्व में वसंत की ताजगी थी। हवा मेरे गालों को सहलाते हुए कोमल लग रही थी, हवा सुगंधित थी और आसमान मुस्कुरा रहा था... मैं जवान महसूस कर रही थी। अगले एक महीने तक, मेरे आस-पास के सभी लोग यही कहते रहे: अरे लीना, क्या बात है? क्या प्यार है? तुम्हारा चेहरा दमक रहा है... तुम्हारी आँखें और भी चमक रही हैं! क्या तुम्हें तुम्हारा 'प्यार' मिल गया?

वीकेंड में वीडियो कॉल, वीकेंड के बाद शाम को चैट और ज़रूरी बातें शेयर करने के लिए नियमित मैसेज—ये सब मेरे लिए दिनचर्या का हिस्सा बन गए थे। माँ बहुत ध्यान रखती थीं और मुझसे ज़्यादा पूछताछ नहीं करती थीं। हर माँ को जो अद्भुत क्षमताएँ प्राप्त होती हैं, वे भले ही दुनिया को दिखाई न दें, लेकिन वे सबसे शक्तिशाली होती हैं और एक आम इंसान की समझ से परे होती हैं! ये क्षमताएँ लगभग पूरी सटीकता से सभी संकेतों को ग्रहण करती हैं और इनसे कुछ भी नहीं छूटता।

एक दोपहर, जब हम दोनों बिस्तर पर आराम कर रहे थे, उसने हैरानी से कहा, 'क्या वह मद्रासी नहीं है?'

मैं दंग रह गया। आखिर उसे कैसे पता चला? इससे पहले कि मैं खुद को संभाल पाता

और सदमे से उबर पाता, उसने मज़ाकिया लहजे में कहा, 'मुझे पता है कि वह बेंगलुरु का मद्रासी है या दक्षिण भारत का कोई व्यक्ति है। उम्मीद है आपको तमिल ब्राह्मण से हुई आपकी पिछली मुलाकात याद होगी। अगर आपको याद हो तो वह एक खट्टा-मीठा अनुभव था... और बिन्नी, क्या आपको नहीं लगता कि यह भी कुछ ज़्यादा ही अंधेरा है? जब आप वीडियो चैट पर थे तो मैंने बस एक बार झाँका था। कसम से, मैंने आपकी बातचीत नहीं सुनी।'

'लेकिन माँ...', मैंने विरोध किया।

'बेटा, मैंने तो बस यूं ही कह दिया था। मैं बस यही चाहती हूं कि तुम्हें कोई ऐसा मिले जिसका दिल तुम्हारे जैसा ही अच्छा हो। उसे तुम्हारी अहमियत और तुम्हारे अनमोल होने का एहसास होना चाहिए। उसे पता होना चाहिए कि तुम्हें पाकर वह कितना खुशनसीब है। मुझे नहीं पता कि यही वो लड़का होगा या नहीं, लेकिन मैं तुम्हारे लिए तब तक प्रार्थना करती रहूंगी जब तक तुम्हें वो मिल न जाए। तुम्हारे रास्ते में बहुत सी रुकावटें आई हैं। तुम कई बार निराश हो चुकी हो। अब तक तो तुम्हारा मन सब कुछ छोड़ देने का कर रहा होगा। लेकिन ऐसा मत करना। चाहे ये लड़का भी तुम्हारा दिल तोड़ दे या तुम्हें सहारा दे, मुझे नहीं पता, लेकिन तुम्हें उम्मीद नहीं छोड़नी चाहिए। कहीं न कहीं कोई लड़का जरूर है... और एक दिन हम उसे जरूर ढूंढ लेंगे। मुझे पूरा यकीन है।'

मुझे बोलने में मुश्किल हो रही थी तभी उसने मेरे हाथ पर थपथपाया और चुपचाप कमरे से बाहर निकल गई, और बोली, 'बिन्नी, मैं चाय बनाती हूँ... चलो आज सुबह मैंने जो बेसन के लड्डू बनाए थे, उन्हें चखते हैं।'

क्या मैंने अपने पेट में पहले से ही पर्याप्त लड्डू नहीं भर लिए हैं? मैं कहना चाहता था, लेकिन फिर मैंने उन्हें नाराज़ न करने का फैसला किया, वरना माँ ज़रूर बेसन के लड्डू मुझ पर फेंक देती और मेरा मुँह शायद निशाना चूक जाता।

उसके बाद के दिनों में उसने ज्यादा कुछ नहीं पूछा, लेकिन उसकी निगाहें जिज्ञासा से भरी थीं। साथ ही, वह मेरे लिए और भी प्रोफाइल स्कैन करती रही और मुझे पढ़ने के लिए कुछ प्रोफाइल भेजती रही।

******

लगभग एक महीने बाद एक दिन राघव ने फोन किया तो मैंने कहा, 'अरे, तुम इस सप्ताहांत क्यों नहीं आ जाते? मेरा तुमसे मिलने का मन कर रहा है।'

उनका लहजा थोड़ा रक्षात्मक था जब उन्होंने तुरंत जवाब दिया, 'यह संभव नहीं है, लीना। सप्ताहांत पूरी तरह से सूरज के लिए हैं। मैं देखता हूं कि क्या मैं इस महीने के अंत में दिल्ली में कुछ काम से संबंधित बैठकें आयोजित कर सकता हूं।'

हालांकि मेरी आवाज़ सामान्य थी और मैंने बड़े ही सौहार्दपूर्ण ढंग से उनसे कहा, 'ओह, कोई बात नहीं,' फिर भी मुझे थोड़ा अजीब सा महसूस हो रहा था। क्या हम तब मिलेंगे जब दिल्ली में उनका कोई काम होगा? मैंने सोचा। अगले ही पल मैंने खुद को डांटा, अरे, उन्हें काम तो करना ही है... उन्हें अपने बच्चे की देखभाल करनी है। मैं ऐसी बेतुकी मांगें कैसे कर सकती हूँ? मैं कितनी मूर्ख थी!

****

अगले कुछ महीनों में, राघव और मैं दो बार मिले, लेकिन हमारी मुलाकातें (एक कप कॉफी पर) काम खत्म करने और वापसी की फ्लाइट पकड़ने के बीच ही हो पाईं। फिर भी, मैं खुश था क्योंकि राघव बाकी सब कामों के बीच मुझसे मिलने की कोशिश कर रहा था। हमारी आखिरी मुलाकात के एक हफ्ते बाद, राघव ने एक दिन फोन किया। उसकी आवाज़ कुछ ज़्यादा ही उदास लग रही थी।

‘अरे, सब ठीक है? क्या हुआ? क्या तुम बीमार हो? उम्मीद है कि तुम अपनी हमेशा की शरारतों और मुझे बेवकूफ बनाने के मूड में नहीं हो...’

राघव ने उदास स्वर में कहा, ‘मेरी कंपनी लंबे समय से गिरावट के दौर से गुजर रही है। आप जानते ही हैं कि स्टार्टअप कैसे होते हैं। सब कुछ ठीक चल रहा था, फिर अचानक कोई गड़बड़ हुई, कोई नुकसान हुआ और फिर गिरावट शुरू हो गई... मैंने इसे फिर से पटरी पर लाने की कोशिश की, लेकिन हालात जटिल लग रहे हैं।’

‘तो फिर? अब आगे क्या?’

कुछ खरीदारों के साथ बातचीत चल रही है। मैं आने वाले महीनों में कुछ निवेशकों के सामने अपने विचार रखूंगा। मुझे उम्मीद है कि मेरे कर्मचारियों की नौकरियां सुरक्षित रहेंगी।

'ओह, यह तो वाकई दुखद है। लेकिन आप चिंता न करें। जीवन में अक्सर अप्रत्याशित मोड़ भी आते हैं। क्या मैं कुछ कर सकता हूँ?'

'लीना, कोई कुछ नहीं कर सकता। हमें बस इंतजार करना होगा और देखना होगा।'

****

हालांकि मैं इस अप्रत्याशित मोड़ को लेकर उसके लिए चिंतित थी, लेकिन मैं अपने

भविष्य के बारे में सोचने से खुद को रोक नहीं पाई। अब क्या? दो महीने और बीत गए। राघव जब भी बात करता, हमेशा चिंतित और उदास लगता था और उसने वीडियो कॉल की आवृत्ति भी कम कर दी थी।

रविवार की सुबह नाश्ते की मेज पर, माँ ने आखिरकार अपनी चुप्पी तोड़ी, 'लीना, पिछले छह महीनों से तुम्हारे साथ क्या हो रहा है? मुझे तुममें बदलाव नज़र आ रहा है। कभी तुम बहुत खुश रहती हो, तो कभी उदास। क्या यह उस मद्रासी लड़के की वजह से है? हमें साफ-साफ बताओ... मैं तुम्हें बहुत सारे प्रोफाइल भेज रही हूँ, लेकिन न तो तुम उन्हें देखती हो और न ही जवाब देती हो। क्या कोई ऐसी बात है जो हमें पता होनी चाहिए?'

पापा के चेहरे पर भी चिंता की झलक दिखाई दे रही थी। आमतौर पर मम्मी द्वारा शुरू की गई ऐसी-ऐसी बातों में वो चुप रहते थे और मुस्कुराते हुए दिखते थे, लेकिन उस दिन वो साफ तौर पर चिंतित थे।

'मुझे माफ़ करना... बस मैं व्यस्त थी। और नहीं, और कुछ नहीं है। मैं आज उनसे मिल लूंगी,' मैंने बस इतना ही कहा। मैंने जल्दी से नाश्ता खत्म किया और अपने कमरे में वापस चली गई। पापा का परेशान चेहरा देखकर मैं बेचैन हो गई थी। बस बहुत हो गया, मैंने सोचा। मुझे जानना ज़रूरी है कि हम कहाँ जा रहे हैं। मैं समझती हूँ कि वह किस दौर से गुज़र रहे हैं, लेकिन मेरी भी तो ज़िंदगी है! मैं अपने माता-पिता को क्या बताऊँ? मुझे इंतज़ार करने में कोई दिक्कत नहीं है, लेकिन कब तक? इन सब विचारों के साथ मैंने राघव को फ़ोन किया। हालाँकि रविवार की सुबह सूरज के लिए ही होती है, लेकिन मैंने इस नियम को नज़रअंदाज़ करने का फैसला किया।

फोन लगातार बजता रहा लेकिन किसी ने जवाब नहीं दिया।

मैंने दोपहर में एक बार फिर फोन किया। कोई जवाब नहीं मिला।

मैंने रात में व्हाट्सएप पर मैसेज छोड़ा था।

अगले दिन राघव ने फोन किया। 'अरे, मुझे बहुत खेद है। कल मैंने आपके फोन नहीं उठाए। मैं शहर के बाहरी इलाके में एक फार्महाउस में सूरज के साथ खेती कर रहा था। हमने कुछ बीज बोए और कुछ सब्जियां तोड़कर धोईं, फिर हम सब, मेरे माता-पिता सहित, जमीन का एक और टुकड़ा देखने गए जिसे मेरा भाई खरीदने पर विचार कर रहा है।'

'अरे, राघव, अगर कोई आपात स्थिति होती तो क्या होता? कम से कम तुम कॉल

उठा लेते या मैसेज कर देते। इससे तुम्हारे परिवार के साथ बिताए सुखद समय में दो मिनट की भी खलल नहीं पड़ती,' मैंने चिढ़कर कहा।

मैंने आपको बताया था कि मैं अपने बच्चे और परिवार के बाकी सदस्यों के साथ थी। मैं बस बहुत व्यस्त थी।

मुझे उनका जवाब पसंद नहीं आया, लेकिन मैंने आगे बहस न करने का फैसला किया। 'ठीक है, मैं आपको बताना चाहता था कि अगले हफ्ते बेंगलुरु के एस.एम. कॉलेज में मेरा एक लेक्चर है। मैं सोच रहा था कि यह आपके और बच्चे के साथ रात के खाने पर मिलने का अच्छा मौका होगा।'

दूसरी तरफ से सन्नाटा छा गया और मैं तनाव महसूस कर सकती थी। मैंने धीरे से पूछा, 'अरे, क्या हुआ? क्या आपको मेरी बात सुनकर खुशी नहीं हुई? हम महीनों से नहीं मिले हैं, और मुझे लगता है कि सूरज से मिलना भी अच्छा रहेगा। मैंने आपके बच्चे के बारे में इतनी अच्छी बातें सुनी हैं कि मैं उससे मिलने के लिए बेताब हूँ।'

'उससे मिलने की क्या जरूरत है, लीना? मैं उसे क्या बताऊंगा?' उसकी आवाज थकी हुई लग रही थी।

'उसे बता दो कि हम दोस्त हैं। बस इतना ही। क्या कभी ऐसा नहीं होता कि तुम अपने दोस्तों से उसके साथ किसी अनौपचारिक डिनर पर मिलो?'

फिर एक मिनट का लंबा विराम आया।

'नहीं, मुझे नहीं लगता कि यह अच्छा विचार है,' राघव ने रूखेपन से जवाब दिया।

'क्यों नहीं?' इस बार मैं चर्चा से बचना नहीं चाहता था, क्योंकि मुझे पता था कि यह एक अप्रिय मोड़ लेने वाली है।

'क्योंकि मुझे ऐसा नहीं लगता! सूरज ने मुझे कभी भी मेरी किसी महिला मित्र के साथ नहीं देखा है।'

'मैं अगले हफ्ते ही आऊंगा। आप उसे बता दीजिए कि दिल्ली से एक दोस्त आ रहा है? कितना आसान है!'

'मैंने मना कर दिया।' उसकी आवाज सख्त थी।

मैंने शांत स्वर में जवाब देने की कोशिश की, 'राघव, क्या बात है? ये झिझक क्यों? हम बच्चे को ये नहीं बता रहे कि हम डेटिंग कर रहे हैं। भला दुनिया में किसके दोस्त नहीं होते और कौन सा बच्चा ये नहीं समझेगा कि तुम्हारे दोस्त हैं जिनके साथ तुम और वो खाना खा सकते हो?'

‘तुम इसे जाने क्यों नहीं दे रहे? मैं अपने बच्चे को जानती हूँ... वो नाराज़ होगा। उसने मुझे कभी किसी दूसरी महिला के साथ नहीं देखा। और, ये अधीरता क्यों? सप्ताहांत में क्या हुआ? मुझे नहीं पता था कि तुम इतने जिद्दी हो!’

‘और मेरा क्या? आज तो आप मुझे जिद्दी और अधीर समझते हैं, लेकिन मेरी अब तक की सहनशीलता को नज़रअंदाज़ कर देते हैं! मैं काफी समय से आपके इस टालमटोल वाले रवैये को झेल रही हूँ। मुझे पता है कि काम पर हालात मुश्किल हैं, लेकिन मुझे नहीं लगता कि आप दो अलग-अलग पहलुओं को समझ सकते हैं। ज़िंदगी चलती रहती है... काम से जुड़े उतार-चढ़ाव तो हर किसी की ज़िंदगी में होते हैं। अगर हर कोई अपने पेशे में स्थायी स्थिरता आने का इंतज़ार करे, तो कोई भी पचास साल की उम्र तक शादी नहीं करेगा। क्या आपको नहीं लगता कि रिश्ते ज़िंदगी में ज़्यादा ज़रूरी हैं? मैं आपसे कल ही शादी करने के लिए नहीं कह रही, लेकिन कम से कम कभी-कभार इस बारे में बात तो कर लें कि हम किस दिशा में जा रहे हैं। पेशेवर जीवन में संघर्ष के बावजूद निजी जीवन में कुछ कदम आगे बढ़ाने में कोई बुराई नहीं है। मैं बस इतना कह रही हूँ कि कम से कम हम तीनों एक बार मिल लें।’

इसके बाद फिर से विराम आ गया।

'लीना, मेरे दिमाग में बहुत कुछ चल रहा है। इस समय मैं अपने काम के अलावा और कुछ नहीं सोच सकती। बस इतना ही!'

'हाँ, इसीलिए तो तुम कल पूरे दिन खेती कर रहे थे! जब बाकी सब कुछ सामान्य रूप से चल रहा है, और तुम परिवार के साथ पूरा दिन बिता सकते हो—तो फिर हमें बिना किसी कारण के अपने मोर्चे पर काम क्यों रोकना है?'

देखो, मैं इस बेतुकी बहस में नहीं पड़ना चाहता। मैं इस समय बहुत व्यस्त हूँ। मुझे नहीं लगता कि बच्चे से मिलना ठीक रहेगा। सच तो यह है कि मुझे लगता है कि इस समय मिलना भी ठीक नहीं है। तुम आओ, अपना भाषण दो और अपने दूसरे दोस्तों के साथ योजना बना लो। मुझे समय चाहिए। मुझे इस स्थिति से उबरने दो, फिर मैं आकर तुमसे मिलूंगा।

‘आपका क्या मतलब है—कि इस समय हमारी मुलाकात करना अच्छा विचार नहीं है?’

'लीना, मुझे लगता है कि मैं फिलहाल इससे अलग हो जाऊंगी। इस समय मैं किसी के साथ प्रतिबद्ध नहीं हो सकती। बच्चे की परवरिश मेरी प्राथमिकता है और मुझे एहसास

है कि अगले 3-5 सालों तक हम कहीं भी आगे नहीं बढ़ पाएंगे। मैं तुम्हें रोकना नहीं चाहती।'

मेरे सबसे बुरे डर सच हो रहे थे। मैं कुछ पल के लिए स्तब्ध रह गया, फिर जल्दी ही संभल गया। 'क्या यह आपका फैसला है? या, क्या आप इस पर विचार कर रहे हैं? क्या आप काम में होने वाली परेशानियों जैसी किसी बात के लिए या सूरज के सहन न कर पाने की किसी अजीब आशंका के लिए हमें कुर्बान करना चाहते हैं? कल आपका कारोबार खूब फले-फूले, लेकिन जो दर्द आप पहुंचा रहे हैं या जो खालीपन आप मेरे और अपने जीवन में पैदा कर रहे हैं, वह शायद कभी भर न पाए।'

'सुनो लीना। अगर तुम हमारे मौजूदा रिश्ते से खुश हो, तो मुझे भी कोई आपत्ति नहीं है, लेकिन अगर तुम इससे आगे कुछ चाहती हो, तो मुझे लगता है कि अलग हो जाना ही बेहतर होगा। अगर हालात सुधरते हैं, तो मैं तुमसे मिलने आऊंगा।'

जिस सहज और भावहीन ढंग से उसने बात की—बिना किसी भावना या झिझक के—उसने मुझे शब्दों से कहीं ज़्यादा दुख पहुँचाया। लोगों को पहचानने में मुझसे फिर से गलती होने की संभावना मेरे सामने स्पष्ट रूप से दिखाई दे रही थी। मैं सोच रही थी कि मैंने इस व्यक्ति को परिपक्व और संवेदनशील क्यों समझा और मैंने यह निष्कर्ष कैसे निकाला कि वह मेरा 'खास' हो सकता है? मैं इस मामले को पूरी तरह से सुलझाने से नहीं डर रही थी। मैं किसी भी तरह की दुविधा के साथ हार नहीं मानना चाहती थी।

मैंने सपाट स्वर में पूछा, 'जब हालात सुधरेंगे तो आप मुझसे मिलने आएंगे, लेकिन अगर मुझसे मिलने के बाद आपका कारोबार फिर से ठप हो जाए तो क्या होगा? क्या आप हमें फिर से उसी तरह खतरे में डालेंगे, जैसा आप अभी कर रहे हैं?'

'मुझे नहीं पता, लीना, क्या होगा और कब होगा। मैं ज्योतिषी नहीं हूँ।'

लेकिन, मैं जानती हूँ। मुझे लगता है कि मैं तुम्हारे रिश्ते को खत्म करने के फैसले से सहमत हूँ। मैं किसी ऐसे व्यक्ति के साथ रहने की बजाय खुद के साथ रहना पसंद करूँगी जो अपने जीवन की असंबद्ध घटनाओं के बीच अंतर और संतुलन नहीं बना सकता। राघव, अच्छे पलों के लिए धन्यवाद।

'लीना, हम संपर्क में रह सकते हैं,' राघव ने उसे शांत करते हुए कहा।

अपना ख्याल रखना, अच्छा करना।

*****

डेढ़ महीने बाद मुझे राघव का संदेश मिला, जिसमें लिखा था, 'हे, कैसी हो लीना? मैं ठीक हूँ। अब सब कुछ सुचारू रूप से चल रहा है और काम के मोर्चे पर सब कुछ अच्छा दिख रहा है। कंपनी को एक निवेशक ने खरीद लिया है और अब मैं इसके आईटी विभाग का प्रमुख हूँ। अगले हफ्ते दिल्ली आ रहा हूँ, क्या तुम मिलना चाहोगी?'

मैं: 'वाह, यह बहुत बढ़िया है। मैंने तुमसे कहा था ना, सब कुछ अच्छा ही होगा। शुभकामनाएं! मैं थोड़ा व्यस्त हूँ। मुझे लगता है मैं नहीं आ पाऊंगा।'

पंद्रह दिन बाद, मैं और मेरी माँ अरिजीत सिंह के लाइव कॉन्सर्ट से लौट रहे थे, तभी पार्किंग में मेरी मुलाकात अरुण से हो गई। वह अपने कुछ दोस्तों के साथ था और मुझे देखकर बहुत खुश हुआ।

'हाय लीना, कितना शानदार सरप्राइज है! हालांकि मुझे कहना पड़ेगा कि मैं तुमसे थोड़ी नाराज़ हूँ।'

मैंने आश्चर्य भरी नज़र से पूछा, 'ऐसा क्यों है?'

"अच्छा, आपने तो ऐप से अपना रजिस्ट्रेशन रद्द कर दिया और ऐप छोड़ दिया, और मुझे कोई प्रतिक्रिया या सुझाव भी नहीं दिया। आपका अनुभव कैसा रहा? आपको अधीर नहीं होना चाहिए था। ऐसे कई लोग हैं जिन्होंने सकारात्मक प्रतिक्रिया दी है और कहा है कि उन्हें इस ऐप पर अपना जीवनसाथी मिल गया है।"

भगवान का शुक्र है! माँ पहले से ही कार में बैठी हैं—मुझे राहत की लहर महसूस हुई। हालाँकि, मैं उस विषय पर और बात नहीं करना चाहता था। बात खत्म करने के लिए, मैंने मुस्कुराते हुए कहा, 'कोई बात नहीं, अरुण। मैंने कोशिश की, लेकिन मुझे अच्छा नहीं लगा। शायद, मेरे जैसे लोगों के लिए उपयुक्त नहीं है... फिर भी, आपको शुभकामनाएँ!'

मैं अपनी कार के दरवाजे का हैंडल पकड़े हुए था और जो कुछ मैंने आगे सुना, उसके बाद मेरा हाथ वहीं जम गया।

'लीना, तुम्हें पूरी कोशिश करनी चाहिए थी। मेरी एक दूर की चचेरी बहन रीता, जो अविवाहित है और तीस के दशक के अंत में है, बेंगलुरु के एक सुंदर, समझदार और बेहद आकर्षक लड़के से मिली और उन्होंने डेटिंग शुरू कर दी। और (जोर से हंसते हुए) क्या तुम्हें सबसे अच्छी बात पता है? वो लड़का मेरा अच्छा दोस्त राघव निकला। देखो, किस्मत ऐसे ही खुलती है... आगे क्या होगा कोई नहीं जानता, लेकिन हमें

कोशिश करनी चाहिए।'

अंधेरा था, और शुक्र है कि अरुण ने शायद अविश्वास से पीला पड़ा मेरा चेहरा नहीं देखा होगा। मैं हकलाते हुए बोली, 'वाह... यह तो अविश्वसनीय है! तो, क्या तुम्हारी चचेरी बहन की जल्द ही शादी होने वाली है?'

'नहीं यार, इसमें थोड़ा समय लग सकता है', रीता ने मुझसे यही कहा। राघव का आठ साल का बेटा है। उसे इस बात का पक्का यकीन नहीं है कि छोटा बच्चा उसे किसी दूसरी औरत के साथ स्वीकार कर पाएगा या नहीं। इसलिए उन्होंने धीरे-धीरे आगे बढ़ने और सब कुछ धीरे-धीरे कैसे होता है, यह देखने का फैसला किया है...।'

पहली बार, माँ ने सही समय पर बेसब्री से हॉर्न बजाया! जब मैंने अलविदा कहा और दरवाजा खोला, तो अरुण मेरी व्यंग्यात्मक मुस्कान नहीं देख सका।

अनकूल मुलाकात

लोग इतने उलझन में क्यों रहते हैं? वे हमेशा इस बात से अनजान कैसे रह सकते हैं कि वे कहाँ जाना चाहते हैं; वे क्या करना चाहते हैं? कोई इतना भ्रमित कैसे हो सकता है कि उसे यह भी पता न हो कि वह शादी करना चाहता है या नहीं, और अगर करना चाहता है तो किससे और कब?

मेरे मन में ऐसे कई बेतुके सवाल उठ रहे थे। लेकिन, मैं राघव से नाराज़ या परेशान नहीं थी। अगली सुबह तक, मैं मजे से हंस रही थी।

माँ के चेहरे को देखते ही मुझे आभास हो गया कि कुछ ही देर में एक और तूफ़ानी दौर आने वाला है। यह समझना आसान था कि माँ के मन में कई सवाल उमड़ रहे होंगे और उन्हें परेशान कर रहे होंगे। राहत की बात बस इतनी थी कि माँ ने उन सवालों को अपने भीतर से बाहर निकलने और मेरे कानों तक पहुँचने का सुरक्षित रास्ता दे दिया। कम से कम मुझे इस बात की चिंता नहीं करनी पड़ी कि कहीं उनके अंदर तनाव न बढ़ जाए और उन्हें बाहर निकालने का कोई सुरक्षित रास्ता न मिले। मुझे कभी भी उस तनाव के निकलने का ज़्यादा इंतज़ार नहीं करना पड़ा।

'बिन्नी, तुम अपने जीवन को लेकर इतने असमंजस में क्यों हो? तुम्हें यह कैसे पता नहीं कि तुम कहाँ जाना चाहते हो, क्या करना चाहते हो? कोई इतना उलझन में कैसे हो सकता है कि उसे यह भी न पता हो कि उसे शादी करनी है या नहीं? अगर तुम शादी करना चाहते हो, तो किससे और कब?'

उफ़, क्या ये कुछ जानी-पहचानी सी नहीं लग रही हैं? माँ मेरे विचारों पर भी कैसे

नज़र रख पाती हैं—मैंने खुद से पूछा, जैसे ही सवालों की बौछार मेरे कानों पर धड़ाम से गिरी।

अगले कुछ दिनों में, मुझे कई सनसनीखेज मैसेज भी मिले: 'आपको क्या लगता है कि मैंने shaadi-ka-laddoo.com का सब्सक्रिप्शन क्यों रिन्यू कराया है? पिछले तीन-चार महीनों से आप मेरी प्रोफाइल को यूं ही क्यों रिजेक्ट कर रहे हैं? आपके पास और क्या विकल्प हैं? बताइए... क्या आप खुद ही किसी को ढूंढ लेंगे? मुझे तो शक है कि ऐसा कोई चमत्कार मेरी किस्मत में लिखा है!'

मैंने उसकी नाराजगी सहते हुए चुपचाप अपना गुस्सा बरकरार रखा।

*****

एक दिन मैंने हिम्मत जुटाकर जवाब दिया, 'मैं थक चुकी हूँ और तंग आ चुकी हूँ। ऑनलाइन पोर्टल पर वही घिसी-पिटी बातचीत करने का मेरा मन नहीं करता। सवालों की बौछार बहुत जानी-पहचानी और अर्थहीन है। आप क्या करते हैं? आप कहाँ काम करते हैं? क्या आपको खाना बनाना आता है? परिवार शुरू करने के बारे में आपके क्या विचार हैं? आप दोबारा शादी क्यों करना चाहते हैं? यह सब सरासर बकवास है...।'

ऐसे मौकों पर पापा अक्सर अपने छिपने की जगह से निकल आते और उन दो बेहद तनावग्रस्त मधुमक्खियों को सुलह का प्रस्ताव देते। इस बार भी उन्होंने अपना कर्तव्य बखूबी निभाया।

'बिन्नी, तुम एक समझदार लड़की हो। तुम अपने छात्रों को बहुत ही परिपक्व तरीके से संभालती हो। तुममें हर तरह के लोगों से अलग-अलग तरीकों से पेश आने की कला है। इसी तरह, प्रस्तावों पर निष्पक्ष रूप से विचार करो और फिर तय करो कि प्रत्येक पर कैसे प्रतिक्रिया देनी है। लोगों से जुड़ने का प्रयास करो, मेरी प्यारी बच्ची।'

घर में शांति कायम होते ही माँ ने मौका नहीं गंवाया, 'मैंने अभी-अभी आपको एक प्रोफाइल भेजी है। वह फिलाडेल्फिया के एक वित्तीय सलाहकार हैं, अपनी माँ के साथ रहते हैं और पिछली शादी से उनकी कोई संतान नहीं है। एक नज़र डाल लीजिए, प्लीज़?'

मुझे पता था कि माँ ज़िद करेंगी, लेकिन पहले मुझे खुद को शांत करना था। मुझे खुद से बात करनी थी। मैं घर के पीछे वाले आँगन में गई और उस झूले पर बैठ गई जो एक शांत कोने में बंधा हुआ था, मेरे पसंदीदा हरे-भरे हिस्से के ऊपर जहाँ घास

बेतहाशा उगती थी और हवा के झोंकों पर खुशी से झूमती थी। मुझे पता है... यह अजीब है। यह आसान भी नहीं है। राघव एक अच्छा लड़का था और इस सब से उबरना मुश्किल होगा, लेकिन इस पछतावे और अफ़सोस को खत्म करना ही होगा... मुझे तर्कसंगत होना होगा और हाँ, क्या मैं ईमानदार नहीं थी और क्या मैंने उसे समझने और उसका साथ देने की पूरी कोशिश नहीं की? मुझे लगता है, आगे बढ़ने का मेरा फैसला हम दोनों के लिए सबसे अच्छा है। यह मामला गरिमापूर्ण तरीके से समाप्त हो गया है। अगर मैंने इसे खत्म नहीं किया होता, तो यह मेरे लिए और शायद उसके लिए भी बहुत उलझा हुआ और दर्दनाक हो सकता था।

लगभग एक घंटे तक मेरा खुद से ही संवाद चलता रहा, क्योंकि बीच-बीच में दृश्य विचलित होते रहे और उसके साथ बिताए पलों की यादें मेरे मन में उमड़ आती रहीं। काफी मशक्कत के बाद ही मेरा मन उन दृश्यों को कहीं दूर कोने में रखने और अंततः मिटाने के लिए राजी हुआ। हालांकि, मैंने अपने मन को आसमान के वादे करने के लिए फटकार भी लगाई... भला कौन उन यादों को मिटा पाया है? नामुमकिन को मुमकिन किसने किया है?

मुझे चिराग को फोन करने का बहुत मन कर रहा था क्योंकि मुझे पता था कि शायद वही एकमात्र ऐसा व्यक्ति होगा जो इस पूरे मामले पर इतना गुस्सा या भावुक नहीं होगा और सबसे महत्वपूर्ण बात, वह मुझे कभी जज नहीं करेगा, फिर भी इस बार मैं हिचकिचा गई। मैंने अपना मोबाइल फोन कसकर पकड़ा लेकिन कॉल नहीं किया। ऐसा क्यों हो रहा है? मैं उसे कॉल क्यों नहीं कर रही? मैं इतना क्यों सोच रही हूँ? क्या वह जल्द ही 'सही' लड़का न मिलने की मेरी लगातार शिकायत से परेशान हो जाएगा? मैंने अपने सारे संदेह एक तरफ रख दिए और उसे कॉल किया।

‘अरे, कैसे हो? क्या चल रहा है?’

'हे लीना, तुमसे बात करके बहुत अच्छा लगा। मुझे लगा था कि तुम नाटक देखने थिएटर जा रही हो।'

नहीं, जाने का मन नहीं था। मैं बस आराम से झूले पर लेटा हुआ हूँ और जो कुछ हुआ है उसके बारे में सोच रहा हूँ।

‘क्यों? क्या हुआ? राघव कैसा है? तुम दोनों के बीच सब ठीक है? कृपया मुझे यह मत बताना कि उसने भी तुम्हें निराश किया है...’

मैं एक पल के लिए हिचकिचाया, लेकिन फिर मैंने सब कुछ कह दिया। हालांकि मैंने

अपनी बात खत्म कर दी थी, दूसरी तरफ सन्नाटा पसरा हुआ था।
‘चिराग, क्या तुम वहाँ हो?’
'हां, मैं यहीं हूं, लीना। सच कहूं तो, मुझे नहीं पता कि क्या कहूं। वास्तव में, अगर मैं अपने मन की बात कह दूं तो शायद तुम्हें अच्छा भी न लगे।'
नहीं, मैं नहीं बोलूंगा। सब कुछ कहो... मैं सुन रहा हूँ।
‘लीना, तुम इस बात से इनकार नहीं कर सकतीं कि कम से कम तुम्हारे और तुम्हारे मामलों के संबंध में मैं हमेशा से बहुत निष्पक्ष और पूर्वाग्रहरहित रहा हूँ। मुझे नहीं पता क्यों, लेकिन मैंने हमेशा तुम्हारे प्रति सहानुभूति दिखाई है... तुम्हारे लिए केवल भलाई की कामना की है। मैंने दिल से आशा की है कि तुम्हें ऐसा साथी मिले जो तुम्हारा पूरक हो; तुम्हारे साथ मेल खाता हो...।’
काफी लंबा विराम था।
‘मैं सुन रहा हूँ, चिराग। तुम्हें कुछ भी छिपाने की ज़रूरत नहीं है।’
‘हम्म... मुझे पता है मुझे कुछ छिपाने की ज़रूरत नहीं है, लेकिन मैं तुम्हारी प्रतिक्रिया को लेकर सच में चिंतित हूँ। अगर मैं तुमसे कहूँ कि तुम गंभीरता से सोचो कि तुम्हें ये सारे अजीबोगरीब लोग क्यों मिलते रहते हैं, तो शायद तुम्हें बुरा लग जाए। सच में, लीना, क्या तुमने कभी एक पल भी इस बारे में सोचा है? क्यों? एक भी सामान्य लड़का क्यों नहीं है, और इन सब का कोई स्वाभाविक अंत क्यों नहीं है? शायद, ऐसा इसलिए है क्योंकि तुम भले ही एक परफेक्ट पैकेज डील की तलाश में हो, लेकिन तुम खुद इस बारे में स्पष्ट नहीं हो कि तुम अपनी तरफ से क्या देने को तैयार हो। और सच में, क्या तुमने पुरुषों को लेकर अपने सारे डर, असुरक्षा, संदेह और आशंकाओं को छोड़ दिया है?’
‘लेकिन...’ मैंने समय रहते खुद को रोक लिया। मेरा दिल ज़ोर से धड़क रहा था। मैंने सोचा, वो तो सच्चा दोस्त है... और इतने समय से वो मेरे बारे में ऐसा सोचता आ रहा है?
लीना, मुझे अपनी बात पूरी करने दो। कई बार मेरा मन किया कि तुम्हें आईना दिखा दूं, लेकिन फिर सोचा कि तुम वैसे तो इतनी समझदार लड़की हो, तो आखिरकार तुम आत्मनिरीक्षण करके सच्चाई को समझ जाओगी। बेशक, मैं इस बात से इनकार नहीं करता कि इनमें से ज़्यादातर लड़के सनकी थे। दुख की बात है कि तुम्हें उनकी सनक के अजीबोगरीब नतीजों को सहना पड़ा। मुझे उनकी चिंता नहीं है, बल्कि इस बात की

चिंता है कि इन सभी मुलाकातों का तुम पर क्या असर हो रहा है। क्या तुम देख नहीं सकती, लीना? हर ऐसी घटना तुम्हारे अंदर से एक कोना तोड़ देती है और तुम्हारे संदेह को बढ़ा देती है; तुम्हें और ज़्यादा सतर्क, शंकालु और कड़वा बना देती है। चाहे संजय हो, सौरभ हो या अब राघव, या तो तुम यह नहीं समझ पाईं कि वे तुम्हें क्या दे सकते हैं, या तुम उनमें वही ढूंढने में इतनी मशगूल थीं जो तुम्हारी आंखें देखना चाहती थीं। या शायद, एक पल तुम उनके साथ थीं और अगले ही पल, मानो तुम सब कुछ बिखरने का इंतज़ार कर रही थीं, और जब ऐसा हुआ, तो तुम्हारे डर सही साबित हुए और कहीं न कहीं तुमने राहत की सांस ली। मुझे ईमानदारी से बताओ, तुम किसके लिए अपना शत प्रतिशत देने को तैयार थे? बिना किसी संशय या हिचकिचाहट के? कभी-कभी तो तुम बिना सोचे-समझे ही आगे बढ़ जाते थे, और कभी-कभी तो संदेह और प्रतिबद्धता की अनिच्छा के साथ शुरुआत करते थे। क्या मैं गलत हूँ?

मुझे समझ नहीं आ रहा था कि क्या कहूँ। मैं उसकी बातों से स्तब्ध रह गया था। क्या वह मुझ पर ज़रूरत से ज़्यादा उम्मीद रखने या स्वार्थी होने का आरोप लगा रहा था? या, जैसा उसने कहा: क्या मैं अपने आकलन और पहलों में जल्दबाज़ी कर रहा था? नहीं, मुझे लगता है कि उसकी मेरे बारे में राय अच्छी नहीं है और इसीलिए उसके फैसले पक्षपातपूर्ण हैं... और मैंने तो उससे सब कुछ बिना किसी परवाह के साझा कर दिया था।

'लीना, मैं जवाब का इंतजार कर रहा हूँ।'

‘अहम, ओह, हाँ... हाँ! आप सही कह रहे हैं। मुझे बहुत सोचना पड़ेगा। मुझे... मुझे सोचना पड़ेगा... अगर आपको कोई आपत्ति न हो तो क्या हम बाद में बात कर सकते हैं?’

‘नहीं, लीना! रुको! यूं ही फोन मत काट दो। क्या तुम्हें चोट लगी है? मुझे इतना जानना ज़रूरी है... मैं...’

मैंने उसे बीच में ही रोक दिया। 'चिराग, प्लीज़... अभी नहीं! बाद में, प्लीज़... बाय।'

*****

मैं झूले से उठी, चेहरा धोया और अपने लिए अदरक की गरमागरम चाय का एक प्याला लेकर कमरे में लौट आई। मैं बैठ गई और आँखें बंद कर लीं। मुझे चिराग की बातें साफ़-साफ़ सुनाई दे रही थीं। क्या वह सच कह रहा था? क्या यह मेरी गलती है कि मैं गलत तरह के लड़कों को आकर्षित कर रही हूँ या शुरुआती बातचीत के बाद

मेरे बाद के काम गलत होते हैं? मुझे क्या करना चाहिए? मैं यह सब खुद कैसे बदलूँ? मैं अपने सारे डर और उलझनें कैसे मिटाऊँ? अगर मुझे कोई शंका है, तो मैं क्या करूँ?

मुझे खुद पर हैरानी हुई कि चिराग ने जिस तरह मेरी कमियों को उजागर किया, उस पर मैं टूट नहीं गई या रो नहीं पड़ी। उसके शब्दों ने मुझे स्तब्ध कर दिया था, लेकिन विचलित नहीं किया। मैं जानती थी कि मेरे पास कोई जादुई छड़ी नहीं है जिसे घुमाकर मैं अपनी सारी नकारात्मकता मिटा सकूँ। मैंने मन ही मन सोचा, क्यों न जीवन को अपने हिसाब से चलने दूँ? मैं तब तक चलती रहूँगी जब तक मैं हार मानकर माँ का सामना करने के लिए तैयार न हो जाऊँ... अगर मेरे डर को मिटना है, तो वे तभी मिटेंगे जब मैं उस व्यक्ति से मिलूँगी जिसके साथ मुझे अपना पूरा जीवन बिताना है।

मैं अपने तर्क से पूरी तरह संतुष्ट नहीं था, लेकिन मैंने तय किया कि बस बहुत हो गया, मेरा दिमाग अब और बर्दाश्त नहीं कर सकता। चलो सोने की कोशिश करता हूँ, सुबह तक बेहतर महसूस करूँगा, मैंने खुद को समझाया।

****

अगले दो हफ़्तों तक चिराग और मैंने एक-दूसरे को न तो संदेश भेजे और न ही फ़ोन किया। यह साफ़ था कि चुप्पी हम दोनों के लिए अच्छी साबित हो रही थी। बेशक, हर दिन कई बार मुझे फ़ोन करने का मन करता था, लेकिन मैंने नहीं किया। कमज़ोर नज़र न आना ज़रूरी था। कॉलेज में परीक्षाएँ, असाइनमेंट और फील्ड ट्रिप ने मुझे व्यस्त रखा और मैं पूरे दो हफ़्तों तक थका हुआ और देर से घर लौटता रहा।

माँ को शायद कुछ गड़बड़ का एहसास हो गया था और उन्होंने समझदारी से मेरे ईमेल बॉक्स में झाँकने का फैसला नहीं किया था। एक शाम, मैं दोपहर बाद देर से घर लौटा और अपने लैपटॉप को घूरता हुआ बैठा रहा, सोच रहा था कि अपना मेलबॉक्स खोलूँ या नहीं। आखिरकार, मैंने खोल ही दिया। माँ का संदेश सबसे ऊपर से मुझे बुला रहा था। मैंने उसे खोलने के लिए क्लिक किया।

मैं 38 वर्षीय वित्तीय सलाहकार और अमेरिकी नागरिक हूँ। मेरी शादी छह महीने तक चली, उसके बाद आपसी तालमेल की कमी के कारण हमारा अलगाव हो गया। विवरण पर चर्चा की जा सकती है। मैं अपनी माँ के साथ रहती हूँ। मुझे ट्रेकिंग पसंद है और मैं ध्यान भी करती हूँ। मुझे आपकी प्रोफ़ाइल अच्छी लगी। क्या हम संपर्क कर सकते हैं?

वह लड़का ध्यान करता है! मैंने 'स्वीकार करें' वाले बॉक्स पर क्लिक किया और कॉलेज से लाए कुछ असाइनमेंट पूरे करने में जुट गया।

दो दिन बीत गए और मैं लगभग इसके बारे में भूल ही गई थी कि तभी मुझे माँ का एक फॉरवर्ड किया हुआ संदेश मिला: 'लीना, मेरा निमंत्रण स्वीकार करने के लिए धन्यवाद। क्या तुम मुझसे जुड़ना चाहोगी? मेरा ईमेल manik_kapoor@gmail.com है। कृपया कभी भी संदेश भेज देना।'

अगले दिन दोपहर लगभग 1 बजे, मैंने उसे लिखा:

हैलो मानिक,

आपका संदेश मिल गया। आपसे संपर्क करने के लिए एक टेक्स्ट मैसेज भेज रहा हूँ। हम कभी बात कर सकते हैं।

धन्यवाद

लीना।

शाम **7** बजे

हाय लीना,

आपसे बात करके खुशी हुई... आपका कैसा चल रहा है? मैं दरअसल काम के सिलसिले में यात्रा कर रही हूँ और सप्ताहांत तक वापस आ जाऊँगी। आप जानते ही हैं कि कंसल्टेंट का काम कैसा होता है... हमेशा व्यस्तता बनी रहती है। कभी-कभी तो नौकरी छोड़ने का मन करता है, लेकिन फिर बिलों का ख्याल आ जाता है। ☺ अपने बारे में कुछ बताइए।

अपना ध्यान रखना,

मानिक।

अगले दिन**,** रात **10** बजे

जी हां, मुझे पता है... सलाहकार बनना कई लोगों का सपना होता है, लेकिन इस पेशे के लिए बहुत ज़्यादा पैसे खर्च करने पड़ते हैं :) मुझे यकीन है कि इससे आपके सारे खर्चे निकल जाते होंगे :) मैं दिल्ली के एक कॉलेज में लेक्चरर हूं। हर साल मैं वही सिद्धांत और तथ्य पढ़ाता हूं... बस मुझे सुनने वाले लोग बदलते रहते हैं, पर मुझे कोई शिकायत नहीं है। मुझे अपना काम पसंद है।

लीना।

सुबह **3** बजे

आपका काम कितना संतोषजनक है! आप हर साल छात्रों को ज्ञान से सशक्त बनाते हैं। हम तो सिर्फ अपने लिए काम करते हैं, जबकि आप दूसरों के लिए काम करते हैं। मैं बहुत प्रभावित हूँ। आपकी अन्य रुचियां क्या हैं?
मानिक।
सुबह **7** बजे
सुप्रभात, लीना।
आज इस विशेष कार्य का आखिरी दिन है, घर लौटने से पहले। क्या आप रविवार को बात करना चाहेंगे? कृपया मेरा नंबर नोट कर लें: +01…
शाम **4** बजे
Hi Manik,
घर की यात्रा सुरक्षित हो। हाँ, रविवार रात 9 बजे मुझे ठीक रहेगा, अगर आपको भी ठीक लगे तो। मेरा नंबर +91 है…
रात **11** बजे
हां, रविवार रात 9 बजे का समय मेरे लिए ठीक रहेगा!
मानिक।
रविवार की रात 9:15 बजे ही मुझे याद आया कि मुझे रात 9 बजे मानिक से बात करनी है। मैंने जल्दी से अपना मोबाइल उठाया।
मानिक की ओर से व्हाट्सएप पर एक संदेश आया था:
'हेलो लीना, मैं निर्धारित समय से दस मिनट पहले ऑनलाइन आ गया हूँ—क्योंकि मुझे पता है कि तुम एक शिक्षिका हो और वे हमेशा समय पर होती हैं। मैंने सोचा कि तुम्हें मुझे दंडित करने का कोई कारण न देना ही बेहतर होगा। हा हा! हेलो? क्या तुम वहाँ हो?'
एक और संदेश रात **9.10** बजे
मानिक: 'अरे, मैं अभी भी यहीं हूँ। थोड़ी देर और यहीं रुकूँगा ☺'
रात **9.20** बजे
मैं: 'हाय, मुझे बहुत खेद है, मानिक। यह बात मेरे दिमाग से बिल्कुल निकल गई थी।'
मानिक: 'अरे लीना, कोई बात नहीं। ऐसा होता रहता है।'
मैं: 'नहीं, नहीं… मुझे बहुत खेद है। ऐसा आमतौर पर नहीं होता।'
मानिक: 'तो आज क्या खास था? अगर मैं पूछूं तो, ऐसी क्या बात थी जो आपको

हमारी ऑनलाइन मुलाकात के बारे में भूलने पर मजबूर कर गई? ☺'
मैं: 'अरे नहीं, कुछ खास नहीं। मैं एक फिल्म देख रही थी और उसमें इतनी मग्न हो गई थी कि पांच मिनट पहले अचानक मुझे याद आया कि हमें व्हाट्सएप पर चैट करनी थी ☺'
मानिक: 'कौन सी फिल्म?'
Me: 'Kabhi Alvida Na Kehna.'
मानिक: 'वाह, यह तो बहुत ही गंभीर चुनाव है। मुझे वह फिल्म पसंद है।'
मैंने कहा: 'हाँ, यह उन फिल्मों में से एक है जिन्हें अभिषेक बच्चन की सर्वश्रेष्ठ फिल्मों में गिना जा सकता है। वैसे, आपकी यात्रा कुल मिलाकर कैसी रही?'
मानिक: 'ओह, हमेशा की तरह काम ही था। हालांकि, इस बार मैंने काम के बाद फ्लोरिडा घूमने की थोड़ी कोशिश की। मैं कभी घूमने-फिरने नहीं जाता; मेरे लिए तो हमेशा काम ही काम रहा है, और कुछ नहीं। पता नहीं, ऐसा इसलिए है क्योंकि साथ में घूमने-फिरने के लिए कोई नहीं होता या फिर ये सिर्फ एक बहाना है क्योंकि काम के बाद मैं इतना थक जाता हूँ कि घूमने-फिरने का मन ही नहीं करता। लीना, क्या तुम्हें घूमना-फिरना पसंद है?'
मैंने (पूरे जोश के साथ टाइप किया): 'ओह, हाँ! मुझे यात्रा करना बहुत पसंद है। मैं परिवार के साथ कुछ जगहों पर जा चुकी हूँ, कुछ अकेले यात्राएँ भी की हैं और कई बार काम के सिलसिले में भी यात्रा की है।'
मानिक: 'अकेले यात्रा! यह तो वाकई बहुत बढ़िया है। अनुभव भी बिल्कुल अनोखे रहे होंगे...'
अगले एक घंटे का समय एक-दूसरे की रुचियों को जानने और लगभग उसी नियमित प्रक्रिया को दोहराने में पलक झपकते ही बीत गया, जिससे मैं पिछले डेढ़ साल से गुजर रहा था।
हां, सब कुछ एक ही तरह से शुरू होता है, मैंने खुद को याद दिलाया! मुझे धैर्य रखना होगा—मुझे याद आया कि पापा ने मुझे बड़े प्यार से ऐसा करने के लिए कहा था।
शुरू में ही किसी के प्रति पूर्वाग्रह न रखने के दृढ़ संकल्प के साथ, मैंने बातचीत को इस पारस्परिक आशा के साथ समाप्त किया कि हम फिर से संपर्क करेंगे।
उस रात मेरी नींद ठीक से नहीं आई।
*****

अगले दो दिन मैं असामान्य रूप से व्यस्त रहा। मैंने अगले बुधवार की रात को ही अपने निजी ईमेल चेक किए। चिराग का एक ईमेल था। धड़कते दिल से मैंने ईमेल खोला:

> हेलो, उम्मीद है अब तक तुम शांत और संयमित हो। ये क्या है लीना? क्या हमें किशोरों की तरह रूठ जाना चाहिए? ☺ चलो, थोड़ा धैर्य रखो और अपनी बातें और लंबी चर्चाएँ फिर से शुरू करते हैं। मुझे इनकी बहुत याद आ रही है, प्यारी... मैं इतनी बेबाकी से और वो भी अचानक बोलने के लिए माफी मांगती हूँ। इसमें कोई शक नहीं कि तुम कुछ देर के लिए चुप हो गई होगी। मुझे माफ़ करना, जो मैंने कहा उसके लिए नहीं, बल्कि सब कुछ एक साथ और अचानक कहने के लिए।
>
> क्या आप ट्रंप द्वारा अप्रवासियों पर किए गए नवीनतम हमले पर एक खुली बहस के लिए तैयार हैं? समय बताइए...

मैं मुस्कुरा उठा। ऐसा लग रहा था कि सब कुछ फिर से ठीक हो जाएगा। मैंने अपना पसंदीदा गाना गुनगुनाना शुरू किया और अपना मेलबॉक्स चेक करता रहा।

मानिक की ओर से तीन ईमेल आए थे।

सोमवार सुबह **5** बजे

> हे लीना,
>
> आपसे बात करके बहुत अच्छा लगा। आप एक समझदार, बुद्धिमान और हाजिरजवाब महिला हैं। मुझे यह बात पसंद आई कि नई चीजों को जानने के लिए आप दूसरों पर निर्भर नहीं रहतीं—मेरी तरह नहीं, जो बैठकर बहाने बनाती रहती है। आपसे फिर बात करके अच्छा लगेगा।
>
> अपना ध्यान रखना,
>
> मानिक।

सोमवार सुबह **7** बजे

> अरे, आपका आने वाला सप्ताह अच्छा रहे!

बुधवार सुबह **4** बजे

> कैसी चल रही है? लगता है तुम गायब ही हो गई थी! तुमसे प्रेरणा लेकर मैंने भी इस शनिवार को अपने घर से दो घंटे की ड्राइव करके

वॉटर पार्क जाने का फैसला किया है—बिल्कुल अकेले! वाह! आखिरकार! पता नहीं तुम्हारा साथ कैसा रहेगा, पर देखते हैं... वापस आकर तुम्हें सब बताऊंगी। ☺ क्या तुम रविवार को उसी समय बात करने के लिए उपलब्ध हो?

मानिक।

बुधवार रात **8** बजे

हे मानिक।

आप कैसी हैं? मैं ठीक हूँ। आपके अकेले घूमने-फिरने और वीकेंड का आनंद लेने के प्लान के बारे में जानकर अच्छा लगा। हाँ, रविवार अच्छा लग रहा है।

अपनी यात्रा का आनंद लें!

श्रेष्ठ,

लीना।

रविवार रात **9** बजे व्हाट्सएप पर

मैं: 'अरे वाह, इस बार मैं समय पर हूँ ☺'

मानिक: 'वाह...वाह... बुरा नहीं! कैसी हो लीना? उम्मीद है तुम्हारा हफ्ता अच्छा बीता होगा। अगर तुम्हें कोई आपत्ति न हो तो क्या मैं तुम्हें फोन करूँ? मुझे इतना ज्यादा टाइप करना अच्छा नहीं लगता।'

मैं: 'हाँ, ठीक है... मुझे लगता है कि बात करना आसान होगा।'

मानिक ने मुझे फोन किया। उसकी आवाज़ से लग रहा था जैसे वह बहुत थका हुआ हो; एक ऐसा व्यक्ति जो नीरस जीवन जीता हो। लहजा सपाट और बेजान था। 'हाय, आखिरकार बात हो ही गई! तो, तुम्हारा हफ्ता कैसा रहा?'

'हेलो, मानिक... हाँ, शुरुआत तो अच्छी हुई थी, और फिर अचानक सब खत्म हो गया! तुम मुझे अपने एकल यात्रा के अनुभव के बारे में बताओ। मैं जानने के लिए उत्सुक हूँ कि यह कैसा रहा।'

"खैर, शुरू में थोड़ा असहज लगा, लेकिन धीरे-धीरे मैं सहज हो गई। दरअसल, पूरे सफर में खामोशी... अकेले बैठकर सवारी का आनंद लेना और अंत में खुद से उस रोमांच और खुशी को साझा करना—आसान नहीं था, लेकिन मुझे लगता है कि कोशिश करना अच्छा रहा। शायद मैं इसमें और बेहतर होती जाऊंगी। धन्यवाद, लीना।

तुमने मुझे खुद के थोड़ा और करीब ला दिया है।”
हम दोनों हँसे, और फिर थोड़ी देर के लिए सन्नाटा छा गया।
फिर मानिक ने कहा, 'लीना, क्या हम अभी उस उद्देश्य के बारे में थोड़ी बात कर सकते हैं जिसके लिए हम संपर्क में हैं? क्या आपको इससे कोई आपत्ति नहीं है?'
आह, आखिरकार हम उस बिंदु पर आ ही गए... मैंने आह भरी, लेकिन धीमी नहीं।
‘जी हाँ, कृपया... मुझे बताइए।’
जैसा कि मैंने पहले बताया था, मेरी शादी हुई थी और शादी के छह महीने बाद ही हम अलग हो गए। मैंने आगे बढ़ने के लिए समय लिया और अब मैं जीवन में नई शुरुआत करने के लिए तैयार महसूस कर रहा हूँ। मैं अपनी माँ के साथ रहता हूँ। शादी के बाद जब मेरी पत्नी अमेरिका आई, तो शुरुआत में तो सब ठीक था, लेकिन दो महीने के भीतर ही उसने मेरी माँ के हमारे साथ रहने पर शिकायत करना शुरू कर दिया और उन्हें घर छोड़ने के लिए ज़िद करने लगी। मैंने उसे समझाने की कोशिश की, लेकिन कोई खास फायदा नहीं हुआ। वह चाहती थी कि हम किसी दूसरे घर में रहें। आखिरकार, शादी के तीन महीने बाद, हम एक नए घर में चले गए जो मेरी माँ के घर से ज़्यादा दूर नहीं था। मैं खुश नहीं था, लेकिन यह सोचकर मान गया कि इससे शांति बनी रहेगी। लेकिन, एक महीने बाद ही, वह इस बात पर झगड़ा करने लगी कि मैं दिन में दो बार अपनी माँ से मिलने क्यों जाता हूँ, और यह भी कि मुझे अपनी माँ को घर चलाने के लिए जो पैसे देता हूँ, उसमें कटौती करनी चाहिए, वगैरह। मुझे यह बात बिल्कुल भी मंज़ूर नहीं थी कि मेरी माँ से दूर रहने के बावजूद वह खुश नहीं थी। हम छोटी-छोटी बातों पर झगड़ने लगे और रोज़ाना के झगड़े भयंकर लड़ाइयों में बदल गए। एक दिन उसने मुझसे तलाक़ माँग लिया। मैंने सुलह करने की कोई कोशिश नहीं की और हम अलग हो गए। वह भारत वापस चली गई और मैं अपनी मां के साथ वापस आ गया।
क्या वह अपनी माँ का लाडला है? उसके खुलासों ने मुझे सोचने पर मजबूर कर दिया।
‘यह सुनकर मुझे बहुत दुख हुआ, मानिक।’
‘तुम्हारा क्या? तुम्हारी शादी में क्या गड़बड़ हुई?’ मानिक ने पूछा।
‘मानिक, मैं अभी सब कुछ बताने में सहज महसूस नहीं कर रही हूँ। फिलहाल मैं इतना ही कह सकती हूँ कि हमारे बीच तालमेल की कमी थी और हमने आपसी सहमति से अलग होने का फैसला किया। पहले हम एक-दूसरे को थोड़ा और जान लें।

क्या यह ठीक रहेगा?'
उन्होंने विनम्रतापूर्वक और शांत स्वर में उत्तर दिया, 'कोई बात नहीं। क्या मैं आपके साथ थोड़ा और साझा कर सकता हूँ?'
मैंने आह को दबा लिया। 'मैं सुन रहा हूँ।'
जब से मैं अपनी माँ के साथ रहने लगी हूँ, मुझे हर पल ऐसा लगता है जैसे मैं पीछे हट रही हूँ। मुझे ऐसा लगता है जैसे मेरा अस्तित्व केवल घर की ज़रूरतों को पूरा करने या माँ के काम करने के लिए ही है। मेरे दोस्त मुझसे दूर हो गए हैं क्योंकि मैं उन्हें बिल्कुल भी समय नहीं दे रही हूँ। मैं हमेशा अपनी माँ के साथ रहती हूँ, उनकी अपेक्षाओं को पूरा करने की पूरी कोशिश करती हूँ। मुझे लगता है कि मेरा आत्मविश्वास कम हो रहा है। अक्सर, मैं खुद को व्यक्त करने में असमर्थ महसूस करती हूँ। दूसरों के साथ साधारण बातचीत करते समय भी मैं हिचकिचाती हूँ। नतीजतन, मैं अपने अंदर घुटन महसूस करती हूँ। मुझे एक दोस्त, एक साथी की ज़रूरत है जो मुझे इस स्थिति से बाहर निकलने में मदद करे। और आपसे बात करने के बाद, मुझे लगता है कि आप मेरी मदद कर सकती हैं। क्या आप मुझे खुद को खोजने में मदद करेंगी, लीना?
मुझे पेट में अजीब सी बेचैनी महसूस हुई। लगता है ये फिर से वही मामला है जहाँ किसी को पूरे इंसान की नहीं, बल्कि किसी के भी कंधे की ज़रूरत है। मैं बहुत दुखी थी। मैंने ऊपर देखा (हालाँकि माँ की तरह नाटकीय ढंग से हाथ नहीं उठाए) और ऊपर बैठे किसी भी व्यक्ति को दया भरी नज़र से देखा। मेरे लिए कोई सामान्य लड़का क्यों नहीं? वे सभी अच्छे और जोशीले लड़के कहाँ हैं जिन्हें माँ, देखभाल करने वाली, सलाहकार और प्रेरणा देने वालों की ज़रूरत नहीं होती? क्या मुझे कभी कोई ऐसा लड़का नहीं मिलेगा? मुझे पता ही नहीं चला कि कब मैंने एक गहरी आह भरी और कहा, 'कौन? मैं?'
अगले ही पल, मुझे अपने असभ्य जवाब पर पछतावा हुआ। 'ओह, मुझे माफ़ करना। ठीक है, ज़रूर... लेकिन, उम्म... मैं... मैं आपकी क्या मदद कर सकती हूँ? मैं आपकी स्थिति को पूरी तरह से नहीं जानती। मेरा सुझाव है कि आप ऐसी गतिविधियों में शामिल हों जो ध्यान को बढ़ावा देती हैं। मैंने आपकी प्रोफ़ाइल में पढ़ा था कि आप ध्यान करती हैं। तो फिर आप योगा क्लास में क्यों नहीं शामिल हो जातीं, या ऐसे समूहों से क्यों नहीं जुड़तीं जो स्वतंत्र रूप से सोचने, सार्वजनिक रूप से बोलने और

रचनात्मक रूप से खुद को व्यक्त करने की हमारी क्षमता को बढ़ाते हैं? आप शायद अपनी माँ से खुलकर बात करके इस प्रक्रिया की शुरुआत कर सकती हैं। आपको उन्हें धैर्यपूर्वक समझाना होगा कि आपकी भी अपनी ज़िंदगी है और आपको भी दूसरे लोगों और गतिविधियों में शामिल होने की ज़रूरत है।'

बहुत थके हुए स्वर में उसने कहा, 'हम्म... मुझे करना तो चाहिए। दरअसल, मुझे पता है और मैं ये और वो करने का फैसला भी करता हूँ... लेकिन, अचानक या तो माँ की तरफ से ढेर सारे काम आ जाते हैं या फिर मेरा मन ही नहीं करता और मैं पीछे हट जाता हूँ।'

'पिछले कुछ वर्षों में आपका दृढ़ संकल्प कमजोर पड़ गया लगता है। नियमित रूप से व्यायाम करना क्यों न शुरू करें? कभी-कभार दौड़ें, नियमित रूप से तेज चलना शुरू करें, या फिर तैराकी ही कर लें! आपको जल्द ही अच्छा महसूस होने लगेगा। मैंने कहीं पढ़ा है कि व्यायाम करने या हंसने से एंडोर्फिन हार्मोन उत्पन्न होते हैं और मुक्त होते हैं, जिससे हमें अच्छा महसूस होता है। अपने दोस्तों के साथ बाहर जाएं और फिल्में देखें, या फिर अकेले ही यात्रा पर जाएं और नए दोस्त बनाएं।'

दूसरी तरफ सन्नाटा छा गया। उफ़! क्या यह बहुत ज़्यादा था? 'मानिक, तुम वहाँ हो?' जब उन्होंने जवाब दिया, तो उनके स्वर में अचानक जोश आ गया, "शानदार! लीना, तुम वाकई एक प्रेरणादायक इंसान हो। मुझे पता था। तुम्हारे बारे में मेरा अनुमान सही निकला। तुम्हारे अंदर एक अलग ही चमक है। तुम बहुत आगे जाओगी। एक दिन तुम मशहूर हो जाओगी। क्यों न तुम अपने प्रेरक भाषण या वीडियो यूट्यूब पर अपलोड करो? तुम कमाल कर दोगी!"

मैं शर्म से लाल हो गई, 'अरे नहीं, कृपया! मेरी इतनी प्रशंसा मत कीजिए। मैंने तो वही कहा जो कोई भी आम तौर पर आपको कहता।'

या तो मैंने कुछ ज्यादा ही बोल दिया था या मैं सचमुच बहुत थक गई थी, क्योंकि मुझे अचानक एहसास हुआ कि सोने का समय काफी पहले ही बीत चुका है। मैंने उससे कहा, 'मानिक, लगता है अब बहुत देर हो गई है। मुझे कॉलेज के लिए सुबह जल्दी उठना है। अच्छा, तो... अलविदा!'

'धन्यवाद, लीना। अब मैं निश्चित रूप से अपने जीवन में कुछ बदलाव लाने जा रही हूँ... मैं पूरी तरह से ऊर्जावान महसूस कर रही हूँ! क्या हम अक्सर बातचीत कर सकते हैं ताकि मुझे प्रेरणा मिले, उत्साह मिले और अगर कोई शंका हो तो मैं उसे दूर

कर सकूँ?'
मैं झिझक रहा था, और यह स्वाभाविक था। मैं उसकी नीरस मानसिकता में उत्साह भरने की जिम्मेदारी लेने के लिए बहुत उत्सुक नहीं था।
'आप मुझे ईमेल भेज सकते हैं और हां, हम कभी-कभार चैट कर सकते हैं या व्हाट्सएप पर बात कर सकते हैं। और यह आपके लिए जरूरी नहीं है कि आप मेरी कही हर बात को आजमाएं। बस अपने दिल की सुनिए! और आपको फर्क महसूस होगा,' मैंने कमजोर स्वर में कहा।
'देखो, एक और प्रेरणादायक विचार! बहुत-बहुत धन्यवाद, लीना। मुझे लगता है कि मुझे एक सच्चा दोस्त, विश्वासपात्र और मार्गदर्शक मिल गया है,' उसने भावुक होकर कहा।
उस पल मैं अपनी भावनाओं को लेकर अनिश्चित थी। शायद, मेरे शरीर में एंडोर्फिन रिलीज़ होंगे और मुझे अच्छा महसूस होगा जब मैं किसी के जीवन में बदलाव ला पाऊंगी, मैंने सपनों की दुनिया में कदम रखने से पहले खुद को यह आश्वासन दिया, या यूं कहें कि बुरे सपनों की दुनिया में?
सोमवार, सुबह 2 बजे। व्हाट्सएप पर मैसेज करें।
हे लीना,
आप एक फरिश्ता हैं। आपसे मिलकर मुझे बहुत खुशी हुई। आपने जो कुछ भी कहा, वह बिल्कुल सच है। मुझे खुद की मदद करनी होगी। क्या मैंने आपको बताया कि मेरी आर्थिक स्थिति काफी अच्छी है? मैं हर महीने लगभग 8,000 डॉलर कमाती हूँ, और मेरी अनुमानित बचत 300,000 डॉलर से अधिक है। फिर भी, जब मैं अपने भविष्य के बारे में सोचती हूँ तो मुझे डर और घबराहट होती है। मैं और मेहनत करती हूँ और पैसे बचाती हूँ, लेकिन मुझे संतुष्टि नहीं मिलती। मैं ध्यान करना चाहती हूँ... मैं कोशिश करती हूँ, लेकिन कर नहीं पाती। क्या आप मुझे मन को थोड़ा शांत करने के कुछ तरीके बता सकती हैं?
क्या हम आज रात 9 बजे आपके समय के अनुसार बात कर सकते हैं?
मैंने मानिक का संदेश बार-बार पढ़ा। मुझे कुछ गड़बड़ लग रही थी... कुछ अजीब और अप्रिय विचार मुझे परेशान कर रहे थे। क्या मुझे चिराग से इस बारे में बात करनी चाहिए? मैं खुद से बहस कर रही थी। आखिर हम फिर से पुराने दोस्त बन गए थे और हर दूसरे दिन हर बात पर चर्चा करते थे। यह दुविधा पूरे पांच मिनट तक बनी रही। मैंने

चिराग को फोन किया और उसे मानिक के बारे में सब कुछ बताया। वह कुछ पल चुप रहा। मुझे घबराहट होने लगी। क्या वह फिर से भड़क उठेगा?

'लीना, क्या तुम सच में जानना चाहती हो कि मैं क्या सोचती हूँ? खैर, मुझे लगता है कि तुम न तो काउंसलर हो और न ही मेरी सलाह मानने वाली। तुम मुझसे पूछ रही हो कि क्या तुम्हें इस आदमी से और संपर्क रखना चाहिए। सच में, क्या तुम मज़ाक कर रही हो? खैर, मुझे लगता है कि वह अपने जीवन पर बिल्कुल भी नियंत्रण नहीं रख पा रहा है। क्या कोई सामान्य व्यक्ति किसी ऐसे व्यक्ति को अपनी वित्तीय जानकारी देगा जिससे वह अभी-अभी ऑनलाइन मिला हो, और वह भी तब जब वह खुद एक वित्तीय सलाहकार हो? इसके अलावा, वह इतना अनिर्णायक है और उसका जीवन अस्त-व्यस्त लगता है। तुम्हें उससे दूर ही रहना चाहिए।'

मैंने मानिक को जवाब दिया:

मानिक, आज रात मुमकिन नहीं है। आपको ऑनलाइन शुरुआती लोगों के लिए ध्यान के कोर्स मिल सकते हैं। यूट्यूब पर सर्च करें, कुछ सुकून देने वाला संगीत डाउनलोड करें और अपनी सांसों पर ध्यान केंद्रित करने की कोशिश करें। शुभकामनाएँ!

आप मुझे ईमेल भेज सकते हैं। हम किसी और दिन बात करेंगे।

सोमवार रात 8 बजे

लीना,

माफ़ करना, मैं कितनी बेकार हूँ। मुझे पता है कि तुम्हारा हफ़्ता अभी शुरू ही हुआ है, लेकिन मैं तुम्हें बताना चाहती हूँ कि तुम मुझ जैसे कई भटके हुए लोगों को सही राह दिखा सकती हो। मैंने आज अपनी माँ को बताया कि मैं रविवार को दोस्तों के साथ फ़िल्म देखने जाऊँगी। बहुत-बहुत धन्यवाद, लीना। तुमने मेरी ज़िंदगी बदल दी!

मंगलवार दोपहर 2 बजे

यह जानकर अच्छा लगा, मानिक। तुम जल्द ही अपना रास्ता ढूंढ लोगे।

आपको कामयाबी मिले!

लीना।

मंगलवार रात 9 बजे

अरे, मैं सोच रहा था कि अगर आप खाली हों तो आपको कॉल कर लूँ। अपना ख्याल रखना।

बुधवार सुबह 5 बजे

सुप्रभात, लीना।
मैं अनिच्छा से, उसी दिन दोपहर **12:30** बजे
हे, आपका आने वाला सप्ताह अच्छा रहे, मानिक।
गुरुवार सुबह **4** बजे
हैलो, एंजेल लीना!
मैंने अभी-अभी आपके सोशल मीडिया प्रोफाइल देखे। सच कहूँ तो, आपके चेहरे में एक दिव्य आकर्षण है। आप किसी वैद्य जैसी लगती हैं। मुझे लगता है, हमारा पिछले जन्मों से कोई संबंध है और आप इस जन्म में मेरे लिए उद्धारकर्ता बनकर आई हैं। आपके बिना मेरा क्या होता! बहुत-बहुत धन्यवाद, लीना।
गुरुवार रात **10** बजे
मैं: हे मानिक, क्या हम कल रात 9 बजे बात कर सकते हैं?
इस बार मुझे पूरा यकीन था कि मुझे उससे बात करनी ही होगी।
अगले दिन, मानिक ने रात 9 बजे फोन किया। 'हे लीना, कैसी हो?'
‘ठीक है।’ मैंने इसे संक्षिप्त और जल्दी खत्म करने का फैसला किया था।
‘आप तो बिल्कुल दिव्य हैं...’
मैंने उसे बीच में ही रोकते हुए कहा, 'अरे... अरे... मानिक। कृपया ये सब बंद करो। पिछले कुछ दिनों से, बल्कि जब से हमारा संपर्क हुआ है, मुझे एक अजीब सी बेचैनी महसूस हो रही है। तुम अपने जीवन के बारे में बताना चाहते थे और मैंने पूरी ईमानदारी से सहानुभूति दिखाने की कोशिश की। मैंने तुम्हें कुछ सुझाव दिए, बस इतना ही। कृपया मेरी प्रशंसा मत करो। मुझे तब पता नहीं था कि मेरे सुझाव तुम्हारे काम आएंगे या नहीं, लेकिन मैंने अपनी तरफ से पूरी कोशिश की। लेकिन अब मुझे ये सब बहुत घुटन भरा लग रहा है। मैं हमारी इस छोटी सी मुलाकात को यहीं खत्म करना चाहता हूँ। मैं तुम्हें तुम्हारी जीवनशैली बदलने और अपने डर पर काबू पाने के लिए हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ, लेकिन मुझे लगता है कि इसमें मेरी भूमिका बहुत छोटी थी और अब खत्म हो चुकी है।'
‘अरे नहीं! मुझे बहुत अफ़सोस है... बहुत अफ़सोस। मुझे नहीं पता यह कैसे और कब हुआ, लेकिन मुझे खेद है कि मैंने आपको असहज महसूस कराया। कृपया, मैं आपसे विनती करता हूँ, मुझे एक और मौका दीजिए। मैं भविष्य में सावधान रहूँगा,’ मानिक ने क्षमा मांगते हुए कहा।

एक अजीब सी बेचैनी मुझे लगभग घुटन महसूस करा रही थी। 'नहीं मानिक, मुझे माफ़ करना। मैं तुम्हारे सभी प्रयासों में सफलता की कामना करती हूँ, लेकिन मुझे लगता है कि यहीं समाप्त करना बेहतर होगा। मुझे जाना है, और अपना ख्याल रखना। अलविदा।'

दूसरी तरफ सन्नाटा छा गया। मैंने फोन काट दिया। मुझे यकीन था कि मेरी बात संक्षिप्त थी, पर कठोर नहीं थी।

शनिवार, रात **1** बजे। व्हाट्सएप पर मैसेज करें।

हे, मुझे माफ करना, लीना।

शनिवार सुबह **2** बजे

क्या आप मुझे एक और मौका दे सकते हैं, कृपया?

शनिवार सुबह **4** बजे

क्या आप आज रात 9 बजे मुझसे बात करेंगे?

रविवार सुबह **10** बजे

मुझे लगता है, आप जवाब नहीं देंगे। अपना ख्याल रखना। अलविदा!

एक महीने बाद ईमेल**...**

> हे लीना,
>
> आशा है आप ठीक होंगी। मैं तो बहुत खुश हूँ और बहुत अच्छा महसूस कर रहा हूँ। बस आपको बताना चाहता था कि आपके मना करने के बाद, मेरी मुलाकात दिल्ली की एक लड़की से shaadi-ka-laddoo.com पर हुई। आपके विपरीत, वह बिल्कुल भी बदतमीज़ नहीं है और हम रोज़ बात करते हैं। वह आपसे ज़्यादा खूबसूरत है और डॉक्टर है। वैसे, क्या मैंने आपको बताया था कि आपको थोड़ा मेकअप करने और अपने व्यक्तित्व को सुधारने की ज़रूरत है? आपकी प्रोफ़ाइल तस्वीरों से तो आप बहुत नीरस लगती हैं। और अगर आप थोड़ी मीठी बातें करेंगी, तो शायद आपको दूल्हा मिल जाए।
>
> मैं अगले महीने अपनी गर्लफ्रेंड से मिलने दिल्ली आ रहा हूँ और फिर हम दो हफ़्ते के लिए यूरोप जाएंगे। बहुत बुरा हुआ! ये आपके साथ भी हो सकता था, लेकिन देखिए, आपका नुकसान किसी और का फायदा है। ☺

मेरी सलाह है: शादी के बारे में जल्द फैसला कर लो, वरना तुम मिस्टर परफेक्ट का इंतजार करते-करते बूढ़ी हो जाओगी। वैसे भी, अब तुम इतनी जवान नहीं हो।

खैर, अब मुझे अपनी गर्लफ्रेंड के लिए खरीदारी करने जाना है। आपको शुभकामनाएं।

माणिक

एक मीठा-मीठा नमूना

इस बार तो मैं चिराग को फोन करके अपनी कहानी (उस तीखे लड्डू जैसे मानिक के लिखे कड़वे कमेंट्स) का अंजाम नहीं बता सकती थी। बेशक, इस बार कहानी में उतना रोना-धोना नहीं था, जितना राहत की सांसें थीं, फिर भी मैं पूरी तरह से निश्चिंत नहीं थी। मुझे पता था कि आजकल चिराग के ख्याल मेरे मन में बहुत जगह ले रहे हैं। क्या मैं उसकी तरफ आकर्षित हो रही हूँ? मैं अक्सर इस विचार में उलझ जाती थी, और हमेशा इसे नज़रअंदाज़ कर देती थी। अरे, ऐसे बेवकूफी भरे ख्यालों को मन में मत लाओ। अच्छे दोस्त तब तक अच्छे होते हैं जब तक वे दोस्त बने रहते हैं। कौन जाने वो शादीशुदा है, किसी रिश्ते में है या फिर सगाईशुदा? और अगर अभी अकेला भी है, तो कौन जाने वो किसके साथ अपनी जिंदगी बिताना चाहेगा? आखिर, विकल्पों की कमी तो नहीं होगी...

कुछ दिन पहले, यूं ही फेसबुक देखते हुए मेरा ध्यान एक बार फिर तारा की प्रोफाइल पर गया। ग्रुप में चिराग और तारा की जो आखिरी फोटो मैंने देखी थी, उसके बाद से कोई अपडेट नहीं था। अगली चैट में चिराग से तारा के बारे में पूछने का मन तो हुआ, लेकिन फिर मुझे वो झगड़ा याद आ गया जो हमारे बीच तब हुआ था जब मैंने उसकी निजी जिंदगी में तांक-झांक करने की कोशिश की थी। हम दोनों के मन में उस झगड़े से कड़वाहट रह गई थी।

मैंने अपने कंधे सीधे रखे, ऊपर देखा और खुद को याद दिलाया, मैं हूं और मैं पूर्ण महसूस करती हूं और अपनी पूर्णता को किसी ऐसे व्यक्ति के साथ साझा करने के लिए तैयार हूं जो मेरा जीवनसाथी बन सके - न कि मेरा बेहतर साथी!

पिछले डेढ़ साल में मेरे जीवन में एक बड़ा बदलाव आया था और वो ये कि मुझे रविवार से डर लगने लगा था। या तो माँ मुझे ज़मीन पर उतरने की याद दिलाने के लिए रविवार चुनती थीं, या फिर वो दिन लड्डूओं के बारे में दुख भरी कहानियों और

विलाप से भरा होता था। आखिर कोई लड्डू मीठा क्यों नहीं होता? मैंने ये आखिरी शब्द कहे और नाराज़गी भरे चेहरे से भगवान की तरफ देखा। (ऐसा लगा जैसे स्वर्गदूतों ने ठीक उसी क्षण कहा हो... आमीन! और, ओह! आने वाले दिनों में मुझे उन शब्दों पर कितना पछतावा हुआ!)

रविवार की बात पर लौटते हुए, हाय! वो मस्ती और शरारतों से भरे रविवार कहाँ गायब हो गए, जब शौर्य और मैं रोमांचक यात्राओं की योजना बनाते थे; खाना पकाने के ऐसे प्रयोग करते थे जिनसे माँ परेशान हो जाती थीं और घर हँसी से गूंज उठता था और लगातार फिल्में देखते हुए फर्श पर पॉपकॉर्न बिखर जाता था? मुझे उन दिनों की बहुत याद आती है जब जीवन इतना चिंताओं से भरा नहीं था; और रुककर निहारने का समय होता था।

और वो खौफनाक रविवार बहुत जल्दी और बार-बार आने लगे। एक रविवार को माँ ने मुझे अपने कमरे में बुलाया। उनके चेहरे पर दृढ़ और गंभीर भाव थे। पापा के चेहरे पर निराशा का भाव था, जिसका मतलब था कि उन्होंने मेरे लिए बहादुरी से लड़ाई लड़ी थी, लेकिन जंग हार गए थे। मैं सोफे पर बैठ गया और आने वाली चुनौतियों के लिए खुद को तैयार किया।

मैंने कुछ भरोसेमंद ज्योतिषियों से सलाह ली है। आपकी कुंडली में कुछ दोष है और इसी वजह से हमें कोई सफलता नहीं मिल रही है।

'माफ़ कीजिए!' मैंने हैरानी से कहा। इस चौंकाने वाली खोज के लिए मैं बिल्कुल भी तैयार नहीं था।

'नहीं, मुझे माफ़ कीजिए! आपके नक्षत्रों की स्थिति में असंतुलन को ठीक करने के लिए, आपको मंदिर में एक समारोह में मटके से विवाह करना होगा।' उसने इतनी सहजता से कहा, मानो हर जगह लड़कियाँ मिट्टी के बर्तनों से शादी कर रही हों और यह एक सामान्य बात हो।

'क्या! मिट्टी के बर्तन से शादी? तुम्हारा मतलब मिट्टी के मटके से है?' मैं लगभग चीख पड़ी।

'क्यों? क्या बात है? यह तो बहुत आसान उपाय है, शर्माजी—आपके पापा के हस्तरेखा विशेषज्ञ मित्र ने यही बताया है। आपको शुक्रगुजार होना चाहिए कि इसका उपाय है।'

नहीं! मैं ऐसी बकवास में कभी शामिल नहीं होने वाली! आप मुझे क्या समझते हैं?

कोई वस्तु, जिसमें भावनाएँ और तर्कशक्ति नहीं होती? खैर, अगर आप भूल गए हों, तो आपने मुझे एक समझदार वयस्क की तरह पाला है। मैं सोच सकती हूँ और अपने फैसले ले सकती हूँ। और, क्या आप यह भी भूल गए कि मैं कॉलेज में पढ़ाती हूँ? क्या मुझे अपने छात्रों को यही बताना चाहिए? कि अगर आपकी शादी नहीं हो पा रही है, तो पहले जाकर मिट्टी के बर्तन से शादी कर लो, और सारी कमियाँ दूर हो जाएँगी?
मैं रुकने को तैयार नहीं थी, लेकिन अपने तीखे शब्दों के बीच ही मुझे ज़ोर-ज़ोर से रोने की आवाज़ सुनाई दी। मैं रुक गई। माँ रो रही थी। यह एक ऐसा तरीका है जिसे माताएँ अपने बच्चों से सहमति में सिर हिलाने के लिए इस्तेमाल करती हैं। उनका रोना और तेज़ हो गया, और पापा ने उन्हें शांत करने की जो कोशिश की, उसे उन्होंने सख्ती से ठुकरा दिया।
मेरा दिल पिघल गया और मेरी आवाज़ नरम पड़ गई।
'माँ, कृपया मुझे समझने की कोशिश करो। मैं यह सब नहीं कर सकती... यह मेरे स्वभाव के विपरीत है।'
माँ, सिसकते हुए और आँखों से आँसू बहते हुए बोलीं, 'बिन्नी, तुम्हें कुछ भी करने की ज़रूरत नहीं है। मैं सब संभाल लूँगी। तुम्हें बस कुछ काम बिना मन के करने हैं, अपनी उस माँ के कहने पर जो तुमसे बहुत प्यार करती है। मैं तुम्हें खुशहाल ज़िंदगी जीते देखना चाहती हूँ। मेरे लिए, हमारे लिए, ये करो।'
आखिरी कुछ शब्दों पर उसने पापा की तरफ देखा और सबने एक साथ सिर हिलाकर सहमति दी। उसने आगे कहा, 'तुम्हें बस कुछ पल के लिए एक मिट्टी के बर्तन से विवाह करना है और उसे गंगा में विसर्जित कर दिया जाएगा। मैंने ऋषिकेश के एक रिसॉर्ट में कमरा बुक कर लिया है और एक पंडित जी का भी इंतजाम कर दिया है। हम कल दोपहर यानी बुधवार को उड़ान भरेंगे और गुरुवार को छुट्टी है। तुम्हारी कॉलेज की छुट्टी नहीं होगी और हम गुरुवार शाम को वापस आ जाएंगे। मुझे पता है मैंने तुमसे बिना पूछे ही सब कुछ व्यवस्थित करने की कोशिश की है, लेकिन बेटा, मुझे तुम्हारी चिंता हो रही है... क्या तुम चाहते हो कि मैं हाथ जोड़कर तुमसे विनती करूं कि कृपया मेरे लिए यह कर दो?'
मैंने कोई जवाब नहीं दिया। सिसकियाँ और तेज़ हो गईं।
'प्लीज, बिन्नी,' वह सिसकियों के बीच बुदबुदाई।
मैंने साथ जाने का फैसला किया और गंभीरता से सिर हिलाया। उसने ऊपर देखा,

जैसे कोई धुंधले दिन में बादलों के पीछे से सूरज निकलते ही आसमान की ओर देखता है।

अपने दुपट्टे के एक कोने से आंसू पोंछते हुए, उसने खुशमिजाज दिखने की कोशिश की, 'इसे एक छोटी सी छुट्टी समझो, प्रिय। पिछली बार जब हम साथ में ऋषिकेश गए थे, तो हम दोनों को कितना अच्छा लगा था? और यह रिसॉर्ट शहर का सबसे बेहतरीन रिसॉर्ट है।'

इस पूरे समय पापा ने एक शब्द भी नहीं कहा था। उनके चेहरे पर भी मुझे थोड़ी राहत दिखाई दी। क्या वह भी बराबर के सहयोगी थे?

मुझे उम्मीद है कि उन्होंने शादी के कार्ड नहीं छपवाए होंगे: 'हमारी बेटी लीना का विवाह श्रीमान...उह...श्री मटका से होने के इस पवित्र अवसर पर हम आपकी सहृदय उपस्थिति का अनुरोध करते हैं,' मैंने उनके कमरे से निकलते हुए बुदबुदाया।

जैसे ही मम्मी को लगा कि मैं उनकी बात नहीं सुन पा रही हूँ, उन्होंने पापा से कहा, 'क्या आपको नहीं पता कि ऐश्वर्या राय ने अभिषेक से शादी करने से पहले एक पेड़ से शादी की थी? आज उन्हें देखो... वे एक खूबसूरत बेटी के साथ एक आदर्श जोड़ी हैं।' पापा ने धीरे से 'हम्म' कहा...

मैं वापस उसके सामने खड़ी हुई और व्यंग्य भरे लहजे में बोली, 'अरे हाँ, माँ—क्या आपने मेरी शादी के दिन के लिए साउथ एक्स स्थित उशनक माल एंड संस से कपड़े खरीदने का प्लान नहीं बनाया है?' उसे मेरी बात चुभ गई। उसकी आँखों में आग सी जल रही थी—रसोई में जिस गैस बर्नर पर राजमा पक रहा था, उसकी तेज़ लपटों से भी ज़्यादा तेज़।

*****

मैं अगले दिन और उसके अगले दिन भी चुप रहा। हम फ्लाइट में सवार हो गए। माँ को मेरी सहमति से राहत तो मिली, लेकिन साथ ही साथ वह चिंतित भी लग रही थीं। ओह, माताएँ! उनकी चिंता अतुलनीय और अद्वितीय है, मैंने मन ही मन सोचा। क्यों उसे परेशान करना? अगर मैं उसके लिए यह कर ही रही हूँ, तो मुस्कुराते हुए ही क्यों न करूँ। मैंने उसकी ओर देखा और उसे दिलासा देते हुए उसका हाथ हल्के से दबाया। उसकी आँखों में नमी झलक रही थी, फिर भी वह मुस्कुराई।

ऋषिकेश स्थित शांति अलोहा रिज़ॉर्ट वाकई शानदार था! हरे-भरे जंगलों के बीच बसा और पवित्र गंगा नदी के मनोरम दृश्य के साथ, यह रिज़ॉर्ट अपने परिसर में कदम रखने

वाले हर व्यक्ति पर एक सुखद प्रभाव छोड़ता था। हालांकि मुझे मानो जबरदस्ती वहाँ लाया गया था, फिर भी वहाँ होने मात्र से ही मुझे बहुत खुशी महसूस हुई।

हमारा कमरा सादा था लेकिन खूबसूरती से सजा हुआ था। कमरे में आराम करने के बाद हमने दोपहर के भोजन के लिए नीचे रेस्तरां जाने का फैसला किया। रास्ते में हमारी मुलाकात एक नवविवाहित जोड़े से हुई, जो जाहिर तौर पर उसी रिसॉर्ट में ठहरे हुए थे। माँ ने हमेशा की तरह उन्हें देखकर मुस्कुराया और उन्होंने भी मुस्कुराकर जवाब दिया। फिर मौसम और ऐसी ही कुछ बातों पर हल्की-फुल्की बातचीत शुरू हो गई। वे दोनों बेहद मिलनसार थे और अपने दिल में उमड़ रही खुशियों को बाँटने के लिए उत्सुक थे!

'हम मुंबई से हैं और हनीमून के लिए देवभूमि आए हैं। हम कल ही मसूरी से रानीखेत जाते हुए यहाँ आए हैं,' उस हंसमुख युवक ने दुल्हन की माँ को यह अनचाही जानकारी दी, और दुल्हन शर्म से लाल हो गई।

बेचारे को जरा भी अंदाजा नहीं था कि उसने किसी की संवेदनशील नस को छू लिया है, और माँ के चेहरे के भाव अचानक बदलते देखकर वह हैरान रह गया। उन्होंने उन्हें बधाई दी और 'आप दोनों को ढेर सारी शुभकामनाएँ' कहते हुए आगे बढ़ गईं और मुझे भी पीछे आने का इशारा किया।

उस संक्षिप्त मुलाकात ने माँ का मिजाज बदल दिया। वह बेरुखी से अपना खाना खाने लगीं। इस बीच, मैंने मूंग दाल हलवे की दूसरी सर्विंग ले ली, हालाँकि माँ को मेरा यह प्रयास बिल्कुल भी पसंद नहीं आया।

'बिन्नी, कल के लिए तैयार रहना। हमें सुबह 8 बजे तक मंदिर पहुंचना होगा। समारोह दो घंटे में समाप्त हो जाएगा और फिर हम शाम को वापस उड़ान भरने से पहले दर्शनीय स्थलों की सैर या खरीदारी कर सकते हैं। आज शाम गंगा आरती के लिए हमें यहीं रहना है।'

'मुझे ठीक लगता है, माँ।'

शाम होते-होते हम बुरी तरह थक चुके थे। हम दोनों बस लेट गए और गहरी नींद सो गए।

आधी रात को मुझे ऐसा लगा जैसे कुछ हिल रहा हो। ऐसा लगा जैसे बिस्तर या कोई और फर्नीचर कांप रहा हो। मैंने आंखें खोलीं और अंधेरे में समझने की कोशिश की। कहीं से धीमी आवाज़ें आ रही थीं। मुझे तुरंत समझ आ गया कि कंपन और आवाज़ें

बगल वाले कमरे से आ रही थीं, शायद नवविवाहित जोड़े के कमरे में। कमरे में सब कुछ कांप रहा था और फिर फुसफुसाहट और कराहें चरम पर पहुंच गईं और फिर एकदम बंद हो गईं।

हे भगवान! मैंने धीरे से कहा, क्योंकि मुझमें माँ की तरफ देखने और यह जानने की हिम्मत नहीं थी कि वह सो रही हैं या जाग रही हैं। प्लीज़... ओह, प्लीज़—काश वह सो रही हों, मैंने दिल से प्रार्थना की। लेकिन मैं जानती थी कि तेज़ आवाज़ों से किसी का भी जागना मुश्किल होता है। यह मेरे जीवन के सबसे अजीब पलों में से एक था और मुझे पता था कि माँ के लिए भी ऐसा ही होगा।

*****

दूसरे दिन, मुझे थोड़ा अजीब सा लगा और साथ ही साथ जो होने वाला था उसे लेकर काफी घबराहट भी हुई। मंदिर परिसर में बैठे-बैठे मैंने इसे ज्यादा गंभीरता से न लेने का फैसला किया। मैंने इसमें हास्य ढूंढने की कोशिश की, हल्की हंसी आई और मैंने ठान लिया कि अगर कभी मैं अपने निजी दूल्हे को ढूंढने के अपने संघर्षों पर कोई किताब लिखूँगी, तो इस घटना का जिक्र जरूर करूंगी। इसे मेरी आत्मकथा में एक ऐसे क्षण के रूप में दर्ज होना चाहिए जब मैंने साहसपूर्वक असंभव को सहा। मैं हवन कुंड के सामने एक खूबसूरती से सजे हुए मटके के बगल में बैठी थी।

मैंने दबी आवाज़ में माँ के कानों में फुसफुसाते हुए कहा, 'वैसे, माँ, आपका दामाद आज शादी के लिए सीधे पार्लर से आया है और बहुत ही आकर्षक लग रहा है।'

मां ने गुस्से भरी नजर से मेरी तरफ देखा।

पंडितजी कुछ मंत्र बुदबुदा रहे थे जिन्हें हम दोनों में से कोई भी नहीं समझ पा रहा था (हमसे मेरा मतलब है - माँ और मैं; न कि मटका और मैं)।

असहजता की चरम सीमा तब पहुँच गई जब मुझे अपने प्रिय दूल्हे को हाथों में पकड़े हुए आग के सात चक्कर लगाने पड़े। यह अविश्वसनीय रूप से असहज था।

अंततः बेचैनी कम हुई और मटका गंगा में विसर्जित कर दिया गया। पंडितजी ने अपनी फीस और फल लिए और माँ ने राहत की साँस ली, फिर विजयी स्वर में भविष्यवाणी की, 'अब तुम्हारी शादी जल्द ही हो जाएगी, बिन्नी।'

घर वापसी की उड़ान मज़ेदार रही क्योंकि हम दोनों लगातार बातें करते रहे और पिछले कुछ महीनों की अनकही गपशप एक-दूसरे से करते रहे। इस बीच, मैं बीच-बीच में कई बार हँसती रही, मिट्टी के घड़े (मतलब, मेरे दूल्हे) के साथ फेरे लेने और फिर उसे (या

उसे?) बेरहमी से डुबो देने की याद करके।
मेरे मन में एक शरारती ख्याल आया और मैंने बिना कोई भाव दिखाए माँ से पूछा, 'माँ, क्या मुझे shaadi-ka-laddoo.com पर अपनी प्रोफ़ाइल संपादित करके उसमें यह जोड़ देना चाहिए कि "दो बार शादी कर चुका हूँ"—एक बार किसी इंसान से, और दूसरी बार किसी मटके से, और अब मैं फिर से किसी इंसान की तलाश में हूँ?'
'चुप रहो, बिन्नी!'
*****
दो दिन बाद, काम से घर लौटने पर मैंने माँ को मुस्कुराते हुए पाया। 'अब क्या?' मैंने संशयपूर्वक पूछा।
'बेटा, मैंने आज सुबह शैलेश से बात की। ओह, वह कितना प्यारा लड़का है।'
'Shailesh, who?'
'अरे वाह, shaadi-ka-laddoo.com पर—मैं कुछ प्रोफाइल देख रही थी तभी शैलेश की प्रोफाइल सामने आ गई। मुझे उसकी तस्वीर अच्छी लगी और फिर मैंने उसके बारे में पढ़ा। वैसे, बिन्नी, मैंने आज अपने मोबाइल में shadi-ka-laddoo.com ऐप डाउनलोड कर लिया है। बढ़िया है ना! अब मैं एक क्लिक में प्रोफाइल देख सकती हूँ। रुको, मुझे उसकी ज़रूरी जानकारी पढ़ लेने दो,' माँ ने कहा।
मैंने उस लड़के की खूबियों की तारीफों का इंतज़ार किया, लेकिन कुछ नहीं हुआ। शायद उसके पास दिखाने लायक कुछ खास नहीं था। मैं समझ गई कि वो आम सा दिखने वाला लड़का होगा, इसीलिए माँ इतनी चुप हैं।
'उसकी शक्ल ठीक-ठाक है; बहुत अच्छी नहीं है, पर ठीक है। मुझे वो अच्छा लगा। हमें एक नेक दिल चाहिए, बेटा, क्योंकि खूबसूरती समय के साथ फीकी पड़ जाती है,' माँ ने उदास मन से कहा।
मैंने उसे बीच में नहीं टोका और उसे बोलने दिया।
जाहिर तौर पर, उसने और भी बहुत कुछ कहा, 'मुझे वह पसंद आया और मैंने उसे जुड़ने के लिए आमंत्रण भेजा। फिर, जब मैंने देखा कि वह ऑनलाइन है, तो मैंने एक संदेश भेजा और उसने तुरंत जवाब दिया। उसने मुझे नमस्ते कहा और फिर आपकी प्रोफ़ाइल की तारीफ की। उसने मुझसे पूछा कि क्या वह मुझे कॉल कर सकता है और मैंने उसे अपना नंबर दे दिया। बिन्नी, मैं आपको बता नहीं सकती कि वह कितना मधुर

लग रहा था। वह अब तक के सबसे सभ्य लड़के के रूप में सामने आया। उसने मेरे बारे में, आपके पिताजी के हालचाल के बारे में पूछा और परिवार के सभी सदस्यों को नमस्कार कहा। वह इतना विनम्र था कि उसने बहुत ही विनम्रता से पूछा कि क्या वह आपके निजी नंबर पर आपसे संपर्क कर सकता है।'

मैं हंगामा करने के लिए अपना मुंह खोलने ही वाला था कि तभी मैंने माँ को यह कहते हुए सुना, 'आजकल ऐसे विनम्र लड़के कहाँ मिलते हैं? मैं तुम्हें बता रही हूँ कि मैं इससे बहुत प्रभावित हूँ, मैंने उसे आज रात 9 बजे तुम्हें फोन करने के लिए कहा है।'

मैंने विरोध करने का मन बना ही लिया था कि तभी माँ ने फिर कहा, 'बेटा, मैंने आज तुम्हारे पसंदीदा कढ़ी-चावल बनाए हैं। कृपया, फ्रेश हो जाओ, खाना खा लो और फिर उससे बात करो।'

मां शैलेश से बहुत प्रभावित हैं। बहस करने का कोई फायदा नहीं है और वैसे भी, मैं शाम को कुछ नहीं करने वाली, मैंने मन ही मन सोचा।

*****

रात **9** बजे

शैलेश ने व्हाट्सएप पर संदेश भेजा: 'नमस्ते, क्या आप लीना जी हैं? मैं शैलेश हूं। आज सुबह आपकी मां से बात हुई और आपका नंबर मिल गया। क्या हम बात कर सकते हैं?'

वह मुझे *'नमस्ते'* और *'जी'* कहकर अभिवादन कर रहा है*?* उसे क्या हो गया है*?*

मैं: 'हे शैलेश... हाँ, माँ ने तुम्हारे बारे में मुझसे बात की थी। कैसे हो? चलो बात करते हैं।'

शैलेश ने फोन किया और मैंने जवाब दिया, 'बातचीत करना अच्छा रहेगा, है ना?'

जी हां, लीनाजी। आपका दिन कैसा रहा?

मुझे उनकी बात समझ में नहीं आ रही थी। उनकी आवाज़ बहुत धीमी थी। मुझे उन्हें सुनने के लिए फ़ोन को कान के पास लाना पड़ा।

मैंने जवाब दिया, 'सब ठीक था। आपका दिन कैसा रहा?'

पहले की तुलना में अधिक विनम्र स्वर में शैलेश ने उत्तर दिया, 'मैं उठा, अपने लिए और माँ के लिए चाय बनाई, फिर अपने पौधों से बातें कीं और अब आपसे बात कर रहा हूँ।'

मुझे लगा कि माँ सही कह रही थीं। सच कहूँ तो, हाल के दिनों में मैंने इस आदमी

जितना सभ्य कोई और आदमी नहीं देखा था। और वो अपने पौधों से बातें भी करता है!

‘लीनाजी, क्या मैं अपने बारे में बताकर शुरुआत कर सकता हूँ?’

और अब वो आ रहा है... मैं आराम से बिस्तर पर पैर मोड़कर बैठ गई—एक और रोमांचक सफर के लिए तैयार! ‘जी हाँ, जरूर।’

लीनाजी, मेरा जन्म और पालन-पोषण कनाडा में हुआ है। मेरे माता-पिता काम के सिलसिले में अपने जीवन के शुरुआती दौर में ही यहाँ आ गए थे। मेरे पिता का देहांत तब हुआ जब मैं दस साल का था। माँ एक स्कूल शिक्षिका हैं, और मेरी बहन शादीशुदा है और ओंटारियो में रहती है। हम ब्रैम्पटन में रहते हैं। हम साथ रहते हैं—मैं और मेरी माँ। मैं एक इलेक्ट्रिकल इंजीनियर हूँ और एक ऐसे साथी की तलाश में हूँ जो मेरा दोस्त बन सके। मेरी पहली शादी आपसी तालमेल की कमी के कारण सफल नहीं हो पाई। मुझे अपने खाली समय में पढ़ना अच्छा लगता है और सप्ताहांत में मैं ज़्यादातर किराने का सामान खरीदने या कभी-कभार अपनी बहन के घर जाने में बिताता हूँ। लीनाजी, क्या आपको बच्चे पसंद हैं?

शैलेश बेजान स्वर में बोल रहा था... और बीच-बीच में बहुत ज़्यादा रुक-रुक कर बोल रहा था, मानो उसके गले में चीनी की थैली बंधी हो, और जब भी वह बोलता, चीनी की थैली की चीनी गिरकर उसकी आवाज़ में मिल जाती। और, पूरी प्रक्रिया में—वह रुक-रुक कर बोल रहा था। इस रफ्तार से तो मैं जल्द ही डायबिटीज़ का मरीज़ बन जाऊँगी, मैंने अपनी हंसी दबाई। उसकी बातों में रुकने का अंतराल उसके वाक्यों से भी ज़्यादा लंबा था।

'हां, मुझे बच्चे पसंद हैं।' मैंने इस विषय पर और अधिक चर्चा न करने का निर्णय लिया।

‘लीनाजी, क्या मैं आपसे पूछ सकती हूँ कि आपके मामले में क्या हुआ था? आपकी पहली शादी में क्या समस्याएं आईं थीं?’

'खैर, हमारे बीच भी तालमेल की समस्याएँ थीं। आखिरकार, पाँच साल तक एक ऐसे रिश्ते में रहने के बाद, जो काफी खराब हो चुका था, हम अलग हो गए।'

उन्होंने सहानुभूति भरे स्वर में कुछ शब्द बुदबुदाए (जिन्हें मैं समझ नहीं पाई)। 'मैं आपका दर्द समझ सकती हूँ, लीनाजी।'

उस समय मुझे ऐसा लगा जैसे वह फूट-फूटकर रोने लगेगा, लेकिन भगवान का शुक्र

है कि वह नहीं रोया।
मैं उसे बताना चाहता था कि मुझे कोई दर्द नहीं है; वास्तव में, मैं बिल्कुल ठीक हूँ।
मैंने अपने पिता के निधन पर अपनी माँ को पीड़ा में देखा था। बड़े होते हुए मैंने यह निश्चय कर लिया था कि मैं कड़ी मेहनत करके अपनी माँ और बहन को सुखमय जीवन प्रदान करूँगा। मैं लगभग पंद्रह घंटे प्रतिदिन काम करता था। मैंने दोस्तों के साथ मौज-मस्ती का समय त्याग दिया और अपनी बहन की शादी एक अच्छे परिवार में करवाई।
उसकी मीठी-मीठी बातें मेरे कानों को चुभने लगीं। एक बार फिर मुझे लगा कि अब वो टूट जाएगा, लेकिन शुक्र है कि ऐसा नहीं हुआ।
अपने स्वरों से मीठी-मीठी बातों का एक और बड़ा पैकेट निकालते हुए उन्होंने आगे कहा, 'लीनाजी, दर्द से मेरा गहरा जुड़ाव है। मेरा दिल सड़कों पर रहने वाले बच्चों के लिए तड़पता है। मुझे उस आदमी का दर्द महसूस होता है जो सर्दी की रात में बिना चादर के सोता है। मुझे बहुत दुख होता है जब मैं उस बेबस माँ को देखता हूँ जो अपने बच्चे को खिलाने के लिए सड़क पर भीख माँगती है। हमारे चारों ओर इतना दर्द है, लीनाजी। क्या आप सहमत नहीं हैं?'
मैंने अपने मुंह पर तकिया रख लिया ताकि मेरे मुंह से कोई आवाज़ न निकले। या तो मैं हंस पड़ती या रोने लगती... मैं असमंजस में थी। मेरा मन कर रहा था कि उसे चम्मच से मारूं और पूछूं, तय करो कि तुम उदास रहना चाहते हो या मीठी बातें! एक ही समय में दोनों भावनाओं का यह मिश्रण मुझे परेशान कर रहा है। अगर उसने मुझसे ये बातें आमने-सामने कही होतीं, तो पता नहीं मैं क्या करती? किसी दान संस्था में जाकर सब कुछ त्याग देती?
मेरे मुंह से एक शब्द भी न निकलने पर भी वे अविचलित रहे। ‘हमारे जीवन का अर्थ क्या है? हम किस खोज पर निकले हैं? लीनाजी, मैं अक्सर यही सोचता हूँ। हम सब अपने स्वार्थ के लिए जी रहे हैं। जरूरतमंदों की दुर्दशा की किसी को परवाह नहीं। इस दुनिया में इतनी गरीबी, भुखमरी और पीड़ा है। यह जीवन तब तक अर्थहीन लगता है जब तक मैं अपने तीन साल के भतीजे की आँखों में नहीं देखता। उसकी मासूम आँखें करुणा और पवित्रता से भरी होती हैं।’
उनके शब्दों से मेरा दिल बुरी तरह दुख रहा था, मैं तकिए से अपना दिल ज़ोर से खींच रही थी। हे भगवान, बॉलीवुड ने उन्हें अभी तक क्यों नहीं खोजा? वे हमारी अपनी निरूपा रॉय की जगह लेने के लिए एकदम सही हो सकते थे! वे ज़रूरतमंदों की

बदहाली, गरीबी, दर्द और तकलीफ़ को दर्शाने वाली एक दिल को छू लेने वाली ब्लॉकबस्टर फ़िल्म का निर्देशन भी कर सकते थे! इससे शायद हमें एक-दो ऑस्कर भी मिल जाते...

अरे, मैंने क्या बोलना शुरू कर दिया! आप सोच रही होंगी कि जब हमें एक-दूसरे के बारे में बात करनी है तो मैं जीवन के अर्थ के बारे में क्यों बात कर रही हूँ। लीना जी, अगर आप मुझे पूछने की अनुमति दें तो, आपको किस बात में रुचि है?

लो, चीनी का एक और पैकेट खत्म हो गया! उसके गले का सीटी स्कैन करवाना पड़ेगा! मुझे जानना ही होगा कि अंदर क्या है और वो हमेशा इतनी मीठी बातें कैसे करता है?

मैं कुछ बोल नहीं पा रहा था। अगर मैं अब स्विट्जरलैंड जाने की अपनी इच्छा या चाट-मिठाई खाने के अपने शौक के बारे में बताऊँ, तो शायद वो मुझे मौत के घाट उतार देगा और मुझे भूखों के मुँह से निवाला छीनने का दोषी ठहराएगा! दुनिया में इतना दुख है, ऐसे में अगर मैं अब आराम और खाने की बात करूँ, तो वो दंग रह जाएगा!

मुझे ऐसा लगा जैसे मैं ही दोषी हूँ।

'लीनाजी... लीनाजी, क्या आप वहाँ हैं?'

'मुझे...उम्म... मुझे... मुझे पढ़ना और... सोना... पसंद है... नहीं, मेरा मतलब था...' क्या मैं पागल हो गई हूँ? मैंने अभी क्या कह दिया? मुझे अपने हर शब्द पर पछतावा हुआ।

'लीना जी, एक दिन हम सब हमेशा के लिए सो जाएंगे। यह जीवन एक किताब की तरह है... हर दिन एक नया अध्याय खुलता है। हर दिन, जीवन हमें दुखी होने का एक नया कारण देता है और फिर, अगले पन्ने पर—खुश होने का एक नया कारण होता है।'

मुझे सिसकने की आवाज़ सुनाई दी... सिसकने की आवाज़। क्या यह सिर्फ़ मुझे ही लग रहा था या वह रो रहा था?

इस बार काफी देर रुकने के बाद उन्होंने आगे कहा, 'लीनाजी, आप इसे आगे कैसे बढ़ाना चाहेंगी? क्या हम कुछ देर और बात कर सकते हैं या आपको लगता है कि हमारे बड़ों को इसमें शामिल होना चाहिए?'

'मैं आपको बता दूंगी, शैलेश। उफ़... शैलेशजी।'

‘धन्यवाद, लीनाजी। क्या मैं आपसे दो मिनट की प्रार्थना में मेरे साथ शामिल होने का अनुरोध कर सकती हूँ? आइए हम अपने जीवन में, अपने आस-पास के लोगों के जीवन में और अपनी दुनिया में दुखों को कम करने के लिए प्रार्थना करें।’

मेरा मन कर रहा था कि बिस्तर के पास रखी लालटेन उठाकर अपना सिर पटक लूँ! उन्होंने मेरे जवाब का इंतज़ार नहीं किया। वे सर्वशक्तिमान ईश्वर से प्रार्थना करने लगे, उनसे विनती करने लगे कि वे हमारे हृदयों में हमारे कम भाग्यशाली भाइयों और बहनों के लिए अधिक करुणा और दया प्रदान करें!

मुझे मन की भड़ास निकालने की ज़रूरत थी! मैं चीखना चाहती थी... ज़ोर-ज़ोर से रोना और चिल्लाना चाहती थी।

अगली सुबह नाश्ते के समय, माँ ने चिंता से पूछा, 'बिन्नी, तुम्हारी आँखें लाल क्यों हैं? क्या तुम ठीक से सोए नहीं? और तुम आलू के पराठे क्यों नहीं खा रहे हो? क्या मैं उन पर थोड़ा और मक्खन लगा दूँ?'

मैं चुप रही। मैं खा ही नहीं पा रही थी। शैलेश मेरे बगल में खड़ा था और मेरे पराठों को घृणा से देख रहा था। उसके चेहरे पर खौफ साफ झलक रहा था और वह कह रहा था: ‘लीना जी, आप ऐसा कैसे कर सकती हैं? जब हर मिनट लाखों बच्चे भूख से मर रहे हैं, तब आप मक्खन लगे पराठों से अपना पेट कैसे भर सकती हैं? आपको शर्म आनी चाहिए!’

खुला अंत वाला एपिसोड

अगले कुछ दिनों तक मैं न तो ठीक से सो पाई और न ही ठीक से खा पाई। उस एक बातचीत के बाद शैलेशजी से मेरा दोबारा कोई संपर्क नहीं हुआ। वो ज़रूर अच्छे इंसान रहे होंगे, लेकिन शायद मैं सब कुछ सहन नहीं कर पाई। वो बहुत मीठे थे और उनकी ज़रूरत से ज़्यादा विनम्रता ने उस एक रात में मुझे पागल कर दिया था।

मुझे थोड़ा आराम चाहिए... कुछ अलग करना है। शायद ज़ुम्बा जॉइन कर लूँ, या फ्रेंच सीख लूँ? नहीं... क्या बैले क्लास जॉइन कर लूँ? हम्म... मैं सोच में डूबी हुई थी कि तभी माँ ने कहा, ‘बिन्नी, क्या तुम कामिनी को जानती हो जो ए ब्लॉक में रहती है? अरे बाप रे... वो जो खुद को पाक कला की विशेषज्ञ समझती है? वो जो मोहक अंदाज़ में कपड़े पहनती है और चलती है? खैर, वो इस रविवार को “थाई खाना बनाना सीखें” पर एक वर्कशॉप कर रही है। और, हे भगवान! क्या तुम्हें पता है वो कितना चार्ज कर रही है? क्या पूरी दुनिया सिर्फ दूसरों को लूटकर ही पैसा कमाने के बारे में

सोच सकती है? तीन घंटे के लिए 2,000 रुपये चार्ज करना सरासर लूट है, मैं तुम्हें बता रही हूँ। अविश्वसनीय! इससे अच्छा है कि मैं यूट्यूब देख लूँ और थाई खाना बनाना सीख लूँ!'

'थाई खाना बनाना सीखने के लिए तीन घंटे की क्लास? वाह! बहुत बढ़िया! मैं इस वर्कशॉप में ज़रूर जाना चाहूँगी।' माँ ने एक पल के लिए आँखें घुमाईं और हैरानी से मेरी तरफ देखा। मेरे चेहरे पर दृढ़ निश्चय और आवाज़ में उत्साह देखकर उन्होंने आगे बहस न करने का फैसला किया और जवाब दिया, 'ठीक है, जैसा तुम्हें ठीक लगे... मैं तुम्हें उनका नंबर भेज दूँगी।'

मैंने उत्साह से चिराग को मैसेज किया। इस बार उसने अपने उसी तीखे लहजे में नहीं कहा कि: तुम गलत हो, लीना... उसने मुझे तुरंत उकसाया और यहाँ तक कि लड़कियों के बारे में मज़ाक भी किया कि वे लड़कों को इंप्रेस करने के लिए अजीबोगरीब खाना बनाना सीख रही हैं! मैंने यह जानने की कोशिश की कि उसकी कथित गर्लफ्रेंड उसे इंप्रेस करने के लिए क्या सीख रही है, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। मैंने गौर किया कि जब भी मैं उससे उसकी निजी जिंदगी के बारे में पूछने की कोशिश करती, तो या तो वह बात को टाल देता या फिर तुरंत सतर्क और रक्षात्मक हो जाता और कुछ भी बताने से इनकार कर देता। मुझे पूरा यकीन था कि कहीं न कहीं कोई लड़की तो जरूर है...

*****

रविवार को सुबह 11 बजे, मैं कलम और नोटबुक लेकर कामिनी के घर पहुँचा। अंदर कदम रखते ही मैंने देखा कि मेज पर इंडक्शन गैस, औजार और थाई मसाले करीने से रखे हुए थे। मसालों की खुशबू हवा में फैल चुकी थी और मुझे भूख लगने लगी। मैंने देखा कि मेरे अलावा दो और लोग मौजूद थे: एकता, जो हमारी कॉलोनी में रहती थी और योग प्रशिक्षक थी, और हर जगह मौजूद रहने वाली और दखलंदाजी करने वाली श्रीमती शर्मा।

वाह... छात्र कम हैं और इसका मतलब है कि प्रशिक्षक से अधिक ध्यान मिलेगा और स्वादिष्ट व्यंजनों का भरपूर आनंद मिलेगा, मैंने सोचा और मुस्कुराया।

हरी करी और कमल के तने का स्टू बनाते-बनाते कामिनी ने महिलाओं को दस मिनट का आराम दिया। हम सब लेमनग्रास और नींबू के स्वाद वाली चाय पी रहे थे, तभी श्रीमती शर्मा ने मुझे अजीब नज़रों से देखा, और अपने हाव-भाव में छिपी ईर्ष्या को

छुपाने की कोई कोशिश नहीं की। लगता है वो मेरे बारे में कुछ सोच रही हैं। हम्म... क्या बात है? मैंने सोचा। मुझे ज़्यादा सोचने की ज़रूरत नहीं पड़ी, क्योंकि उन्होंने खुद ही जवाब दे दिया।

'लीना, तुम्हें यहाँ देखकर बहुत अच्छा लगा, लेकिन मुझे आश्चर्य है कि तुम यहाँ क्यों हो? तुम थाई खाना बनाना क्यों सीखना चाहती हो? तुम्हारी माँ अच्छा खाना बनाती है, है ना? या कहीं दूर कोई घंटी बज रही है? ओये होये... कोई राज़ है क्या?'

'अरे नहीं, आंटी जी... ऐसा कुछ नहीं है। मैं तो बस इसलिए सीख रही हूँ क्योंकि मुझे थाई खाना पसंद है,' मैंने कमजोर आवाज में विरोध किया।

अरे, सीखने की ज़रूरत ही क्या है? तुम तो आज़ाद पंछी हो! तुम पर कोई ज़िम्मेदारी नहीं है... नहीं, ज़रूर होगी कुछ तो होगी, मुझे यकीन है। लेकिन कुछ भी ज़बरदस्ती नहीं है। अगर तुम्हें कुछ पसंद है, तो तुम कर सकती हो। अगर कुछ पसंद नहीं है, तो उसे छोड़ दो और आगे बढ़ जाओ। काश हम भी ऐसा कर पाते... क्या तुम सहमत नहीं हो, एकताजी? हम यहाँ क्यों हैं? हम पिंजरे में बंद पंछियों की तरह हैं। हमारे पति रोज़ हमारे बनाए खाने से ऊब जाते हैं, और देखो... हम यहाँ थाई खाना बनाना सीख रही हैं! कुछ दिनों में वे फिर मुँह बनाएँगे, हमारी नीरस ज़िंदगी या हमारे बेस्वाद खाने पर टिप्पणी करेंगे और हम निकल पड़ेंगे, फ्रेंच स्टाइल में मेकअप करना सीखने की कोशिश में, या बेकार चीज़ों से चीज़ें बनाना सीखने की, या फिट रहने का तरीका सीखने की, या मैक्सिकन तरीके से खाना बनाना सीखने की। है ना? मैं तुमसे कह रही हूँ, लीना, तुम बहुत भाग्यशाली हो। क्या मैं झूठ बोल रही हूँ, एकता मैडम?' उसने एकता को चुनौती भरे अंदाज़ में देखा, और बेचारी ने डरपोक चूहे की तरह दबे स्वर में सिर हिलाया।

अगर मैं समझदार होती तो चुप रह सकती थी। लेकिन जाहिर है, मैं समझदार नहीं थी। 'आंटी जी, सिर्फ इसलिए कि मैं अविवाहित हूँ, इसका मतलब यह नहीं है कि मैं खाना पकाने में अपनी कुशलता नहीं सुधार सकती। दरअसल, आप सही कह रही हैं, फर्क तो है ही। मैं यहाँ अपने लिए सीखने आई हूँ, जबकि आप यहाँ किसी और के लिए सीखने आई हैं। मुझे आश्चर्य होता है कि क्या आप कभी अपने लिए जीती भी हैं!'

श्रीमती शर्मा की आँखों में आग सी जल रही थी, वे मुझे पूरी तरह से तिरस्कार भरी निगाहों से देख रही थीं और मुझे कार्यशाला के बाकी समय तक उनकी तीखी नज़रों

को सहना पड़ा। इस बीच, कामिनी सोचती रही कि लेमनग्रास और खट्टे फलों के स्वाद वाली चाय में ऐसा क्या था जिससे सबके चेहरे इतने तीखे हो गए! कामिनी के अलावा बाकी के दो घंटों में किसी ने किसी से बात नहीं की। चुप्पी थोड़ी असहज थी, लेकिन इससे मुझे सिखाई गई स्वादिष्ट चीज़ों की दो सर्विंग लेने से नहीं रोका। आह, टॉम यम सूप तो लाजवाब है, खासकर जब इसे स्वादिष्ट स्वीट कॉर्न कटलेट्स के साथ खाया जाए, मैंने बड़बड़ाते हुए कहा, मुझे मिल रही घूरती निगाहों की परवाह किए बिना, जैसे ही मैं खाना गटक रही थी।

****

घर में घुसते ही माँ ने मेरा नोटपैड छीनने और अगले दिन के पाक प्रयोग के लिए आवश्यक सामग्रियों पर नज़र डालने की ठान ली। मैंने खुशी-खुशी नोटपैड उन्हें दे दिया। माँ ने जल्दी से आवश्यक सामग्रियों की सूची बनाई और बाजार की ओर चल पड़ीं।

यह थाई कार्यशाला काफी सुकून देने वाली थी और मुझे इसके बारे में चिराग को जरूर बताना चाहिए। मैंने अपने मोबाइल पर विश्व घड़ी देखी। वहां अभी थोड़ा जल्दी है। मैंने एक घंटे इंतजार किया और फिर उसे फोन किया।

उपरोक्त के अलावा, मैं उनसे सिलिकॉन वैली के बाहरी इलाके में स्थित एक प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय में अकादमिक अनुसंधान में उत्कृष्टता के उच्च मानकों को बनाए रखने के लिए आयोजित सप्ताह भर चलने वाले समारोह के अवसर पर दिए जाने वाले उनके मुख्य भाषण के बारे में भी उत्सुकता से पूछना चाहता था। हमने उनके भाषण के मुख्य बिंदुओं पर चर्चा की और उनके और मेरे सुझावों को मिलाकर उसमें कुछ बदलाव किए। फिर, मेरी बारी थी बोलने की। जब मैंने शर्मा आंटी को तीखा जवाब देते हुए अपनी खुशी उनके साथ साझा की, तो हम दोनों ज़ोर से हँस पड़े। चिराग जैसे व्यस्त और प्रतिष्ठित व्यक्ति के साथ रोज़मर्रा की ज़िंदगी की छोटी-छोटी बातें साझा करने में मुझे अब कोई झिझक नहीं रही थी।

जब तक हमारी बातचीत (मेरी तरफ से) समाप्त हुई, दो घंटे बीत चुके थे और माँ खरीदारी करके लौट आई थीं। अगले दिन बनने वाले स्वादिष्ट थाई भोजन की सारी सामग्रियाँ उनकी रसोई की मेज पर रखी थीं!

******

मैं दिन के अन्य संदेशों को देख रही थी तभी shaadi-ka-laddoo.com से एक

नोटिफिकेशन आया: 'लीना, हमारे पास आपके लिए चार नए पार्टनर के सुझाव हैं।'
मैंने चारों प्रोफाइल को स्कैन किया। पहले तीन को डिलीट करने के बाद, मैं चौथे पर रुक गया।
नमस्कार, मैं अमित हूँ, 40 वर्षीय पंजाबी हूँ और पिछले 21 वर्षों से कनाडा में रह रहा हूँ। मैंने पंजाब विश्वविद्यालय से एम.एससी. की डिग्री प्राप्त की है और मैं मेडिकल ट्रांसक्रिप्शनिस्ट के रूप में काम करता हूँ। मेरे परिवार में मेरे पिता, एक बड़े भाई, उनकी पत्नी और उनके दो बच्चे हैं और वे चंडीगढ़ में रहते हैं। मेरा दो बार तलाक हो चुका है, जिसके बारे में मैं बाद में विस्तार से बताऊँगा। मैं सरल, ईश्वर में आस्था रखने वाला और शाकाहारी हूँ। मुझे अपने खाली समय में आध्यात्मिक और प्रेरणादायक पुस्तकें पढ़ना और फिल्में देखना पसंद है। मुझे पढ़ने के लिए धन्यवाद।
अमित की तस्वीर और प्रोफाइल देखते हुए मुझे एक सकारात्मक ऊर्जा का अनुभव हुआ। चेहरे पर मुस्कान के साथ उनका व्यक्तित्व सरल और आकर्षक लग रहा था—मैंने सोचा और विचार किया कि क्या उन्हें जुड़ने के लिए आमंत्रण भेजूं। मैं आंखें बंद करके बैठी रही, अपने अंतर्मन की आवाज सुनने की कोशिश कर रही थी। दिल ने हां कहा और मैंने भेज दिया...
दो दिन बाद, मुझे माँ का एक फ़ॉरवर्ड किया हुआ संदेश मिला जिसमें अमित द्वारा कनेक्ट करने का आमंत्रण स्वीकार करने की जानकारी थी। संदेश में उसका मोबाइल नंबर था और माँ की ओर से एक छोटा सा चेतावनी भरा संदेश था: 'अब अगला कदम उठाने में देर मत करो। उसे अभी व्हाट्सएप संदेश भेजो।'
मैंने घड़ी देखी। सोने से पहले अभी समय है और कनाडा में तो दिन का समय ही होगा।
हाय अमित,
यह संदेश shaadi-ka-laddoo.com पर आपकी प्रोफ़ाइल के जवाब में है।
आगे बढ़ने के लिए हम कभी बात कर सकते हैं।
धन्यवाद, लीना
पंद्रह मिनट के बाद:
हाय लीना,
संदेश भेजने के लिए धन्यवाद। क्या हम लगभग दस मिनट में जुड़ सकते हैं?
मैंने जवाब दिया: 'हां, जरूर।'

दस मिनट बाद मेरे फोन पर एक अंतरराष्ट्रीय नंबर दिखाई दिया। मैंने कॉल उठाई और दूसरी तरफ से एक बहुत ही मधुर और सौहार्दपूर्ण आवाज ने मेरा अभिवादन किया।
'हाय लीना, मैं अमित बोल रहा हूं। उम्मीद है आप बात करने के लिए फ्री होंगी।'
‘अरे अमित, कैसे हो? हाँ, हम बात कर सकते हैं।’
मैंने अभी-अभी अपना नाश्ता और दोपहर का खाना बना लिया है, और अब मैं आराम से बातचीत कर सकती हूं।
‘ओह, क्या आपको काम पर जाने की जल्दी नहीं है?’
अमित ने बेहद सहज स्वर में कहा, 'नहीं, मेरी दोपहर से लेकर देर रात तक की शिफ्ट है। घर से निकलने से पहले मेरे पास अभी भी लगभग तीन घंटे का समय है।'
‘आप मेडिकल ट्रांसक्रिप्शनिस्ट हैं?’ मैं हैरान रह गया।
“लीना, मैं पिछले साल तक लगभग आठ साल तक मेडिकल ट्रांसक्रिप्शनिस्ट था। लगभग 10-11 घंटे लगातार बैठने के कारण मेरे हाथ की नस में समस्या हो गई और मुझे असहनीय पीठ दर्द रहने लगा। डॉक्टर ने मुझे सलाह दी कि अगर मैंने अपना काम नहीं बदला तो सर्जरी करवाना जरूरी हो जाएगा,” उन्होंने बताया।
‘तो फिर?’ मुझे आश्चर्य हुआ कि यह बात किस ओर जा रही है।
खैर, मुझे तब नौकरी छोड़नी पड़ी और अब मैं एक सुरक्षा फर्म में काम करता हूँ। मैं वहाँ लेखा विभाग संभालता हूँ। हालाँकि मेरी तनख्वाह कम हो गई है, लेकिन यह नौकरी कम मेहनत वाली है और काम के घंटे भी कम हैं।
हालांकि मुझे उसके वास्तविक कार्यों और उसकी प्रोफ़ाइल पर दी गई जानकारी में अंतर देखकर थोड़ी बेचैनी हुई, फिर भी मैंने उसे इतनी जल्दी खारिज न करने का फैसला किया। ऐसा लग रहा था जैसे उसने मेरे मन की बात पढ़ ली हो।
'लीना, मुझे पता है कि तुम मेरे प्रोफाइल पर लिखी बातों और मेरे काम के बीच के अंतर के बारे में सोच रही हो। तुम चाहो तो कभी भी मुझसे संपर्क तोड़ सकती हो। मुझे पता है कि मुझे अब तक अपना प्रोफाइल अपडेट कर देना चाहिए था, लेकिन अभी भी थोड़ा संकोच हो रहा है। हालांकि, जब कोई मेरे प्रोफाइल पर प्रतिक्रिया देता है और मेरा उससे संपर्क हो जाता है, तो मैं शुरुआत में ही अपने काम में आए इस बदलाव के बारे में बता देता हूँ।'
‘ठीक है अमित। मैं ठीक हूँ। चलिए आगे बात करते हैं।’
वह ईमानदार प्रतीत होता है और अगर उसे स्वास्थ्य कारणों से अपना काम बदलना

पड़ा और वह दुनिया को इसकी घोषणा करने में अनिच्छुक था, तो मुझे इसके लिए उसे दोषी नहीं ठहराना चाहिए, मैंने फैसला किया।

'धन्यवाद, लीना। इस साल मैंने लो प्रोफाइल रहने, अपनी सेहत का ख्याल रखने और फिर साल के अंत तक बेहतर वेतन वाली नौकरी खोजने का फैसला किया है।'

'अमित, आपके अच्छे स्वास्थ्य के लिए शुभकामनाएं। अपने बारे में और बताएं। आपकी रुचियां, लक्ष्य, परिवार—आप जो कुछ भी साझा करना चाहें।'

अब तक बातचीत सहज चल रही थी। उसमें कुछ भी अजीब या अटपटा नहीं था।

मैं कनाडा में इक्कीस साल से ज़्यादा समय से रह रही हूँ। मैंने भारत तब छोड़ा था जब मैं मुश्किल से बीस साल की थी। यहाँ आकर मैंने कुछ छोटे-मोटे काम किए और फिर आखिरकार मेडिकल ट्रांसक्रिप्शनिस्ट के तौर पर बस गई। उन दिनों भारत में अवसर उतने प्रचुर मात्रा में नहीं थे जितने अब हैं। पंजाब के हर घर का सपना होता था कि कम से कम एक सदस्य या जितने हो सके उतने सदस्यों को अमेरिका या कनाडा भेजा जाए। मेरे पिता भी मुझे इन दोनों देशों में से किसी एक में भेजने के लिए दृढ़ थे। मेरी माँ का देहांत तब हुआ जब मैं लगभग पाँच साल की थी। मैं और मेरा भाई अपने पिता के बहुत करीब हैं और उन्होंने हमें अनुशासित तरीके से पाला है। तो, यह मेरे बारे में है। हम्म, और क्या? मैं एक किराए के अपार्टमेंट में रहती हूँ, मेरे कुछ दोस्त और रिश्तेदार हैं जिनसे मैं कभी-कभी मिलने जाती हूँ। मैं योगाभ्यास करती हूँ और मुझे फिल्में देखना पसंद है, और मुझे संतों और नेताओं की जीवनियाँ पढ़ना बहुत अच्छा लगता है। लगता है, मेरे बारे में इतना ही काफी है।

'यह बहुत अच्छा है। मुझे भी योग में रुचि है। मैं एक प्रमाणित प्रशिक्षक हूँ और समाज के विभिन्न वर्गों के लोगों के साथ योग सत्र आयोजित करती हूँ। मैं यहाँ एक कॉलेज में लेक्चरर हूँ और यह मेरा पूर्णकालिक काम है। इसलिए मैं अपने योग सत्रों की योजना पहले से बना लेती हूँ और आमतौर पर उन्हें शाम के समय निर्धारित करती हूँ। मैं अपने माता-पिता और छोटे भाई के साथ रहती हूँ और मुझे यात्रा करना बहुत पसंद है।'

उस रात अमित और मैंने योग, किताबों और अपने भविष्य के लक्ष्यों के बारे में बात की। बातचीत बिना अगले दिन या अगले कुछ दिनों में फिर बात करने के वादे के समाप्त हो गई। कुछ खास गड़बड़ नहीं थी, लेकिन फिर भी कुछ शंकाएँ मन में रह गईं... मुझे लगता है कि वह अपने विचारों को दबाता है। जब भी वह अपने पिता का

ज़िक्र करता, वह सतर्क हो जाता था। उसे कनाडा में रहना ज़्यादा पसंद नहीं था... तो फिर वह भारत क्यों नहीं लौटता? शायद, उसे अपने पिता की प्रतिक्रिया का डर है। और हाँ, मैं भूल गया... उसकी पहले ही दो शादियाँ हो चुकी हैं। आखिर क्या गड़बड़ हुई होगी? दो बार?

*****

अमित और मैं हर तीन-चार दिन में बात करने लगे। ऐसा नहीं लग रहा था कि हमारी बातचीत किसी नतीजे पर पहुँच रही है या किसी दबाव या मकसद से प्रेरित है। हमें यह तरीका अच्छा लग रहा था। हालांकि, मैंने इशारों-इशारों में उसके पिता और भारत वापस जाने की उसकी दबी हुई इच्छा के बारे में बात करने की कोशिश की, लेकिन हर बार मुझे बहुत कम प्रतिक्रिया मिली।

तीन हफ़्तों तक हम दोनों में से किसी ने भी अपनी-अपनी पिछली शादियों के बारे में एक शब्द भी नहीं कहा। एक दिन आखिरकार उसने बोलना शुरू किया, 'लीना, मेरी दो शादियाँ हो चुकी हैं। मुझे पता है कि किसी लड़की के लिए इस तरह के प्रस्ताव पर विचार करना भी काफ़ी डरावना होता है, लेकिन मुझे तुम्हारे बारे में जो बात अच्छी लगी, वह यह थी कि तुमने मुझसे इस बारे में कोई सवाल नहीं किया और न ही इस मामले में छानबीन करने की कोशिश की। अब मुझे तुम्हारे साथ अपनी असफल शादियों के बारे में बात करने में सहज महसूस हो रहा है।'

मैंने इसके लिए खुद को तैयार कर लिया, हालांकि बहुत उत्सुकता से नहीं। मैंने कहा, 'ठीक है।'

मेरी पहली पत्नी पंजाब के एक छोटे से कस्बे की रहने वाली थी। माता-पिता के दबाव में हमारी शादी कम उम्र में ही हो गई थी। वह अशिक्षित थी और मुझमें अपने पिता के फैसले पर सवाल उठाने की हिम्मत नहीं थी। वह मेरे साथ कनाडा आई और तीन महीने बाद उसने नौकरी करने की बात कही। उसने एक दुकान में सेल्स का काम शुरू किया और वह उसमें काफी अच्छी थी। उसे काम की बारीकियां सीखने में एक साल लग गया। वह अच्छी कमाई करने लगी; उसे अच्छी टिप मिलती थी और उसने दूसरे पुरुषों के साथ हल्के-फुल्के संबंध भी बनाने शुरू कर दिए। अगले डेढ़ साल में वह पूरी तरह बदल गई। मैं उसके बदलते स्वभाव को समझ गया था, लेकिन घर में शांति बनाए रखने के लिए चुप रहना ही बेहतर समझा। हालांकि, उसका ऐसा कोई इरादा नहीं था। एक दिन वह घर आई और साफ-साफ कह दिया कि वह मुझे और घर को

छोड़कर जा रही है। मैंने उसे समझाने की कोशिश की, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। उसने कहा कि वह किसी और से प्यार करती है और उसे तलाक चाहिए। उसके घर छोड़ने के बाद भी, यहां रहने वाले हमारे कुछ रिश्तेदारों ने उसे समझाने की कोशिश की, लेकिन कोई लाभ नहीं हुआ। अंततः, हम कानूनी रूप से अलग हो गए। और... मेरे पिता...वे...'

मुझे दबी हुई सिसकी सुनाई दी। उसे आगे बोलना मुश्किल लग रहा था।

'कोई बात नहीं। आपको मुझे सब कुछ बताने की जरूरत नहीं है... यह बिल्कुल ठीक है।'

अमित ने खुद को संभालने के लिए कुछ पल लिए। 'नहीं, मैं ठीक हूँ... यह बहुत पहले की बात है। जब भी मुझे याद आता है कि मेरी पत्नी के मुझे छोड़कर किसी और के साथ चले जाने पर मेरे पिता मुझसे कितने नाराज़ थे, तो उनकी डांट मुझे सबसे ज़्यादा दुख देती है। मैं अगले तीन साल तक भारत नहीं गया।'

कुछ देर का विराम छा गया। मैं उनकी दूसरी शादी के बारे में विस्तार से नहीं जानना चाहता था। एक रात के लिए इतना सोचना ही काफी था। फिर भी, वह बातचीत जारी रखना चाहते थे।

उन तीन सालों में मेरे पिता ने मुझे कुछ रिश्ते भेजे, लेकिन कोई भी बात नहीं बनी। फिर कनाडा में मेरी मुलाकात एक पंजाबी लड़की से हुई। उसके माता-पिता चंडीगढ़ से थे। हम दोनों को प्यार हो गया, हमने अपने परिवारों को बताया और जल्द ही शादी कर ली। लगभग दो साल तक सब ठीक रहा, फिर एक दिन मुझे पता चला कि वह भारत में अपने माता-पिता को बहुत सारा पैसा भेज रही थी। जब भी मैं उससे इस बारे में पूछता, वह साफ इनकार कर देती। कुछ महीनों बाद, वह अपने भाई को काम के लिए कनाडा बुलाने पर अड़ी रहने लगी। वह चाहती थी कि वह आकर हमारे साथ रहे। असल में, वह चाहती थी कि उसका पूरा परिवार आकर हमारे साथ रहे। इस बार मैंने हिम्मत जुटाकर उसे बताया कि यह मुझे मंजूर नहीं है। आखिर हम दोनों साथ में खुश थे। मैं अपने घर में परिवार लाकर सब कुछ उलझाना नहीं चाहता था। उसने अपनी इच्छा नहीं मानी और हमारी कहा-सुनी अक्सर और बुरी तरह होने लगी। बात बिगड़ती चली गई और लगभग छह महीने बाद हम अलग हो गए और वह दूसरे शहर चली गई। मुझे इस दूसरे, अल्पकालिक वैवाहिक प्रयोग की भारी कीमत चुकानी पड़ी। उसे मोटी-सी गुजारा भत्ता राशि मिल गई।'

इतना कहकर वह फिर चुप हो गया। मैंने उसके बोलने का इंतज़ार किया। मेरे पास कहने को कुछ नहीं था। उस समय सहानुभूति भरे शब्द कहना बहुत बुरा होता...
कुछ क्षण बाद, उन्होंने फिर कहा, 'मेरे पिछले दो अनुभव काफी दर्दनाक थे, लेकिन अब मैं नई संभावनाओं के लिए तैयार हूं। मैं बसना चाहता हूं और बच्चे पैदा करना चाहता हूं।'
मुझे यह सुनकर दुख हुआ कि आपकी पिछली शादियां कैसी रहीं, लेकिन फिर भी, जीवन हमेशा एक और मौका देता है।
'हां, मैं भारत लौटना चाहता हूं, चंडीगढ़ में काम करना चाहता हूं और वहीं बस जाना चाहता हूं, लेकिन मेरे पिता...' अमित ने अपनी बात अधूरी छोड़ दी।
फिर एक लंबा सन्नाटा छा गया। मुझे लगा कि मैं उससे कुछ भी कहने की स्थिति में नहीं हूँ। अगर वह कुछ चाहता है और अपने पिता के निरंकुश रवैये के कारण उसे वह नहीं मिल पा रहा है, तो... उसे खुद ही इसका हल निकालना होगा।
उस दिन के बाद, हम दोनों का दो सप्ताह तक कोई संपर्क नहीं हुआ। मुझे राहत मिली क्योंकि इससे मुझे सोचने-समझने के लिए ज़रूरी समय मिल गया। माँ अमित के बारे में जानती थीं और उसके पिता को फ़ोन करके मिलने की तारीख तय करना चाहती थीं। लेकिन मैं निश्चित नहीं थी। अमित एक अच्छा लड़का है... सरल और विनम्र भी। फिर मुझे क्या बात परेशान कर रही है? शायद, अपने लिए और अपनी खुशी के लिए खड़े होने का साहस उसमें नहीं है। क्या होगा अगर वह हमेशा ऐसा ही रहे? जब भी मैं उसके बारे में सोचती हूँ, एक डरी हुई और दबी हुई छवि मेरे मन में आती है। और, कौन जाने उसके पिता के दमनकारी व्यवहार से उसके व्यक्तित्व को कितना ठेस पहुँची होगी, मैंने सोचा। शायद, उसके और उसके पिता के बीच कुछ ऐसा हुआ हो जिसने उसकी पिछली पत्नियों को उससे दूर कर दिया हो।
माँ इस मामले को उसके पिता के साथ आगे बढ़ाना चाहती थी। उसे उसके पिता के तौर-तरीकों और बच्चों के जीवन पर उनके प्रभाव के बारे में कोई जानकारी नहीं थी। लेकिन ब्रह्मांड के अपने ही तरीके होते हैं, जो हमारी समझ से परे हैं। दो सप्ताह एक महीने में बदल गए, और कुछ समय बाद मेरी अटकलें और यहाँ तक कि माँ के सवाल भी शांत हो गए।
एक दिन मुझे अमित से एक संदेश मिला:
'हे लीना, आपसे बात करके अच्छा लगा। आपको शुभकामनाएं।'

कोई निश्चित प्रश्न नहीं थे और न ही कोई स्पष्ट उत्तर। मैं मुस्कुराया।
'अमित, तुम्हारे लिए भी यही बात लागू होती है,' मैंने जवाब दिया।

विविध

मामला **1**

अरिंदम, प्रथम अधिकारी, व्यापारी नौसेना।

Mumbai.

ट्रिन... ट्रिन... ट्रिन...

मैं: 'हैलो।'

(औपचारिक बातचीत होती है...सामान्य प्रक्रिया दोहराई जाती है।)

इसके बाद,

अरिनदम: 'मैं साल में छह महीने समुद्री यात्रा करता हूँ और दोबारा समुद्र में जाने से पहले शादी करना चाहता हूँ। वैसे, मैं किराए के मकान में रहता हूँ और मेरी माँ मेरे घर से सिर्फ़ दो घर दूर रहती हैं। मेरी गैरमौजूदगी में वो मेरे घर की देखभाल करती हैं। उम्मीद है आपको बुरा नहीं लगेगा। अक्सर लड़कियाँ पहले तो कहती हैं कि उन्हें कोई आपत्ति नहीं है, लेकिन बाद में किसी न किसी बात पर हंगामा खड़ा कर देती हैं। इसलिए, जब मैं आपके सामने सच बताऊँ तो मुझे पहले ही बता दीजिएगा। वैसे मैं लचीला स्वभाव का व्यक्ति हूँ।'

मैं: हैं? मुझे नहीं लगता कि इनमें से किसी बात का कोई महत्व है...

अरिनदम: 'वैसे, मैं तो बस तुम्हारी परीक्षा ले रहा था। मेरा अपना घर है, लेकिन मैं भावी जीवनसाथी को इसके बारे में पहले से नहीं बताता। वे सोच सकते हैं—"अरे, ये तो सेना में है...खैर, बहुत अमीर होगा।" मुझे ऐसे किसी की तलाश नहीं है जो मेरे पैसे के पीछे पड़ा हो। लीना, तुमने मेरी परीक्षा पास कर ली!'

मैं: 'धन्यवाद।'

मैं यह जोड़ना चाहता था: हाँ, कक्षा 10 की बोर्ड परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद से मैंने कभी भी इतनी विजयी भावना का अनुभव नहीं किया है।

अरिंदम: 'तो क्या मुझे आपसे मिलने के लिए उड़ान भरनी चाहिए? आपके परिवार से मिलना भी अच्छा रहेगा। मैं दो महीने में रवाना हो रहा हूँ। मेरे जहाज पर चढ़ने से पहले हम कम से कम सगाई तो कर ही सकते हैं।'

मैं (चौंककर): 'यह बहुत जल्दबाजी है। मुझे नहीं लगता कि इस मामले में जल्दबाजी

करना अच्छा विचार है।'
हम एक दूसरे को देख तक नहीं चुके हैं...कभी बात भी नहीं की है और वो अपनी सुविधा के हिसाब से हमारी सगाई तय कर रहा है?
अरिंदम: 'सुनो... मैं अपनी समुद्री यात्रा तीन महीने बाद के लिए टाल सकता हूँ। क्या मुझे जुलाई में हवाई जहाज़ से आना चाहिए? मेरी माँ को भी दिल्ली और वहाँ के सारे शॉपिंग और खाने-पीने के ठिकाने बहुत पसंद हैं, खासकर चाट की दुकानें!'
हे भगवान! वह मेरा गला घोंट रहा है!
मैं: 'मुझे अब जाना होगा। आपके समय के लिए धन्यवाद।'
अरिंदम: 'ठीक है, मुझे बता दीजिए। मुझे यात्रा के समय में कोई बदलाव करने में कोई आपत्ति नहीं है। क्या आपको कोई आपत्ति नहीं होगी अगर मैं जहाज पर आते ही आपको हर दिन सुप्रभात और शुभ रात्रि न कहूँ? कभी-कभी नेटवर्क नहीं मिलता, लेकिन मैं पूरी कोशिश करूँगा...'
मैंने (जल्दी से): 'ठीक है, अलविदा।'
छह महीने और दस दिन बाद, shaadi-ka-laddoo.com के चैट बॉक्स में एक संदेश आया:
अरिंदम: 'अपना अकाउंट डिलीट करने के लिए लॉग इन किया। मेरी तो शादी हो चुकी है...हमारी बातचीत के एक महीने बाद ही ऐसा हुआ। और, हा...हा...हा... क्या तुम अब भी किसी को ढूंढ रहे हो? बहुत दुख की बात है, है ना?'
*****
मामला **2**
अभिषेक, टीएमएस में सॉफ्टवेयर इंजीनियर।
Bengaluru.
वाइबर पर**:**
मैं: 'अभिषेक, मैंने तुम्हारा ट्रैवल ब्लॉग पढ़ा। यह काफी बढ़िया है। क्या तुम हर सप्ताहांत ट्रेकिंग करते हो?'
अभिषेक: 'हाय लीना, धन्यवाद। हाँ, मैं जितना हो सके ट्रेकिंग और यात्रा करता हूँ, और आमतौर पर अकेले ही। मैं मूल रूप से अपनी ही संगति में खुश रहता हूँ। मैं साल में 3-4 बार अपने माता-पिता से मिलने जाता हूँ, और वे बेंगलुरु से 300 किलोमीटर दूर एक गाँव में हमारे पैतृक घर में रहते हैं। मैं अपना खाना खुद बनाता हूँ, अकेले

फिल्में देखता हूँ और लद्दाख हाफ मैराथन की तैयारी कर रहा हूँ।'
मेरे मन में एक स्वाभाविक विचार आया: आप shaddi-ka-laddoo.com पर क्यों हैं?
मैं: 'ऐसा लगता है कि रोमांच तुम्हारे खून में दौड़ रहा है।'
अभिषेक: 'हां, मुझे भी फोटोग्राफी बहुत पसंद है। मैं घंटों अपने लेंस के साथ रह सकता हूं। उन घंटों में मुझे किसी चीज या किसी व्यक्ति की जरूरत नहीं होती और न ही मुझे कोई चीज पसंद है।'
एक और स्वाभाविक सवाल: क्या आपके जीवन में किसी और के लिए जगह है?
लेकिन मुझे उससे कहने के लिए कुछ भी सूझ नहीं रहा था।
अभिषेक: 'लीना, अब मेरे दौड़ने का समय हो गया है। बाद में मिलते हैं। कूर्ग वन पर मेरा नया ब्लॉग ज़रूर पढ़ना।'
मेरे जवाब का इंतजार किए बिना ही उसने फोन काट दिया।
दो दिन बाद:
अभिषेक (स्काइप पर संदेश): 'हे लीना, आपसे बात करके अच्छा लगा, लेकिन मुझे ऐसा नहीं लगा कि इसे आगे बढ़ाना चाहिए। आपको शुभकामनाएँ!'
मैं (मन ही मन): क्या?
अलविदा, अभिषेक।
*****
मामला **3**
मोहित**,** स्टॉक विश्लेषक। दो प्यारी बेटियों के पिता **(**बच्चियां अपनी मां के साथ रहती हैं**)**।
कैलगरी**,** कनाडा।
एक फ़ोन कॉल + एक वीडियो कॉल + व्हाट्सएप चैट
दृश्य **1**
मोहित: 'हे लीना, मेरे बच्चों की उम्र क्रमशः आठ और चार साल है। मेरे लिए यह बहुत ज़रूरी है कि कोई ऐसा हो जो मेरे बच्चों को अपनाए और उन्हें प्यार दे। वे मेरे ही अंग हैं। मेरे सप्ताहांत मेरे बच्चों के लिए ही होते हैं। आशा है आपको इससे कोई आपत्ति नहीं होगी।'
मैं: 'हाय मोहित, मुझे लगता है हम इस बारे में बाद में बात कर सकते हैं। अभी बहुत

जल्दी है। मुझे आपकी प्रोफाइल अच्छी लगी और मैं आपके बारे में थोड़ा और जानना चाहता हूँ। मैंने पढ़ा है और मुझे पता है कि आपके बच्चे हैं। जब हम किसी व्यक्ति को अपने जीवन में स्वीकार करते हैं, तो हम उसके सभी प्रियजनों को भी स्वीकार करते हैं।'

दृश्य **2**

मोहित: 'लीना, क्या तुम्हें शॉपिंग करना पसंद है?'

दोस्तों*!* दोस्तों*!* आप लोग मुझे हमेशा हैरान करते रहते हैं*!* अब, ये कैसा सवाल है*?* और आप ये सवाल एक लड़की से पूछ रहे हैं*?* वो भी ऐसी लड़की से जिससे आपकी बातचीत मुश्किल से *2-3* मिनट ही हुई है*?*

मैं: 'नहीं, मुझे खरीदारी करना पसंद नहीं है।'

मुझे उम्मीद है कि मैंने भी अब आपको चौंका दिया होगा, हा हा...

मोहित: 'मेरी शादी बहुत दर्दनाक रही और फिर तलाक भी बहुत बुरा हुआ। वह खरीदारी की दीवानी और शराब की आदी थी। मैं उसे अक्सर शॉपिंग मॉल या पब में पाता था। पता नहीं क्यों, जब औरतें कहती हैं कि उन्हें खरीदारी पसंद नहीं है, तो मुझे उन पर भरोसा नहीं होता। आखिर में, औरतों की मूल मानसिकता एक जैसी ही होती है।'

दृश्य **3 (**वीडियो कॉल पर**)**

मोहित: 'लीना, तुम बहुत खूबसूरत लग रही हो। मुझे लगता है कि तुम एक संतुलित महिला हो और मुझे कहना होगा कि तुम अपनी उम्र से कहीं कम दिखती हो।'

मैं (मन ही मन): अरे वाह! क्या मुझे यह सुनकर खुशी से नाचना चाहिए? जब से मैंने इस वेबसाइट पर पंजीकरण कराया है, जो सबको शादी के लड्डू का लालच देती है, तब से मुझे ऐसा लग रहा है जैसे मैं हमेशा एक रोलरकोस्टर की सवारी पर हूँ।

मैं: 'मोहित, आपसे बात करके अच्छा लगा। चलिए कुछ और बार बात करते हैं, फिर देखते हैं।'

दो दिन बाद**:** व्हाट्सएप पर**...**

मैं: 'हाय मोहित, उम्मीद है आपने अपनी छोटी बेटियों के साथ अच्छा सप्ताहांत बिताया होगा।'

मोहित: 'हां।'

मैंने पूछा: 'सब कैसा चल रहा है?'

मोहित: 'ठीक है।'

मैं: 'क्या नया है?'

मोहित: 'कुछ नहीं।'

बातचीत समाप्त।

उस रात, व्हाट्सएप पर संदेश आया:

मोहित: 'लीना, तुम बहुत प्यारी लड़की लगीं। तुमसे बात करके अच्छा लगा, लेकिन दोबारा सोचने पर मुझे लगता है कि तुम मेरे बच्चों को संभालने के लिए बहुत छोटी हो। अपना ख्याल रखना।'

****

मामला 4

अनाम व्यक्ति, स्थापित पेशेवर।

निवास स्थान का खुलासा नहीं किया जा सकता।

एक ई - मेल:

> हाय लीना,
>
> मुझे पता है कि आपको मेरा यह ईमेल पाकर आश्चर्य होगा। कुछ कारणों से, जिनका मैं खुलासा नहीं कर सकता, मैं आपको अपना नाम और अन्य जानकारी नहीं दे पा रहा हूँ। हालांकि, कृपया इस ईमेल को संदेह की नज़र से न देखें और न ही इसे स्पैम समझें। मैं भारत से बाहर रहता हूँ और कुछ सूत्रों से आपके बारे में पता चला है। मैं आपके बारे में कुछ बातें जानता हूँ; मैंने shaadi-ka-laddoo.com पर आपकी प्रोफ़ाइल देखी है और किसी को आपके बारे में बात करते हुए सुना है। इन सब के आधार पर, मुझे आप और आपकी प्रोफ़ाइल/रुचियाँ पसंद आईं।
>
> मैं अपने बारे में बताने से पहले आपके बारे में थोड़ा और जानना चाहता हूँ। क्या आप एक अजनबी की ओर से आए इस ईमेल पर भरोसा करके मुझे जवाब दे पाएंगे? मैं आपको पूरी ईमानदारी से आश्वस्त करता हूँ कि यह कोई मज़ाक नहीं है और न ही इसमें कोई गुप्त इरादा है।
>
> क्या आप जीवन के बारे में, और विशेष रूप से विवाह के बारे में अपने

विचार साझा करेंगी? क्या आप विवाह को एक आवश्यकता मानती हैं क्योंकि अकेले जीवन जीना कठिन है? मुझे पता है कि यह आपका दूसरा विवाह होगा। पहले के एक असफल अनुभव के बावजूद, क्या आप पूर्ण विश्वास और आशा के साथ एक बार फिर वैवाहिक बंधन में बंधने के लिए तैयार हैं? क्या आप सतर्क और सावधान नहीं रहेंगी? क्या आप एक बार फिर किसी पुरुष पर और इस संस्था पर भरोसा करने से नहीं डरेंगी?

मुझे खेद है कि मैं आपसे इतने सारे प्रश्न पूछ रहा हूँ, लेकिन विश्वास, अनुकूलता, प्रतिबद्धता आदि के बारे में आपके विचार जानना मेरे लिए महत्वपूर्ण है। क्या आप विवाह को जीवन भर की प्रतिबद्धता मानते हैं? या फिर, एक ऐसा आपसी समझौता जिससे जीवन सुगम और आरामदायक बन जाए? आशा है कि आप मुझे हाथ में छड़ी लिए खड़े किसी कठोर शिक्षक की तरह नहीं समझ रहे होंगे जो आपसे जवाब मांग रहा हो। ☺

इस मेल का जवाब देना है या नहीं, यह पूरी तरह से आपकी मर्ज़ी है। अगर आप मुझ पर भरोसा कर सकते हैं, तो कृपया अपने बारे में, जीवन के बारे में, लोगों के बारे में और रिश्तों के बारे में अपने विचार लिखें। बेझिझक अपने मन में आने वाली हर बात लिखें। अगर आप मेरी अनुमति के बिना मेरी निजता में दखल देने के लिए मुझे डांटना चाहें, तो भी बेझिझक लिखें। आप ऐसा दिखावा कर सकते हैं कि आप खुद से बात कर रहे हैं या डायरी में अपने मन की बातें लिख रहे हैं।

मैं आपके मेल/उत्तर का बेसब्री से इंतजार करूंगा।

अनाम व्यक्ति।

मैं कॉलेज की लाइब्रेरी में बैठा था जब मैंने मेल पढ़ा। मैं चौंक गया और कुछ बोल नहीं पाया। कौन हो सकता है? कोई लड्डू जिसने गुमनाम रहकर अनोखे अंदाज़ में बातचीत शुरू की है? या फिर कोई जाना-पहचाना व्यक्ति मज़ाक कर रहा है? मैं उत्साहित भी था और हैरान भी। क्या मुझे जवाब देना चाहिए? वह तो हानिरहित लग रहा है... लेकिन नहीं! पहले सोच-विचार कर लूँ या किसी से सलाह लेकर जवाब दूँ। कहीं कोई हैकर तो नहीं है या कोई नुकसान पहुँचाने की नीयत वाला? तरह-तरह के विचार मेरे

दिमाग में गूँज रहे थे। मैं लाइब्रेरी में बैठकर किताब पर ध्यान नहीं दे पा रहा था।
मैं घर के लिए निकल पड़ा और सोचने लगा कि क्या मुझे इस बारे में चिराग या माँ से बात करनी चाहिए। मैंने माँ से बात करने का विचार छोड़ दिया, क्योंकि वह बात को बहुत बढ़ा-चढ़ाकर पेश कर सकती थीं। मैंने तय किया कि बेहतर होगा कि मैं इसे अपने स्तर पर सुलझाऊं या कम से कम किसी भरोसेमंद व्यक्ति से सलाह लूं।

एक प्यारी सी छोटी सी चीज़

एक दिन, मैं कॉलेज से घर लौटी, और वहाँ एक और अजीब घटना मेरा इंतज़ार कर रही थी। मैंने अपने बैग और फाइलें मेज पर रखीं और बिस्तर पर सिर पटका। आह! मेरा सिर किसी सख्त चीज़ से टकराया और मैं दर्द से चीख पड़ी। मैंने अपना सिर सहलाया और उस धक्के का कारण समझने की कोशिश की। अरे नहीं! ये क्या हो गया! मैंने बिस्तर पर तकिए के नीचे रखे एक छोटे से बर्तन को हाथ में पकड़ते हुए कहा।

'माँ, कृपया इधर आइए...' मैंने पुकारा।

'क्या हुआ बेटा? तुम इतने गुस्से में क्यों लग रहे हो?' माँ ने 'बेटा' शब्द कुछ ज्यादा ही प्यार से कहा था और इससे मेरे दिमाग में कुछ याद आ गया।

उसने मेरे हाथ में खाना पकाने का बर्तन और मेरे चेहरे पर हैरानी का भाव देखा। एक पल के लिए वह थोड़ी शर्मिंदा दिखी, लेकिन फिर तुरंत अपने उसी साहसी और निडर (हमेशा की तरह) भाव में लौट आई और बोली, 'अरे, ये तो तुम्हारे भले के लिए है, प्यारे। तुम्हें पता है ना...'

इससे पहले कि वह अपना वाक्य पूरा कर पाती, मैंने ज़ोर से टोकते हुए कहा, 'मुझे कुछ नहीं पता, माँ, और मैं कुछ जानना भी नहीं चाहती! यह सब बहुत अजीब हो रहा है। मैंने उस बर्तन से शादी करने वाली बात पर तो सहमति दे दी थी, लेकिन अब आपने मेरे तकिए के नीचे खाना पकाने का बर्तन क्यों रख रखा है? क्या बर्तन मुझे दूल्हा लाने वाला नहीं था?' मैंने गुस्से से पूछा।

'बिन्नी,' माँ ने मेरा हाथ पकड़ा और मुझे बिस्तर पर बिठाते हुए अपनी सबसे विनम्र और सौम्य आवाज़ में कहा, 'देखो बेटा, इन ज्योतिषीय उपायों में समय लगता है। श्रीमती कुकरेजा ने पंडित दिलभराजी के बताए अनुसार अपने बेटे को एक महीने तक हर सुबह पाँच बजे गाय चराने के लिए कहा था, और आखिरकार 32वें दिन लड़के को अपने सपनों की लड़की मिल गई। मेरी बात याद रखना—पंडितजी की बातों में बहुत

शक्ति होती है।'

'इस पंडितजी को फिर से बीच में क्यों लाना? क्या पापा के हस्तरेखा विशेषज्ञ मित्र श्री शर्मा ने मिट्टी के बर्तन से शादी करने का सुझाव नहीं दिया था? अगर बर्तन और कड़ाही में कुछ गड़बड़ हो जाए तो क्या होगा?' और ऐसा कहते हुए, मैंने इस अप्रिय स्थिति के बावजूद व्यंग्यात्मक हंसी हंस दी।

माँ अपनी हँसी को मुश्किल से रोक पाईं। 'मुझे लगता है श्री शर्मा अब अपने अभ्यास पर ज़्यादा समय नहीं दे रहे हैं। वो बूढ़े हो रहे हैं। उन्होंने जो भी भविष्यवाणी की है, वो सब सच नहीं हुई है। हमें हर स्तर पर कोशिश करनी चाहिए, मेरे प्यारे,' और इतना कहकर उन्होंने खाना पकाने का बर्तन तकिए के नीचे कसकर दबा दिया, मेरी पीठ थपथपाई और कमरे से बाहर चली गईं।

मैंने इस्तीफा दे दिया, और इस बार धीरे से अपना सिर तकिए पर रख दिया।

*****

अगले दिन, मैंने कुछ अलग करने का फैसला किया। मैंने खुद को आराम देने का सोचा और तय किया कि मैं किसी और से ऑफिस तक गाड़ी मंगवाऊँगी। मैं ईयरप्लग लगाकर संगीत का आनंद लेना चाहती थी, दुनिया से कटकर एक घंटे के लिए आराम करना चाहती थी। मैंने अपने लिए पूल-कैब बुक कर ली।

मैं पिछली सीट पर आराम से बैठ गई और गुनगुनाते हुए अपनी आँखें बंद कर लीं। एक और लड़की (लगभग तीस साल की) पहले से ही बैठी थी और फोन पर व्यस्त थी, हम दोनों साथ में सफर कर रहे थे। पहले कुछ सेकंड तक वह चुप रही और ऐसा लग रहा था कि दूसरी तरफ वाला ही बात कर रहा था। एक मिनट बाद मुझे पता चला कि वह ज़िंदगी में काफी परेशान है। उसकी बातें सीधे मेरे कानों में पड़ीं। 'मम्मी, मुझे ऑफिस पहुँचने दीजिए। प्लीज़ मुझे... कम से कम 25 मिनट तो दे दीजिए। मैं यहाँ काम पर भागकर नहीं आ सकती... मैं ट्रैफिक में फंसी हुई हूँ। प्लीज़ मम्मी... मैं ऑफिस पहुँचकर आपको एडिट किया हुआ प्रोफाइल भेज दूँगी। क्या इमरजेंसी है?' वह फिर से चुप हो गई। लगता है उसे दूसरी तरफ से डांट पड़ रही होगी, मुझे हंसी आ गई। और फिर बेटी की बारी आई, 'माँ, क्या आप ये कहना चाह रही हैं कि अगर मैंने अगले दो मिनट में अपना प्रोफाइल नहीं भेजा, तो mere-jeevan-saathi.com पर रजिस्टर किए हुए सारे लड़के एक-दूसरे के गले में माला डाल देंगे और पलक झपकते ही गायब हो जाएँगे? उफ़! हाँ...हाँ... मैं कल रात जाग रही थी और मैंने

अपना प्रोफाइल फिर से बना लिया है। हाँ, मैंने ये भी लिख दिया है कि मुझे बड़े, संयुक्त परिवार कितने पसंद हैं,' और इतना कहकर उसने फोन काट दिया और एक गहरी साँस ली। उसने मेरी तरफ देखा, एक व्यंग्यात्मक मुस्कान दी और मेरी तरफ देखे बिना ही अपना चेहरा दूसरी तरफ मोड़ लिया।

क्या तीस-तीस साल की उम्र की सभी लड़कियाँ अविवाहित हैं और दूल्हे की तलाश में हैं, और क्या सभी माताएँ उन्माद में इधर-उधर भाग-दौड़ कर रही हैं? इतनी जल्दबाजी क्यों? शायद, यह तो सिर्फ माताओं को ही पता होगा! अगले लगभग 30 मिनट तक, सड़क पर भीड़भाड़ के कारण होने वाली सामान्य अफरा-तफरी को छोड़कर, यात्रा शांत रही।

****

कॉलेज में ब्रेक के दौरान मेरा फोन बजा। स्क्रीन पर एक अनजान नंबर दिखाई दिया। मैंने कॉल उठाया और दूसरी तरफ से आवाज़ आई: 'हे, लीना।'

'नमस्कार, क्या मैं जान सकता हूँ कि आप कौन हैं?'

'लीना, ये मैं हूं... विशाल।'

'विशाल?' क्या मैं किसी विशाल को जानता हूँ? मैंने खुद से पूछा।

'ओह, ठीक है! लगता है आपने मुझे पहचाना नहीं। चलिए याद दिला दूं... हम पिछले साल जयपुर में वार्षिक युवा सम्मेलन में अंतर-महाविद्यालयीय बहस के दौरान मिले थे। मैं वहां मानव संसाधन विकास मंत्रालय का प्रतिनिधित्व कर रहा था और हम एक पैनल चर्चा में साथ थे।'

मुझे तुरंत याद आ गया। 'अरे हाँ... हाय विशाल! बहुत दिनों बाद मिले।'

मेरे दिमाग में विशाल की छवि उभर आई: दुबला-पतला, लंबा, गोरा, सूती कुर्ते और फटी जींस में सलीके से सजा हुआ, और हमेशा जोश से भरा हुआ। वह एक अच्छा वाद-विवाद करने वाला भी था। मैंने कई बार उसकी बातों पर दिल खोलकर हँसी खाई थी, क्योंकि वह अपने हाजिरजवाबी से मॉडरेटरों और साथी पैनलिस्टों, यहाँ तक कि मुझे भी, मुश्किल में डालने का कोई मौका नहीं छोड़ता था। वह मुझे शाहिद कपूर की याद दिलाता था।

'हां, वह कितनी दिलचस्प चर्चा थी और उसके बाद हमने कॉफी पर एक गहन बहस की।'

'हां, मैं वह बात भी नहीं भूल सकता। आपसे मुलाकात और जुड़ाव बहुत जल्दी हुआ

था और फिर पूरे एक साल तक सन्नाटा छाया रहा।'
‘मुझे पता है... मुझे भी संपर्क करने की कोशिश करनी चाहिए थी, विशाल।’
‘बिल्कुल। मैं अपने पुराने ईमेल साफ कर रहा था और मेरी नज़र आपके एक ईमेल पर पड़ी जिसमें आपका फोन नंबर था। मैंने सोचा—चलो एक नई शुरुआत करते हैं।’
मैंने कहा, 'यह तो इस साल आपने एक शानदार काम किया है,' और हम दोनों जोर से हंस पड़े।
'लीना, क्या तुम कॉफी पर एक बार फिर बहस करना चाहोगी?'
'ज़रूर, क्यों नहीं? मैं आपको अगले सप्ताह फोन करूंगा और हम दिन और समय तय कर लेंगे।'
विशाल उन लोगों में से एक निकला जिन्हें नज़रों से ओझल होने पर भुला दिया जाता है। मुझे याद है कि वह एक आकर्षक, बुद्धिमान और विनम्र व्यक्ति था और लगभग मेरी ही उम्र का था। और हाँ, मुझे याद है कि उसे भी यात्रा करना बहुत पसंद था।
*****
मैंने अगले हफ्ते उसे फोन किया और हमने एक शनिवार दोपहर को कनॉट प्लेस के बारिस्टा रेस्टोरेंट में शाम 4 बजे मिलने का फैसला किया।
‘हाय लीना!’ विशाल खुशी से झूम उठा।
हमने हाथ मिलाया और हमारी खुशी बिल्कुल एक जैसी थी।
'सच कहूँ तो, देर से ही सही, आपसे दोबारा मिलकर बहुत अच्छा लगा,' मैंने जवाब दिया।
'हाँ, वास्तव में।'
हम दोनों ने एक कोने की मेज पर बैठकर कैपुचीनो का आनंद लिया और आगामी बातचीत के लिए तैयार हो गए।
‘तो, लीना, तुम कैसी हो?’
‘जीवन अच्छा रहा है—वास्तव में, व्याख्यानों, पढ़ने, लिखने, योग और यात्राओं में ही व्यतीत हुआ है। आपका कैसा रहा?’
‘खैर, मैंने मानव संसाधन विकास मंत्रालय के लिए जिस परियोजना पर काम कर रहा था, उसे पूरा कर लिया है और अब मैं एक वित्त कंपनी में प्रबंधन सलाहकार के रूप में काम कर रहा हूं। इसके अलावा, मैं ज्यादातर घर पर ही रहता हूं।’
‘यह तो बहुत बढ़िया है। तो, आपको दोबारा जुड़ने की प्रेरणा कहाँ से मिली?’ मैं

उत्सुक था।
“सच कहूँ तो, पहली मुलाकात में ही मैं आपसे काफी प्रभावित हुआ था। मुझे यात्रा के प्रति आपका जुनून, छात्रों और योग के प्रति आपकी प्रतिबद्धता और हमारी निजी बहस के दौरान आपके बेबाक विचार बहुत पसंद आए थे,” वह फिर से जोर से हँसे। “लेकिन, मैं मंत्रालय के लिए जिस प्रोजेक्ट पर काम कर रहा था, उसमें इतना उलझ गया कि एक साल पलक झपकते ही बीत गया। पिछले दो महीनों से मैं आपको फोन करने और आपसे मिलने की योजना बना रहा था।”
'क्या आप किसी खास वजह से मिलने की योजना बना रहे हैं या सिर्फ यूं ही बातचीत करने के लिए?' मैंने असली वजह जानने की कोशिश जारी रखी।
‘खैर, एक दिन अचानक मैंने इस साल अकेले यात्रा करने का सोचा, और उसी क्षण मुझे तुम्हारा ख्याल आया... मैंने खुद से कहा—लीना से बेहतर यात्रा गुरु कौन हो सकता है!’ विशाल ने चौड़ी मुस्कान के साथ कहा।
अरे... अरे नहीं... नहीं। मैं कोई यात्रा विशेषज्ञ नहीं हूँ... मैंने अभी-अभी आपके साथ अपने कुछ यात्रा वृत्तांत और रोमांच साझा किए हैं, लेकिन आप इतनी जल्दी कहाँ जाने का इरादा रखते हैं?'
मैं दो महीने की अवधि में थाईलैंड, वियतनाम और कंबोडिया का गहन अध्ययन करने की योजना बना रहा हूं।
वाह! वाकई में यह बहुत बहादुरी का काम है, विशाल।
‘अभी पता नहीं। आपको याद होगा, हालांकि मुझे खोज और रोमांच बहुत पसंद है, लेकिन अब तक मैंने या तो काम के सिलसिले में यात्रा की है, या आमतौर पर एक पर्यटक के रूप में—और एक-दो दिन में किसी जगह का बस एक संक्षिप्त अवलोकन ही किया है। इस तरह की एक अस्थायी योजना मेरे मन में दो साल से अधिक समय से चल रही थी, लेकिन शायद अब आखिरकार इसे साकार होते हुए देखा जा सकेगा।’
‘तुम शायद क्यों कह रहे हो? यह तो एक शानदार योजना है! आगे बढ़ो! करो, विशाल,’ मैंने उत्साह से कहा।
हमने सुदूर पूर्वी एशियाई देशों के इतिहास और भूगोल के साथ-साथ वहां के लोगों की रोचक कहानियों पर चर्चा की। हमने वियतनाम, कंबोडिया और उत्तरी थाईलैंड के लिए लोनली प्लैनेट की यात्रा गाइडों में मौजूद सूचनाओं के विशाल भंडार पर भी बात की... हमने अकेले रहने और अकेले यात्रा करने के फायदे और नुकसानों पर विचार

किया और यहां तक कि किसी रोचक शैक्षणिक कार्यक्रम में दाखिला लेने और आगे की पढ़ाई जारी रखने की संभावना पर भी गंभीरता से विचार किया।

जब उन्होंने घर जाने के लिए टैक्सी बुक की, तो मुझे आश्चर्य हुआ कि उनके पास कार नहीं थी। मैंने उनसे कुछ नहीं पूछा, लेकिन मेरे चेहरे पर जिज्ञासा का भाव देखकर उन्होंने सब कुछ स्पष्ट कर दिया।

नहीं, मेरे पास कार नहीं है। मैं गाड़ी नहीं चलाता और न ही कार खरीदने का मेरा कोई इरादा है। देखो लीना, मैं बहुत ही ज़रूरतमंद इंसान हूँ और सादगीपूर्ण जीवन में विश्वास रखता हूँ। मैं अपना जीवन तनावमुक्त रखना चाहता हूँ। कम भौतिक चीज़ें, कम उलझे रिश्ते—और नतीजा होता है कम तनाव। मेरी उम्र 35 साल है, मैं अविवाहित हूँ और अपनी 45 साल की बहन के साथ रहता हूँ, जिसने भी अविवाहित रहने का फैसला किया है। हम दोनों अपने मासिक खर्चे आपस में बाँट लेते हैं और एक शांतिपूर्ण, सरल जीवन जी रहे हैं।

हालांकि एक आधुनिक युग के युवा, कामकाजी पेशेवर से, जो एक भव्य महानगर में रहता है, सादगीपूर्ण जीवन शैली के बारे में सुनना असामान्य था, फिर भी विशाल के सादगीपूर्ण जीवन जीने के विचारों ने मुझे आकर्षित किया। वह अलग तरह से सोचने का साहस रखता है!

वह आगे कुछ और बताने के मूड में थे, 'मैं आगे पढ़ना चाहता हूँ, लीना। शायद मैं ब्राह्मी लिपि में सर्टिफिकेट कोर्स या भारतीय संस्कृति और इतिहास में डिप्लोमा कर लूँ।'

वाह, 35 साल की उम्र में नई स्क्रिप्ट सीखने की योजना बना रहे हो! क्या तुम्हें अपने माता-पिता से शादी करने का दबाव नहीं पड़ता, जबकि तुम्हारी उम्र में तो ज्यादातर पुरुषों के दो बच्चे और बड़ा पेट होता है और वे बस अपने मोटे शरीर को और मोटा करने के बारे में सोचते रहते हैं! वे शेयर बाजार के तेजी के रुझानों को लेकर जुनूनी रहते हैं और अपने और अपने परिवार के बढ़ते स्वास्थ्य खर्चों से डरते रहते हैं। तुम तो वाकई सबसे अलग हो,' मैंने प्रशंसा भरे भाव से कहा।

हा हा हा! हां, मैं अजीब हूं। मेरे माता-पिता ने मुझे सामान्य बनाने की पूरी कोशिश की, लेकिन करीब दो साल पहले उन्हें एहसास हुआ कि मैं कोई साधारण इंसान नहीं हूं। मेरी बहन भी यही सोचती है। हम दोनों ने अपने माता-पिता से सुलह बनाए रखने के लिए एक अपार्टमेंट किराए पर लिया है, हालांकि हम कभी-कभी उनसे मिलने जाते

हैं। हम खाना पकाने, सफाई और घर के अन्य कामों को आपस में बांट लेते हैं। उसके दोस्तों का अपना दायरा है, और मेरा अपना।

मैं ध्यान से सुन रहा था जब उसने आगे कहा: 'मेरा मानना है कि जीवन हमें जीने के लिए दिया गया है। इसे यूं ही बर्बाद नहीं करना चाहिए, खासकर दूसरों को खुश करने की कोशिश में। रोज़मर्रा के अनुभवों से बहुत कुछ सीखने और आगे बढ़ने को मिलता है। और हर किसी को यह तय करना होगा कि उसे वास्तव में क्या संतुष्टि और सुकून देता है और उसे ठीक वही करने के लिए ज्ञान और साहस होना चाहिए। जैसे मुझे यात्रा करना, पढ़ना और नए दोस्त बनाना पसंद है—वैसे ही, हर किसी को अपना रास्ता खुद चुनना चाहिए। अगर कोई बैंक में ज़्यादा पैसे जमा करने और खुश रहना चाहता है, तो उसे वही करना चाहिए। क्या तुम ऐसा नहीं सोचती, लीना?'

वह आम लोगों से कितना अलग है! इसीलिए तो मुझे shaadi-ka-laddoo.com पर उसके जैसा कोई नहीं मिला, मैंने बेपरवाही से यह निष्कर्ष निकाला।

'क्या आपको कभी साथ की कमी महसूस नहीं हुई?' मैं जानना चाहता था कि वह इससे कैसे निपटते हैं।

"बेशक, मैं अपना जीवन ऐसे व्यक्ति के साथ बिताना चाहूंगी जो इसे अर्थ और आनंद दे सके... लीना, मैं किसी के साथ डेट करना चाहूंगी। अतीत में मेरे कुछ रिश्ते रहे हैं और हालांकि वे बहुत अच्छे थे, लेकिन मुझे जल्द ही घुटन महसूस होने लगी। आपका क्या ख्याल है? आपका जीवन मंत्र क्या है?"

मुझे लगा जैसे उसने मेरे मन की बात कह दी हो। जीवन के बारे में मेरे अपने विचार विशाल के शब्दों में झलक रहे थे। खैर, लगभग...

टैक्सी को आने में 15 मिनट लग गए, और इसके लिए मैंने ट्रैफिक को धन्यवाद दिया! हम आँखों में एक-दूसरे को अलविदा कहते हुए अलग हो गए। मुझे अपने दिल में एक कोमल सी जगह बनती हुई महसूस हुई।

मैं उनसे एक बार फिर मिलने के लिए बेताब था। अगले सप्ताहांत मैंने विशाल को फोन किया।

'अरे, क्या तुम रविवार को अक्षरा थिएटर में होने वाला नया व्यंग्यात्मक स्टैंड-अप कॉमेडी शो देखना चाहोगे?'

'वाह! यह दिलचस्प लग रहा है... कितने बजे?'

शाम 7 बजे।

‘हो गया! क्या आप मुझसे मेट्रो स्टेशन पर मिलेंगे? हम साथ-साथ थिएटर तक चल सकते हैं।’

मैंने मुस्कुराते हुए जवाब दिया, 'हो गया।'

*****

रविवार का दिन बहुत ही बढ़िया था, जितना अच्छा हो सकता था उतना अच्छा। थिएटर तक का सफर सुखद रहा। थिएटर में हमारी हल्की-फुल्की हंसी ठहाकों में बदल गई। घर लौटते समय मुझे पूरा यकीन हो गया कि विशाल कोई आम लड़का नहीं है। वो अलग है... बात करते समय वो बिल्कुल बेफिक्र लगता है। ज़रा भी संकोच नहीं।

अगले छह हफ्तों तक, मैं हर सप्ताहांत विशाल के साथ थिएटर शो देखने, कॉफी पर बातचीत करने और सैर करने में व्यस्त रहा। रविवार के प्रति मेरे सामान्य डर में एक उम्मीद की किरण नज़र आने लगी। विशाल के साथ अनौपचारिक और बिना किसी बंधन के होने वाली मुलाकातों में मुझे विशेष रूप से सुकून मिलता था। उसे प्रभावित करने या सही और विनम्र होने का कोई दबाव नहीं था।

एक शाम हम लोधी गार्डन में यूं ही टहल रहे थे, तभी उसने पूछा, 'हे लीना, क्या तुम आने वाले रविवार को मिलने के लिए फ्री हो?'

‘हां, क्यों?’

‘पता नहीं आपको इसमें दिलचस्पी होगी या नहीं... इंडिया हैबिटेट सेंटर में हमारे उत्तर-पूर्वी राज्यों की कला और संस्कृति को प्रदर्शित करने वाला एक सांस्कृतिक उत्सव हो रहा है। मैं इसे देखना चाहूंगी।’

‘ओह, बहुत बढ़िया... मुझे भी शामिल कर लो! और उसके बाद, बंगाल स्वीट कॉर्नर पर सेवपुरी?’

'बिल्कुल सही। मैं इसके लिए तैयार हूं।'

हम उन चुलबुले किशोरों की तरह व्यवहार कर रहे थे जो अपने दोस्तों के साथ शाम बिताने की योजना बना रहे होते हैं।

*****

सात बहनों की कला और संस्कृति का प्रदर्शन बेहद मनमोहक था। क्या विशाल के साथ यहाँ होने से यह सब और भी आकर्षक लग रहा है? मैंने अपने इस सवाल को अनसुना करना ही बेहतर समझा।

हमने बंगाल स्वीट कॉर्नर पर झपट्टा मारा और सेवपुरी समेत 3-4 तरह की चाट ऑर्डर की।

और फिर, जब हम दही-भल्ले के बड़े-बड़े निवाले गटक रहे थे, तभी विशाल ने ये खबर सुनाई। या यूँ कहूँ कि मेरा दिल धड़क उठा और ज़ोर से टूट गया!

'लीना, मुझे तुम्हें कुछ बताना है। योजनाओं में बदलाव हुआ है।'

‘क्या योजनाएँ हैं?’

‘अब मैं थाईलैंड नहीं जाऊंगा।’

'ठीक है?'

उन्होंने खाना बंद कर दिया और अपनी बात पर ध्यान केंद्रित किया। मैं अपने भोजन का आनंद लेता रहा।

मैं पिछले कुछ महीनों से दुनिया भर के विश्वविद्यालयों को पत्र लिख रहा हूँ और अपने आवेदन भेज रहा हूँ। मुझे बर्लिन के बॉन्ड विश्वविद्यालय से एक कॉल आया। मुझे बीजान्टिन काल के दौरान यूरोप में संस्कृति और कला को समझने के विषय पर दो वर्षीय पाठ्यक्रम के लिए आंशिक छात्रवृत्ति मिली है। यह अगस्त में शुरू होगा - यानी अब से तीन महीने बाद। शेष शुल्क मैं अपनी बचत और अपने पिता की थोड़ी मदद से पूरा करूँगा।

इस बार सेवपुरी मेरी उंगलियों में बिखर गई... मुझे समझ नहीं आ रहा था कि मुझे खुश दिखना चाहिए या उदास। 'लेकिन तुमने कभी ज़िक्र नहीं किया कि तुम विश्वविद्यालयों में दाखिला लेने के लिए आवेदन कर रही हो। हालांकि मुझे याद है कि तुमने मुझे आगे पढ़ने की अपनी इच्छा के बारे में बताया था।'

हां, मैंने आवेदन प्रक्रिया के बारे में चर्चा करने से परहेज किया क्योंकि कुछ भी निश्चित नहीं था। अब तक सभी विश्वविद्यालयों ने मेरा आवेदन अस्वीकार कर दिया था, शायद इसलिए क्योंकि मैंने सहायता और छात्रवृत्ति मांगी थी। यह मेरे लिए एक आश्चर्य की बात है। लीना, मैं सचमुच बहुत खुश हूं। मैं यूरोप को अकादमिक तरीके से जानने के लिए बहुत उत्सुक हूं।

मैंने उदास न दिखने की कोशिश की। ‘तुम कितने दिन दूर रहोगे? मुझे तुम्हारी बहुत याद आएगी, मेरे दोस्त।’ फिर भी, बोलते समय मेरी आवाज़ कांप रही थी।

खैर, यह कोर्स डेढ़ साल का है, और उसके बाद मुझे अपने शोध प्रबंध पर काम करना होगा। हो सकता है मैं कुछ और समय रुककर कोर्स से संबंधित कुछ असाइनमेंट या

काम हासिल करने की कोशिश करूं या फिर पीएचडी में दाखिला ले लूं। अभी मैं कुछ भी निश्चित रूप से नहीं कह सकती। और वैसे भी, मेरा कहीं कोई बंधन नहीं है। मैं एक आज़ाद पंछी हूं। देखते हैं यह कोर्स और यह जीवन मुझे आगे कहां ले जाता है।
मेरे मन में कोई बंधन नहीं है—उसके शब्द मेरे कानों में गूंजते रहे। मुझे बुरा क्यों लग रहा है? शायद इसलिए कि एक पल पहले मेरे पास एक ऐसा दोस्त था जिसके साथ कोई दिखावा नहीं था और अगले ही पल वह चला गया। हम दोनों ही किसी बंधन से मुक्त थे, मैंने खुद को समझाया।
विशाल, बधाई हो! यह बहुत अच्छी खबर है। विश्वविद्यालय में रहते हुए पूर्वी और पश्चिमी यूरोप दोनों को जितना हो सके उतना घूमने का प्रयास करना मत भूलना। तुम्हारे पास ज्यादा समय नहीं बचा है... तुम्हें पैकिंग करनी होगी और कोर्स के लिए थोड़ा पढ़ना भी पड़ेगा। वैसे, क्या तुम एक किताब देखना चाहोगे जो मुझे याद है मैंने एक बार पढ़ी थी और वह हमारी लाइब्रेरी में है - मैसिडोनियन पुनर्जागरण पर, 10वीं और 11वीं शताब्दी के दौरान जब बीजान्टिन साम्राज्य का काफी विस्तार हुआ था?
'जी हां! बहुत कुछ करना बाकी है। और, यह किताब बहुत मददगार साबित होगी। मैं जाने से पहले इसे आपको जरूर लौटा दूंगा।'
उस शाम, हमने थोड़ी उदासी के साथ विदाई ली, मानो हम दोनों जानते थे कि अब बहुत समय लगेगा जब हम फिर मिलेंगे... या शायद कभी नहीं मिलेंगे? क्या यह महज़ संयोग था कि हम दोनों मेट्रो से घर वापस विपरीत दिशाओं में गए, मैंने उदास मन से सोचा।

शुरुआत

विशाल जर्मनी के लिए रवाना हो गया और कुछ ही दिनों में मेरी ज़िंदगी फिर से पटरी पर आ गई। मैंने उसकी प्यारी-प्यारी यादों को, अपनी शुभकामनाओं के साथ समेटा और उसके जाने पर उसे सौंप दिया।
माँ शादी-का-लड्डू डॉट कॉम पर प्रोफाइल देखने में मग्न रहती थीं और बड़ी नियमितता से मुझे कुछ प्रोफाइल भेजती रहती थीं। माँ का धैर्य वाकई अद्भुत था, मैं अक्सर मन ही मन यह स्वीकार करता था। उन्होंने कभी हार नहीं मानी और कभी-कभी उनका आशावाद मुझमें भी आ जाता था। वैसे, मेरे भी भावनात्मक उतार-चढ़ाव माँ की तरह ही नियमित होते थे।
एक ठंडी और सुहावनी शाम को शौर्य और मैं स्क्रैबल खेल रहे थे, तभी मोबाइल पर

एक ईमेल की सूचना आई। कड़ी प्रतिस्पर्धा शुरू हो गई और हम दोनों एक-दूसरे को हराने के लिए बेताब थे। मैंने सोचा कि मेल बाद में देख लूँगा। जब मेरे बुद्धिमान छोटे भाई ने मुझे शब्दों के खेल में हरा दिया, तो मैंने कुछ संदेश और मेल देखने के लिए मोबाइल उठाया।

यह उसी ईमेल आईडी से आया था, और उस व्यक्ति से जिसने अपना नाम नहीं बताया था। अरे नहीं! मैं तो इस आदमी के बारे में बिल्कुल भूल ही गया था! खैर, उसका मेल ठीक-ठाक था, लेकिन मुझे यह तय करना था कि जवाब देना है या नहीं, मुझे याद आया।

मेल में लिखा था:

> एक बार फिर नमस्कार,
>
> कैसी हो लीना? मुझे तुमसे जवाब की उम्मीद तो नहीं थी, लेकिन पूरी तरह से उम्मीद भी नहीं छोड़ी थी। मैं हर दिन अपना मेल चेक करती थी, बेसब्री से दुआ करती थी...
>
> मैं समझती हूँ कि किसी अजनबी को जवाब देना आसान नहीं होता, और खासकर तब जब मामला निजी हो। फिर भी, मैं आपसे निवेदन करती हूँ कि कम से कम एक बार मुझे जरूर लिखें। मुझे आपके मन की स्थिति के बारे में थोड़ा जानना है। क्या आप वाकई दोबारा शादी करने के बारे में गंभीर हैं? क्या आप बिना किसी बोझ, बिना किसी डर या असुरक्षा के ऐसा करेंगे?
>
> मैं भी शादी के बारे में सोच रहा हूँ और आपके बारे में जितना जानता हूँ, उसके आधार पर आप मुझे पसंद हैं। फ़ोन उठाकर सीधे इस विषय पर बात करने में मुझे थोड़ी झिझक हो रही है, क्योंकि मैं पहले यह जानना चाहता हूँ कि शादी के पूरे पैकेज के बारे में आपके क्या विचार हैं।
>
> क्या आप इस मेल पर भरोसा करेंगे? क्या आप जोखिम उठाकर उस संदेश का जवाब देंगे जो नियति ने आपके इनबॉक्स में भेजा है?
>
> अगर आप ऐसा करेंगे तो मुझे बहुत खुशी होगी।
>
> अनाम व्यक्ति।

ये आदमी कौन है? ये कौन हो सकता है? ये अपनी पहचान बताने से इतना क्यों डर

रहा है? हम्म, अब मुझे तय करना होगा कि मेल को अनदेखा करूँ या उसे जवाब दूँ। मैं सोच में पड़ गई।

*****

अगले दो दिनों तक मैं असमंजस में रही और फिर आखिरकार चिराग से इस बारे में पूछने का फैसला किया। अगले दिन चिराग का फोन आया और मैंने उसे अन्य बातों के साथ-साथ विशाल के जर्मनी जाने और इस ईमेल के बारे में भी बताया। वह कुछ देर चुप रहा और फिर अपने विशिष्ट विनम्र अंदाज में बोला, 'मुझसे मत पूछो, लीना; अपने दिल की सुनो और वही करो जो वह कहता है।'

मैंने मेल का जवाब देने का फैसला किया, लेकिन सावधानी से। कौन जाने दूसरी तरफ कौन है? अगर मैंने माँ से पूछा, तो वो हंगामा खड़ा कर देंगी और मुझे कभी जवाब नहीं देने देंगी।

मैंने लिखा:

> हाय अनाम व्यक्ति,
>
> हालांकि आपके पत्र का जवाब देने में मुझे कई सप्ताह लग गए, लेकिन देरी का कारण पूरी तरह से मेरी दुविधा नहीं थी। बेशक, मैं थोड़ी मुश्किल में था, लेकिन पिछले एक महीने में मैं कई चीजों में व्यस्त भी रहा था। अब, जब मैंने आपको जवाब देने का फैसला किया है, तो मैं तर्कशील दिमाग के बजाय अपने दिल की आवाज सुन रहा हूं। मुझे नहीं पता कि आप कौन हैं और आप मेरे बारे में कितना जानते हैं। मेरी एक बार शादी हुई थी और अब मैं अकेली हूँ। मुझे वो दौर भी उतना ही पसंद था जितना कि ये दौर। तब मुझे कभी ऐसा महसूस नहीं हुआ कि मैंने अपनी आज़ादी या अपनापन खो दिया है और न ही अब मुझे ऐसा लगता है कि मैं अकेली हूँ और मुझे किसी साथी की सख्त ज़रूरत है। मैं अपने जीवन में जो भी आता है उसे स्वीकार कर लेती हूँ। अगर मुझे कोई ऐसा उपयुक्त व्यक्ति मिल जाए जिसके साथ जीवन अधिक आनंदमय और संतुष्टिदायक हो सके, तो ठीक है और अगर मुझे कोई ऐसा व्यक्ति न मिले, तो भी बिलकुल ठीक है।
>
> अगर मैं कहूँ कि मेरे मन में कोई दुखद यादें नहीं हैं, तो मैं झूठ बोल रही हूँ; लेकिन वे बस हैं; वे मुझे परेशान नहीं करतीं और निश्चित रूप से

आने वाले दिनों को खराब नहीं करेंगी। मैं किस तरह के व्यक्ति के साथ सहज महसूस करूँगी, इस बारे में मुझे खेद है, लेकिन मैं उस व्यक्ति के साथ सब कुछ साझा नहीं करूँगी जिसकी पहचान मैं नहीं जानती।

आप जो भी हों, मुझे उम्मीद है कि जल्द ही आपसे मिलने का मौका मिलेगा। इस बीच, मेरी शुभकामनाएं आपके साथ हैं।

लीना।

मैंने जो लिखा था उससे मैं संतुष्ट था, क्योंकि यह न तो कठोर था और न ही बहुत अधिक खुलासा करने वाला जवाब था।

*****

अगले दिन, हमारे प्रधानाचार्य ने मुझे और तीन अन्य शिक्षकों को अपने कमरे में बुलाया और हमें इस वर्ष आयोजित होने वाले 'स्टार्ट-अप 2.0 सम्मेलन' के लिए प्रबंधन द्वारा अनुमोदित प्रस्ताव से अवगत कराया। मैं स्तब्ध रह गया... पिछले वर्ष के सम्मेलन को एक वर्ष बीत चुका है? रॉबर्ट ऑर्बेन का प्रेरणादायक कथन मेरे सामने कौंध गया: 'समय उड़ता है। इसे चलाने की बागडोर आपके हाथ में है।' बैठक में उपस्थित सभी लोगों के बीच चर्चा और मतभेद हुए और फिर एक सौम्य मुस्कान के साथ, प्रधानाचार्य ने घोषणा की कि इस वर्ष भी मुझे संयोजक बनाया जाएगा। मैं खुश था, लेकिन इस पद के साथ आने वाली भारी जिम्मेदारियों को सोचकर मेरे गले से एक आह निकल गई।

मैं घर आया और मेरा उदास चेहरा देखकर माँ ने पूछा कि क्या बात है। मैंने उन्हें सम्मेलन के बारे में बताया और वह बहुत खुश हुईं।

‘अरे वाह, बिन्नी, क्या बात है? तुम्हें इतनी बड़ी ज़िम्मेदारी सौंपी गई है और वो भी इसलिए क्योंकि तुमने पिछली बार बहुत अच्छा काम किया था। मैं बहुत खुश हूँ, बेटा! तुम्हें इतना सारा काम करना पड़ेगा—क्यों न तुम अपने कुछ काम मुझे भी सौंप दो?’ उन्होंने आत्मविश्वास से कहा। मैंने उनकी तरफ ऐसे देखा जैसे कह रही हो, माँ, आप तो कमाल की हैं!

‘क्यों? क्या बात है? आपको लगता है कि मैं वो सब नहीं कर सकती जो आप कर सकती हैं? बिलकुल नहीं! मैं आपकी तरफ से कॉल कर सकती हूँ, मेहमानों की सूची बना सकती हूँ, आपकी फाइलें और प्रिंटआउट तैयार करवा सकती हूँ। और हाँ, मैं

आपके लिए जलपान और भोजन का मेनू भी तैयार कर सकती हूँ। बस सब कुछ मुझ पर छोड़ दीजिए।' माँ बहुत उत्साहित थीं।

'माँ, कृपया... धीरे चलें! मैं संभाल लूँगी... आप चिंता न करें और अगर मुझे आपकी मदद की ज़रूरत पड़ी, तो मैं आपसे ज़रूर माँगूँगी,' और मैं कुर्सी पर बैठ गई, चारों ओर थकान का एहसास मुझे घेरे हुए था।

मेरी आंखें बंद थीं जब मैंने माँ की आवाज़ सुनी, 'बिन्नी, उठो बेटा... लो, ये एक कप हॉट चॉकलेट पियो, साथ में बेक्ड और नमक रहित चिप्स भी। तुम्हें अच्छा लगेगा।'

मैं उनकी देखभाल और चिंता से अभिभूत हो गई। मैंने उन्हें प्यार से देखा, उठी और उन्हें कसकर गले लगाया, और धीरे से कहा, 'माँ, मैं आपसे बहुत प्यार करती हूँ... आप दुनिया की सबसे अच्छी माँ हैं।'

पापा भी हमारे साथ शामिल हो गए और हम तीनों बड़े आराम से हॉट चॉकलेट पी रहे थे, तभी मम्मी ने कहा, 'बेटा, क्या चिराग इस साल भी कॉन्फ्रेंस में आएगा? पिछले साल भी वह इसी तरह की कॉन्फ्रेंस के लिए आया था और तुमसे मिला था, है ना? अच्छा, इस बार उसे याद दिला देना कि उसे दोपहर या रात के खाने के लिए घर आना है, और अगर वह अपने परिवार को साथ ला रहा है, तो उन्हें भी न्योता है।'

मैं सीधा बैठ गया, और मानो किसी ने जादू की छड़ी घुमा दी हो, सारा बोझ गायब हो गया। अरे वाह! मैंने इसके बारे में पहले क्यों नहीं सोचा? बिल्कुल, चिराग यहाँ होगा, और हम एक साल बाद मिलेंगे! अब तो बहुत मज़ा आने वाला है। पल भर में मैं पूरी तरह से जोश से भर गया और नई उमंग के साथ तैयारियों, बारीकियों और जिम्मेदारियों का सामना करने के लिए उत्सुक हो गया।

*****

अगले एक सप्ताह के भीतर, कार्य समिति ने सम्मेलन के प्रारूप को अंतिम रूप दिया और हम बारीकियों पर ध्यान देने लगे। काम पूरे जोश के साथ चल रहा था और उत्साह संक्रामक था। यह पूरे परिसर में फैल गया था। शिक्षण और गैर-शिक्षण सहायक कर्मचारी, छात्रों के साथ, सभी इस कार्यक्रम को भव्य सफलता दिलाने के लिए पूरी तरह से तैयार थे! मुख्य वक्ताओं, चर्चाकर्ताओं और सत्रों की अध्यक्षता करने वालों की सूची को अंतिम रूप देने के बाद, मैं नामों और उनके टेलीफोन नंबरों की सूची लेकर बैठा और निश्चित रूप से, सबसे पहले चिराग को फोन किया।

'हे चिराग, कैसे हो?'

‘अहा, लीना! आखिरकार तुम्हारी आवाज़ सुनने को मिली। कहाँ थीं तुम? दो सप्ताह से ज़्यादा समय से फ़ोन नहीं आया? ये तो बर्दाश्त नहीं! मुझे आपत्ति है...’ चिराग ने अपने हमेशा के हंसमुख लहजे में जवाब दिया।

‘ठीक है, मैं अपने कान खींच रही हूँ...,’ मैंने हंसते हुए कहा। ‘माफ़ करना, मैं तुम्हें तीन हफ़्तों से फ़ोन नहीं कर पाई। यहाँ बहुत भागदौड़ थी। क्या तुम काम पर जाने की तैयारी कर रही हो? मुझे बस एक मिनट चाहिए। हम इस साल फिर से अपने कॉलेज में स्टार्ट-अप कॉन्फ्रेंस का आयोजन कर रहे हैं। तुम्हें सादर आमंत्रित किया जाता है और संयोजक होने के नाते, मैं आग्रह करती हूँ कि तुम अवश्य आओ।’

‘ज़रा रुकिए, रुकिए... क्या मुझे काम पर जाने की जल्दी है या आपको कहीं जाने की जल्दी है? सबसे पहले, बधाई हो! वाह! यह बहुत अच्छी बात है कि आप इस साल फिर से सम्मेलन आयोजित कर रहे हैं। मुझे यकीन है कि यह पिछली बार की तरह या उससे भी ज़्यादा शानदार होगा।’

मैंने उनकी बात पूरी होने से पहले ही उन्हें टोक दिया। ‘चिराग, आप काम से 3-4 दिन की छुट्टी क्यों नहीं ले लेते ताकि सम्मेलन के बाद आपको यहां कुछ अतिरिक्त दिन मिल सकें? प्लीज़... प्लीज़... प्लीज़...’

“ओह, कृपया मुझे अपनी बात पूरी करने दीजिए। लीना, मैं इस साल नहीं आ पाऊँगी। कृपया मुझे इस बार माफ़ कर दीजिए। मेरी कुछ प्रतिबद्धताएँ हैं जिनके बारे में मैं अभी आपको बता नहीं सकती। लेकिन, यह जान लीजिए कि यह बहुत ज़रूरी काम होगा, वरना मैं ज़रूर आती।”

कुछ देर तक सन्नाटा छाया रहा... इस खबर से मैं बहुत निराश हुआ।

चिराग ने आगे कहा, 'अरे, क्या तुम वहाँ हो? या फिर तुम सो गए हो?'

मैंने निराश स्वर में उत्तर दिया, 'क्या आपका काम वाकई इतना महत्वपूर्ण है? अगर आप तब तक अपनी सभी प्रतिबद्धताओं को पूरा कर लें तो क्या होगा? सम्मेलन में तो दो महीने बाकी हैं।'

मुझे पता है, और यकीन मानिए, मुझे इसमें शामिल होने में बहुत खुशी होती। और हां, आपसे मिलना भी बहुत अच्छा लगता। कृपया इतने निराश मत होइए। आपको ढेर सारी शुभकामनाएं, और मुझे पता है आप जरूर सफल होंगे!

मैं अपने कामों में वापस लौट गया और उनमें पूरी तरह से मग्न हो गया, और चिराग की अनुपस्थिति के बारे में ज्यादा न सोचने का फैसला किया। उनकी कमी न केवल

मुझे खलेगी, क्योंकि वे मेरे हर काम और सोच में मेरे मार्गदर्शक बन गए थे, बल्कि उनकी अकादमिक और तकनीकी दक्षता सम्मेलन की गुणवत्ता को और बढ़ा सकती थी। मुझे पता था कि छात्रों और अन्य उपस्थित लोगों को भी उनकी कमी खलेगी।

*****

वीकेंड में मेरा मन हुआ कि उसे फिर से फोन करके आने के लिए मना लूँ। फिर मैंने सोचा: शायद उसकी निजी जिंदगी में कुछ गड़बड़ है। हो सकता है उसकी पत्नी उसे आने न दे या वे कहीं परिवार के साथ घूमने जा रहे हों? मैंने उसे फोन तो नहीं किया, लेकिन वह मुझे हर दूसरे दिन मैसेज करता रहा, तैयारियों के बारे में पूछता रहा और मेरा हौसला बढ़ाता रहा। मैं भी उलझन में थी। आखिर मुझे इस बात से इतनी परेशानी क्यों हो रही है कि वह आ रहा है या नहीं? वह तो बस मेरा दोस्त है और उससे कुछ दिन बात करना अच्छा होता। चलो, इस बात को इतना बड़ा मुद्दा न बनाऊं।

इन सभी दिनों में माँ मेरे लिए एक अटूट सहारा बनी रहीं—मेरे ईमेल और फाइलिंग के काम, प्रिंटआउट निकालने और यहाँ तक कि मेरे खान-पान और नींद का भी ख्याल रखती थीं। उन्होंने सम्मेलन शुरू होने से पहले वाले रविवार को मुझे 4-5 घंटे की छुट्टी लेने के लिए ज़ोर दिया और मुझे एक स्पा-सैलून में ले गईं और उन्हें निर्देश दिया कि वे मुझे सिर से पैर तक पूरी तरह से तरोताज़ा कर दें।

*****

इस वर्ष सम्मेलन चार दिनों तक चला। इसकी शुरुआत अच्छी रही और व्यवस्थाएँ सभी की अपेक्षाओं पर खरी उतरीं। इस वर्ष अकादमिक और कॉर्पोरेट जगत से कई नए चेहरे देखने को मिले। मेरे दिन-रात हर तरह की बारीकियों और यहाँ तक कि अपरिहार्य कमियों को दूर करने में ही बीत गए। मेरी सहायता कर रही छात्रों की टीम भी मेरी ही तरह चिंतित थी और उनमें से हर कोई हर छोटी-बड़ी समस्या को सुलझाने के लिए लगातार प्रयासरत था।

तीसरे दिन दोपहर के भोजन के बाद के सत्र के दौरान, जब मैं बाहर नेटवर्किंग लाउंज में चाय की चुस्की ले रहा था, तभी किसी ने मेरे कंधे पर थपथपाया। मैं मुड़ा और ऊपर देखा। मैं दंग रह गया।

चिराग वहाँ खड़ा था, उसकी आँखों में शरारत भरी चमक के साथ वह सौहार्दपूर्ण ढंग से मुस्कुरा रहा था।

मैं भूल ही गई थी कि मैं कॉलेज में चारों ओर छात्रों के बीच बैठी हूँ। मैं उछल पड़ी और

खुशी से चीखते हुए उसे गले लगा लिया।
‘अरे! मुझे विश्वास नहीं हो रहा... क्या तुम सच में यहाँ हो? तुमने मुझे कितना सुखद आश्चर्य दिया है। कैसे? अचानक? कैसे? कब?’
उन्होंने मेरे सिर पर थपथपाया और मुझे बैठने का इशारा किया। हालाँकि, मैं अपनी खुशी को काबू में नहीं रख पा रहा था। वे भी खुश थे, लेकिन शांत और संयमित थे।
‘तो, संयोजक महोदया, आप कैसी हैं? और सम्मेलन कैसा चल रहा है?’
‘लेकिन आप... आपने कहा था कि आप इस साल नहीं आ सकते,’ मैं अब भी खुद नहीं थी।
‘क्या मैं यहाँ बैठ सकता हूँ?’ उसने विनम्रतापूर्वक पूछा।
मुझे शर्म आ रही थी कि मैंने इतने समय तक यह शिष्टाचार नहीं दिखाया। 'ओह, मुझे खेद है। कृपया बैठ जाइए। क्या आप चाय या कुछ ठंडा लेंगे?'
'चाय ठीक रहेगी।' वह खुलकर मुस्कुरा रहा था, और मैं समझ गया कि उसके आने पर मेरी अचंभित प्रतिक्रिया देखकर उसे मजा आ रहा था।
मैंने एक छात्र को चाय और कुछ बिस्कुट व सैंडविच लाने का इशारा किया। ‘जी हाँ, अब आपको बताना ही होगा। आप यहाँ क्यों आए हैं? क्या मैं आपके लिए कल एक प्रस्तुति का आयोजन करूँ? अरे, छात्रों को तो यह बहुत पसंद आएगा!’
एक साल बाद आपसे दोबारा मिलकर बहुत खुशी हुई। मुझे यकीन था कि मैं नहीं आ पाऊँगी, लेकिन हालात ऐसे बदल गए कि मुझे आना ही पड़ा। लेकिन कृपया कोई विशेष व्याख्यान आयोजित न करें। मैं इसके लिए तैयार नहीं हूँ और न ही अपने कार्यक्रम में कोई बाधा डालना चाहूँगी। मैं यहाँ एक सप्ताह के लिए हूँ। आप अपना काम पूरा कर लें और जब भी आपको थोड़ा समय और फुर्सत मिले, हम मिल सकते हैं।
ओह, ये तो दुख की बात है। उम्म... मतलब, ये तो बहुत अच्छी बात है कि आप यहाँ एक हफ्ते के लिए रहेंगे, लेकिन ये दुख की बात है कि आप इस साल छात्रों को संबोधित नहीं करेंगे। ठीक है, कोई बात नहीं... मैं कल शाम तक फ्री हो जाऊँगा और परसों प्रिंसिपल द्वारा छुट्टी घोषित कर दी जाएगी। तो फिर परसों मिलते हैं... आप दोपहर के खाने के लिए घर क्यों नहीं आ जाते? माँ आपसे मिलने के लिए बहुत उत्सुक हैं... उन्होंने मुझे निर्देश दिया था कि अगर आप सम्मेलन में आते हैं तो मैं आपको घर ले आऊँ।

‘लीना, क्या हम बाद में तुम्हारे घर पर मिल सकते हैं? पहले मैं तुमसे थोड़ी देर बात करना चाहूंगा... अगर तुम्हें कोई आपत्ति न हो तो? चलो शुक्रवार को पंजाब ग्रिल में लंच करते हैं?’

‘ठीक है, हो गया।’ अब मैं बहुत खुश था।

जाने से पहले, लीना, मैं तुम्हें एक बार फिर बधाई देता हूँ। मुझे तुम पर बहुत गर्व है। यह सम्मेलन धूम मचा रहा है और इसका श्रेय तुम्हें जाता है। अगर मैं स्वयं यहाँ आकर यह सब न देखता, तो तुम मुझे यह न बताती कि यह कितना सफल रहा और इसकी सफलता में तुमने कितनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। आगे बढ़ते रहो... फिर मिलते हैं।

उसके तुरंत बाद वह चला गया, और मैं वहीं अचंभित होकर बैठा रहा—बस यूं ही देखता रहा। मानो उसकी प्रशंसा ने सब कुछ सार्थक कर दिया हो, मानो वही मेरे लिए सबसे ज़्यादा मायने रखता हो।

सम्मेलन जोरदार तालियों के साथ समाप्त हुआ और मुझे सफलता और उपलब्धि का हल्का रोमांच महसूस हुआ। बेशक, मुझे भीतर से पता था कि यह एक टीम का प्रयास था और किसी और के नेतृत्व में भी यह उतना ही सफल हो सकता था। इसी अहसास ने मुझे ज़मीन से जोड़े रखा।

*****

मैं उस रात देर से घर पहुँचा और शुक्र है कि मुझे माँ को बताना याद रहा कि मैं अगले दिन चिराग के साथ दोपहर का भोजन करने जा रहा हूँ। माँ ने फिर से कहा कि मुझे हमारे घर पर अगले भोजन की योजना पक्की कर लेनी चाहिए। मैंने जल्दी से सिर हिलाया और अच्छी नींद लेने के लिए अपने कमरे में चला गया।

जब मैं पहुँचा तो चिराग पहले से ही रेस्टोरेंट में बैठा था। हम एक-दूसरे को देखकर बहुत खुश हुए और थोड़ी औपचारिक बातचीत के बाद, हमारी बातचीत में जोश भर गया। पूछने, जानने, साझा करने और सुनने के लिए बहुत कुछ था। हम (हालांकि, ज़्यादातर मैं ही) बहुत ज़्यादा खुशी और उत्साह से चिल्ला रहे थे; हमारी चीखें और उत्साह इतना बढ़ गया था कि हमारे आस-पास के लोग बार-बार हमें घूरने लगे। हमें इसकी परवाह नहीं थी और हम बातचीत करते रहे...

तीन कोर्स के पूरे भोजन का ऑर्डर देने के बाद, चिराग मुड़ा और मेरी आँखों में देखने लगा। यह अजीब सा लगा और इससे पहले कि मैं कुछ बोल पाती, उसने कहा,

'लीना, मैं चाहता हूँ कि तुम अगले दस मिनट तक पूरी तरह चुपचाप मेरी बात सुनो। मैं आज अपने निजी जीवन के बारे में कुछ बातें तुमसे साझा करना चाहता हूँ।'

मैं पूरी तरह से ध्यान से सुन रहा था... मैंने अब तक उनके निजी जीवन के बारे में बहुत सारी धारणाएँ बना रखी थीं।

लीना, मैंने पांच साल पहले अपनी पसंद की लड़की से शादी की थी। वह बहुत अच्छी इंसान थी और आज भी है, लेकिन समय के साथ-साथ हमारे अलग-अलग दृष्टिकोणों के कारण हम एक-दूसरे से दूर होते चले गए। उदाहरण के लिए, मैं दार्शनिक और आध्यात्मिक विचारों की ओर अधिक आकर्षित होने लगा, जबकि वह चकाचौंध और ग्लैमर की ओर खिंची चली गई। हम दोनों ने महसूस किया कि हम न केवल विपरीत दिशाओं में बढ़ रहे थे, बल्कि एक-दूसरे को अपने-अपने रास्ते पर खींच रहे थे। एक साल पहले हमने अलग होने का फैसला किया और हमने बहुत सौहार्दपूर्ण ढंग से औपचारिकताओं को पूरा किया।

मेरी सांसें तेज चल रही थीं, और मेरा दिल न केवल सामान्य रूप से धड़क रहा था, बल्कि बहुत तेजी से धड़क रहा था।

क्या उनके बच्चे हैं? कितने? क्या वह दोबारा शादी करने जा रहा है? मेरे मन में उससे कई सवाल थे, लेकिन उसने मुझे चुप रहने को कहा था जब तक कि वह अपनी बात पूरी न कर ले।

‘इस एक साल में मैंने बहुत आत्मनिरीक्षण किया है और यह समझने की कोशिश की है कि मैं क्या करना चाहता हूँ और मुझे किस तरह के फैसले लेने चाहिए। लीना, मैंने भारत वापस लौटने का फैसला कर लिया है। मेरे माता-पिता को मेरी ज़रूरत है और मुझे लगता है कि घर लौटने का यही सबसे सही समय है। हमारी अर्थव्यवस्था के भविष्य के आसार काफी आशाजनक दिख रहे हैं।’

‘वाह, शानदार!’ मैंने खुशी से चिल्लाते हुए कहा और कई लोगों ने मेरी तरफ गर्दन घुमा ली। मैं इतनी खुश थी कि मेरी आँखों में आँसू आ गए। मुझे ऐसा लगा जैसे अब से मेरा अपना मजबूत सहारा हमेशा मेरे पास रहेगा... मैं बेहद खुश थी।

‘लीना, मेरी बात ध्यान से सुनो... मुझे हमारे साथ बिताए वो पल और हमारी हर बातचीत—चाहे फोन पर हो या ईमेल पर—बहुत प्यारी लगी। मैं तुम्हारी तरफ बहुत आकर्षित हुआ हूँ, और हालांकि मुझे पता है कि तुम अपने लिए एक आदर्श दूल्हा ढूंढ रही हो, क्या मेरे लिए कोई मौका है? लीना, क्या तुम मेरे बारे में भी सोचोगी? क्या

तुम्हें लगता है कि हम एक-दूसरे से शादी कर सकते हैं और सुखी वैवाहिक जीवन जी सकते हैं?'

मैं स्तब्ध रह गया; बेहोश हो गया।

मुझे हल्की-हल्की चिराग की आवाज़ सुनाई दे रही थी, पर मैं गहरी तन्मयता में थी। कुछ देर बाद मुझे अपने दिल में हलचल महसूस हुई और मेरे होंठों से एक आवाज़ निकली, 'यसssss!'

मैं शर्म से लाल हो गई और उसे गले लगाने के लिए उठ खड़ी हुई... कुछ पलों के लिए, मैंने उसे कसकर गले लगाया, जबकि मेरी आंखों से आंसू बह रहे थे।

'अब, अब...अगर तुम बच्चे की तरह रोती रहोगी और मुझे पकड़े रहोगी, तो यह "अनाम व्यक्ति" घुटनों के बल बैठकर तीन जादुई शब्द कहते हुए तुम्हारी उंगली में अंगूठी कैसे पहनाएगा?'

अनाम व्यक्ति? मैं उसे हैरानी और अचंभे से देखता रहा।

अगले ही पल हम दोनों जोर से हंस पड़े और इस बार हमारी हंसी पहले से भी ज्यादा तेज थी...

अंतिम शब्द

लीना, इससे पहले कि हम नई शुरुआत करें, मैं तुम्हें एक और बात बताना चाहती हूँ। कुछ महीने पहले, मैं एक सरकारी स्कूल में बास्केटबॉल कोर्ट के जीर्णोद्धार के प्रोजेक्ट पर स्वयंसेवा कर रही थी। यह एक प्रिय मित्र के कहने पर किया गया था और समुदाय के लिए कुछ अच्छा करने के इस अवसर को मैं ठुकरा नहीं सकी। स्कूल में स्वयंसेवा के दौरान, हम दस लोगों की हमारी टीम—सभी स्वयंसेवक, काम से समय निकालकर इस प्रोजेक्ट को कुछ घंटे दे रहे थे—एक टीम के रूप में बहुत अच्छी तरह से जुड़ गए। एक खास स्वयंसेवक थीं... उनका नाम तारा जैन था।

मैं चौंककर ऊपर देखने लगी। 'आपने क्या कहा? तारा जैन?'

'जी हां, तारा जैन। तुम्हारा चेहरा ऐसा क्यों दिख रहा है? क्या तुम उसे जानती हो?'

मैंने शर्मिंदा होकर झूठ बोला: 'नहीं, मैं उसे नहीं जानती। बस नाम जाना-पहचाना सा लगा। कोई बात नहीं। तो, उसके साथ क्या हुआ?'

नहीं, न तो उसे और न ही मुझे कुछ हुआ, लेकिन हाँ, एक तरह की चिंगारी ज़रूर थी। यह कुछ सुखद अंत में बदल सकता था, लेकिन...

'लेकिन...?'

चिराग ने मुझे टकटकी लगाकर देखा और फिर हल्की सी हंसी हंस दी। 'हे भगवान, तुम्हें इसके बारे में पता था, है ना? लेकिन कैसे? कहाँ? ठीक है, प्लीज़... तुम्हें ईर्ष्या करने की ज़रूरत नहीं है। कुछ नहीं था। बस कुछ पल का आकर्षण था, जिसे हम दोनों ने जल्दी ही समझ लिया कि यह एक-दूसरे के प्रति औपचारिक और पेशेवर सम्मान के अलावा कुछ नहीं था।'

मैंने सिर हिलाया। मैं अपने चेहरे पर उमड़ रही उस राहत को छुपाना कितना चाह रही थी! क्या मुझे दोषी महसूस करना चाहिए या ऑनलाइन उसका पीछा करने की बात कबूल करनी चाहिए, वो भी दो बार...? नहीं, छोड़ो, मैंने खुद को निर्दोष साबित कर दिया।

चिराग मुझे ध्यान से देखता रहा। उसने धीरे से मुस्कुराते हुए कहा, 'क्या तुम जानती हो कि स्वयंसेवा के दौरान तारा के साथ हुई उस छोटी सी घटना ने तुम्हारे प्रति मेरे मन में दबी हुई धारणा को जगा दिया। इसने मेरे भ्रम को दूर कर दिया और मुझे पता चल गया कि मैं तुम्हारे साथ ही अपना जीवन बिताना चाहता हूँ।'

मैं वहां मुस्कुराते हुए बैठा था।

*****

मैं खुशी से झूमते हुए पूरे रास्ते घर तक गई और माँ की बाहों में कूद पड़ी और उन्हें खुशी से गले लगा लिया!

‘ओह माँ! माँ! मेरी प्यारी माँ! आज जो हुआ, उसका आप अंदाज़ा भी नहीं लगा सकतीं। आप हैरान रह जाएँगी। आपको यकीन नहीं होगा! आप बैठ जाइए।’ मैं साँस फूलने और खुशी से झूमते हुए धीरे से उन्हें सोफे पर ले गई।

माँ मुड़ी और मुझे कुर्सी की ओर खींच लिया। ‘ओह हो, बिन्नी... तुम्हें बहुत बड़ा झटका लगने वाला है। मुझे पता है मेरी प्यारी बेटी के चेहरे पर जो खुशी दिख रही है, उसका कारण क्या है। तुम्हें क्या लगता है कि चिराग को हर कदम पर किसने मार्गदर्शन दिया?’ और वह ज़ोर से हंसने लगी।

‘बज़िंगा!’ उसने अपने चेहरे पर पुरस्कार विजेता जैसी खुशी का भाव लिए हुए कहा।

मैं चकित रह गया।

अगले ही पल, माँ ने मेरे चेहरे को अपनी हथेलियों में थाम लिया और धीरे से कहा, 'खुश रहो, प्यारे...हमेशा।'

‘माँ, आपको सब पता था? कैसे? कब? कैसे, माँ?’ मैं उलझन में लड़खड़ाते और

अटकते हुए बोला।
उसने मुझे आँख मारी, अपना पेट पकड़ा और फिर बेकाबू होकर हंसने लगी। आखिर में उसने मेरा हाथ पकड़ा और गंभीर, रहस्यमयी स्वर में फुसफुसाते हुए कहा, 'क्यों और कैसे की बातें भूल जाओ... बस मुझे सारी बातें बता दो; अपनी उस रोमांटिक शाम का पूरा ब्यौरा दो। मैं पिछले पाँच दिनों से इस शाम की बातें सुनने के लिए बेसब्री से इंतज़ार कर रही हूँ।'
'लेकिन उसने आपको भरोसे में कब लिया? मेरा मतलब है, उसकी योजना के किस चरण से?'
'ओह हो... ये सब छोड़ो... बस मुझे ये बताओ कि उसने तुम्हें प्रपोज़ कैसे किया?'
मुझे पता था कि मेरे पास कोई विकल्प नहीं था।
यह सब सुनने के बाद, उसने अंततः ऊपर देखा और धीरे से प्रार्थना की।
'Jai ho! Jai ho! It is all due to the matka magic, dear! Jai ho, Jai ho!'
'माँ, तुम क्या कह रही हो?'
'क्या तुम्हें समझ नहीं आ रहा प्रिय? ये सब तो उसी की वजह से है! तुम्हें अपने दूसरे पति को धन्यवाद देना चाहिए... मतलब, मटका जी को, जिन्होंने तुम्हें इतना अच्छा जीवनसाथी दिया! चलो एक बार फिर ऋषिकेश चलते हैं और सौ मटके दान करते हैं। क्या कहते हो, बिन्नी?'
मैं सोफे पर स्तब्ध बैठा रहा।
लेखकों के बारे में
नवनीत और वरुणा अच्छे दोस्त हैं, और हालांकि वे क्रमशः कुवैत और गुरुग्राम (भारत) में रहते हैं, हास्यबोध और अभिव्यक्ति की उनकी क्षमता उन्हें आपस में जोड़ती है। नवनीत ने 250 से अधिक लेख और सात पुस्तकें लिखकर प्रकाशित की हैं, वहीं वरुणा स्वास्थ्य और फिटनेस से संबंधित विषयों पर ब्लॉग लिखती हैं और इस पहली कोशिश को आगे बढ़ाते हुए और भी बहुत कुछ लिखने की आकांक्षा रखती हैं।
वरुणा के बारे में और अधिक जानने के लिए यहां क्लिक करें:
https://www.facebook.com/varunakhullar27
https://www.instagram.com/varuna927
https://twitter.com/yogawithv

हमसे बात करें

प्रिय पाठकों,

क्या आपको अपने पड़ोस या परिवार में लीना या उसकी माँ की याद आई? हमें आपके ऐसे ही कुछ मजेदार अनुभवों के बारे में और किताब पर आपकी प्रतिक्रिया जानने में खुशी होगी।

आप हमें *authors@shaadi-ka-laddoo.com* पर पत्र लिख सकते हैं।

हमारी वेबसाइट पर जाएँ: *www.shaadi-ka-laddoo.com*

पिप पिप...।

नवनीत और वरुण

[1] बेशक, उसने उस आदमी का असली नाम बताया था।

sjeet